जीवन और मृत्यु के रचयिता

लेखक: श्री नरेन्द्र ढंड

अनुवादिका: श्रीमती कमलेश चौधरी

साभार: शुक्राना गुरुजी महाराज दा
मल्टी लिंगुअल पेज

जय गुरुजी

समर्पण

यह पुस्तक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी,
सर्वशक्तिमान गुरुजी के चरणों में सप्रेम एंव सादर समर्पित है।

इनका आशीर्वाद मेरे परिवार,
मेरे मित्रों ऐंव मुझे सदैव प्राप्त हुआ है।

इन के दिए अलौकिक प्रकाश ने जीवन के,
हर क्षण और चरण में मेरा मार्ग निर्देशन किया है।

जय गुरुजी

प्रस्तावना

"तैनू सत्संग दी की लोड़ है? तेरी अपनी ही बुक बहुत वड्डी है।" (तुम्हें सत्संग की क्या आवश्यकता है। तुम्हारे स्वयं के सत्संग की पुस्तक ही इतनी बड़ी है।) गुरुजी मुझसे अक्सर यह शब्द कहा करते थे। उनके शुभाशीर्वाद तथा उनकी छत्र-छाया में यह पुस्तक लिख रहा हूँ तो उनके कहे ये शब्द पुनः मेरे कानों में गूँज रहे हैं।

मैं तो साधारण मनुष्य मात्र हूँ। परन्तु गुरुजी तो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वभूत महान शक्ति हैं। गुरुजी मेरे पालनहार, मेरे मार्गदर्शक, मेरे प्रभु हैं। इस पावन पुस्तक को अपने सभी पाठकों तक पहुँचाने में मैं स्वयं को अत्यंत गौरवशाली समझ रहा हूँ। मेरी बड़ी विनम्रतापूर्वक गुरुजी से यही प्रार्थना है कि वे अपनी दिव्यता के अमृत सरोवर में सभी भक्तों को डुबकी लगाने की अनुमति प्रदान करें।

परिचय

अपने अनुभवों को व्यक्त करने का यह मेरा एक विनम्र प्रयास है। गुरुजी की शरण में आ जाने पर जो चमत्कार हमारे जीवन में हुए, उन्हें और उनकी महिमा को बताने का प्रयास किया है। यह मात्र मुझसे मेरे मित्रों व मेरे परिवार से सम्बंधित सत्संगों का संग्रह ही नहीं है अपितु गुरूजी के अपार अनमोल आशीर्वाद का अथाह खज़ाना भी है। इसमें उनके अलौकिक प्रकाश और उनका जादुई व्यक्तित्व भी है। उनके सत्संग केवल उनकी प्रभुता का चित्रण ही नहीं करते अपितु यह भी दर्शाते हैं कि गुरूजी अपने भक्तों की बहुत चिंता भी करते हैं। वे अपने भक्तों के स्वास्थ्य व आर्थिक लाभ से भी अधिक अपने हर शिष्य का अपने अपरिमित प्यार व आशीर्वाद से पथ निर्देश भी करते हैं। गुरूजी हमारे पालनहार, हमारे मार्गदर्शक और हमारे भगवान हैं। हमें सदा स्मरण रखना चाहिए जो कुछ भी गुरूजी के पास हमारे लिए है उसे हम विनम्रतापूर्वक सधन्यवाद स्वीकार करें क्योंकि केवल गुरूजी ही हमारे उचित व अनुचित के ज्ञाता हैं। हमें सम्पूर्ण हृदय से गुरूजी के प्रति समर्पित होना चाहिए। उनकी दिव्य शक्ति तुम्हारे अतः करण को पवित्र करे। उनके आध्यात्मिक प्रकाश से तुम्हारा जीवन मार्ग प्रकाशित हो जाए। तुम अज्ञान के अंधेरे को पीछे छोड़कर उस जगमग मार्ग पर आगे बढ़ो जो अंत में गुरूजी की दिव्य ज्योति में सदा के लिए लिप्त हो, उनके प्रभुत्व व महिमा में समाता जाए। निस्वार्थ भाव से गुरूजी से प्रेम होना चाहिए, उन्हीं में सम्पूर्ण निष्ठा होनी चाहिए। फिर तुम स्वयं देखोगे कि गुरुजी कितनी मृदुलता से तुम्हें सतकर्म करने के लिए प्रेरित करते हुए तुम्हें मोक्ष के निकट पहुँचा देंगे।

"मेरे गुरु जिहा होर कोई ना"
"मेरे गुरु सदृश्य कोई अन्य नहीं है।"

ॐ नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहाय

गुरुजी का दुष्ट आत्मा को भगाना

हम मनुष्य बहुत स्वार्थी होते हैं। इश्वर हमें सचेत करता है परन्तु हम उस पर ध्यान नहीं देते जब तक हमारा कोई मतलब या कारण ना हो। अपने भक्तों को अपने पास बुलाने का गुरुजी का अपना ही अलग तरीका था। सन् 1996 पटियाला, पंजाब में अपना जन्मदिन मनाते हुए गुरुजी ने अपने शुभ स्वरूप संगत में बाँटे। मेरे अंकल व आंटीजी भी वहाँ उपस्थित थे। गुरुजी ने आशीर्वाद से युक्त अपना एक स्वरूप मेरी माताजी को दिया जिसे मेरी माताजी ने श्रद्धापूर्वक मंदिर में रखा। मेरी माताजी व भाई गुरुजी के महाशिवरात्रि के उत्सव में गए। मेरी माताजी मुझे भी साथ ले जाना चाहती थीं परन्तु मैंने इंकार कर दिया। बाल्यावस्था से ही मैं शिव भक्त हूँ। मैं प्रतिदिन शिव पुराण का पठन किया करता था और अपने हाथ में रुद्राक्ष माला लेकर शिवजी का जाप किया करता था। अचानक ही मैंने एक दिन निश्चय किया कि न मैं माला लेकर जाप करूँगा और न ही प्रार्थना करूँगा। एक संत पुरुष हमारे घर अक्सर आया करते थे। उन्होंने मुझे मात्र शिव भक्ति करते रहने के लिए कहा। उन्होंने भविष्यवाणी की कि आगामी 45 दिनों में शिव प्रभु के दर्शन से मैं धन्य हो जाऊँगा। उनसे प्रेरित होकर फिर से मैंने प्रतिदिन भक्तिपूर्वक प्रार्थना आरम्भ कर दी। उन संत पुरुष के कथानुसार उन्हीं 45 दिनों के भीतर मुझे गुरुजी मिले।

मेरी पत्नी किसी दुष्टात्मा के प्रभाव में थी। कोई भी प्रार्थना या अनुष्ठान इस समस्या को हल करने में सहायक नहीं हो पा रहा था। इस कारण घर में सब परेशान थे। मैंने अपने सम्पूर्ण परिवार के साथ पंचकुला जाकर गुरुजी से आशीर्वाद लेने का निर्णय किया। परन्तु जैसे ही हम पंचकुला बस स्टेशन पहुँचे मैंने सबको गुरुजी के पास न जा ने के लिए बलपूर्वक कहा। मुझे लगा कि मेरी माताजी और पत्नी को अन्य औरतों की भांति निकारण ही गुरुजी पर विश्वास है। गुरूजी के दर्शनों की अपेक्षा हम मनसा देवी माँ के दर्शनों के लिए चले गए।

मैं व मेरा परिवार भाग्यशाली था कि हमने 13 अप्रैल 1997 बैसाखी का पर्व चंडीगढ़ में मनाया। शादी के समारोह की भाँति सारा वातावरण प्रसन्नता व आनंद से परिपूर्ण था। मैंने एक भक्त को कहते सुना कि यदि कोई भक्त सच्चे हृदय से गुरुजी को याद करता है तो गुरुजी उस भक्त को अवश्य दर्शन देते हैं। सारी रात मैं गुरुजी से प्रार्थना करता रहा। सुबह 4:30 बजे मेरे शयन कक्ष का द्वार अपनेआप खुल गया और मेरी पत्नी ने किसी की परछाईं देखी। उसने एकदम मुझे जगाया परन्तु वह छाया विलुप्त हो गई। कुछ घंटों बाद जब हम घर की सफाई कर रहे थे तो सोने की दो महीन तारें हमें घर के मंदिर में मिलीं। मेरी पत्नी ने उन तारों को सुरक्षित स्थान पर रख दिया। आश्चर्य तो इस बात का था कि यह घटनाक्रम तब तक रोज़ चलता रहा जब तक लगभग 30 स्वर्ण तारें हमने एकत्रित कर लीं। ये तारें (सुच्चा तिल्ला) गुरूजी के चोले की थीं। हमें इससे ज़्यादा और किसी साक्ष्य की आवश्यकतानहीं थी कि गुरुजी, हमारे प्रभु, स्वयं आशीर्वाद देने हमारे घर आए थे। हम प्रति सप्ताह गुरुजी के पास जाने लगे। परन्तु मेरी पत्नी के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो रहा था। अगली बार हम ताम्बे का एक पात्र लेकर गुरुजी के पास गए। जब गुरुजी ने अपने दिव्य हाथों से पात्र को स्पर्श किया तो मैं अपने आप में अच्छा अनुभव करने लगा। हम वापिस घर लौट आए। इसके पश्चात हम गुरुजी के जन्मस्थान डुगरी गए। मेरे साथ आए भक्त ने गुरुजी के घर की ईंट का आधा टुकड़ा मुझे दिया और कहा इस महापुरुष के जन्मस्थान का हर पत्थर पवित्र है। घर आकर मैंने उस पवित्र ईंट का आधा टुकड़ा भक्तिभाव व आदरपूर्वक अपने घर में बने गुरुजी के मंदिर में रख दिया। और चमत्कार हो गया!! आधी रात को गुरुजी मेरे स्वप्न में आए और मेरे पास खड़े हो गए। मेरी वाणी को उन्होंने स्त्री की वाणी में बदल दिया। उस स्त्री की आत्मा गुरुजी से बात करने लगी। वह बता रही थी कि वह बहुत शक्तिशाली है और उसे कोई भी परास्त नहीं कर सकता है। परन्तु इस आधी ईंट की शक्ति ने उसे हार मानने के लिए विवश कर दिया है। मैं यह आश्चर्यजनक घटना अपने स्वप्न में देख रहा था। मैंने स्वप्न में ही उस दुरात्मा को हमारे घर से जाते हुए देखा। अगले सप्ताह गुरुजी के दर्शनों के लिए हम चंडीगढ़ गए। गुरुजी

ने आधी ईंट व अपना स्वप्न उनके वहाँ आई हुई संगत को सुनाने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि भक्तों के कहे बिना भी गुरुजी को अपने भक्तों के कष्टों का ज्ञान हो जाता है।

गुरुजी अपने भक्तों को याद दिलाते रहते थे कि वे भगवान शिव के अवतार हैं। वास्तव में स्वयं को महाशिव कहते थे। उनके अनुसार गुरु दो प्रकार के होते हैं - मनमुखी (मन पढ़ने वाले) और मुँहमुखी (वे जिन्हें शिष्यों के कष्टों के बारे में बताया गया हो। गुरुजी मनमुखी थे। उन्हें पता होता था कि उनके भक्तों के मन में क्या चल रहा है।

गुरुजी अक्सर कहा करते थे कि किसी को भी गुरु से कुछ माँगना नहीं चाहिए। क्योंकि माँगना गुरु के प्रति अनादर है और माँगना गुरु का महत्त्व कम करता है। "माँगो नहीं मानो"।गुरुजी का कहना था "मुझसे कुछ नहीं माँगो, बस मेरी आज्ञा मानो।" गुरुजी संगत से कहा करते थे कि भक्त के कुछ माँगने से जो आशीर्वाद गुरुजी देना चाहते हैं उसकी मात्रा कम हो जाती है।

गुरुजी यह भी कहा करते थे कि उनका पूर्ण आशीर्वाद पाने के लिए संगत को उनसे कुछ दूर बैठना चाहिए। गुरुजी अक्सर दिए का उदाहरण देते थे। दिए के तले में अंधेरा होता है परन्तु वह अपने स्थान से दूर को प्रकाशित करता है।

अमरनाथ की गुफा में शिवलिंग दर्शन

सन् 1997 में अमरनाथ यात्रा में मुझे व मेरे भाई को मध्यरात्रि में शिवलिंग के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपनी प्रार्थना में मैंने गुरुजी से प्रश्न किया कि वे कौन हैं? तत्काल शिवलिंग से से एक अद्भुत ज्योति प्रवाहित हुई और उसकी आभा ने मुझे घेर लिया। मैंने गुरुजी को अपने गुरु स्वरूप में देखा और फिर शिव रूप में देखा। बातें करते हुए उन्होंने बताया कि वे स्वयं ही 'महाशिव' हैं। उसी समय अपने वाहन नंदी के साथ वे मेरी पत्नी के स्वप्न में भी आए और उसे बताया कि वे मुझे भी अमरनाथ के दर्शन दे रहे हैं। हम दोनों एक ही समय पर उन्होंने आशीर्वाद दिया।

समराला के निकट चल्लां में शिवलिंग दर्शन

जब समराला के निकट चल्लां में अकस्मात् शिवलिंग प्रकट हुए तो कई श्रद्धालु वहाँ आए। मैं भी अपनी पत्नी डिंपल व पुत्र अक्षय के साथ वहाँ गया। सोमवार होने के कारण मेरी पत्नी बार-बार दूध चढ़ाने के लिए कह रही थी। मैं उसे समझा रहा था कि गुरुजी के पास जाने के कारण इसकी आवश्यकता नहीं है परन्तु उसके न मानने पर मैंने उसके आग्रह को मान लिया।

उसी रात्रि गुरूजी ने डिंपल को स्वप्न में दर्शन दिए। स्वप्न में उसने देखा कि वह छोटे मंदिर में गुरुजी के समक्ष बैठी हुई है। उसने एक भक्त का लिखा हुआ पत्र गुरुजी को दिया। गुरुजी ने पत्र खोल कर पढ़ा। भक्त ने लिखा था गुरुजी ज़्यादा बोलते क्यों नहीं हैं? तत्काल ही गुरुजी अपने आसान से उठकर अपने कमरे में चले गए। वे अपना एक स्वरूप (फोटो) लेकर आए और पत्नी को उसे देखने के लिए कहा। मेरी पत्नी स्वरूप देखती जा रही थी और उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि स्वरूप मिट सा गया है और उसके स्थान पर सुनहरे रंग में 'ॐ' प्रकट हो गया है। गुरुजी ने पत्नी को निर्देश दिया कि वह बिना बोले 'ॐ' को देखती रहे। कुछ क्षणों में वह 'ॐ' शिवलिंग में परिवर्तित हो गया। जैसे-जैसे शिवलिंग का आकार बढ़ने लगा, मेरी पत्नी को शिवलिंग में गुरुजी लेटे हुए दिखाई दिए। आश्चर्य व उत्साह से भरकर मेरी पत्नी स्वप्न में चिल्लाने लगी कि शिवलिंग में उसे गुरुजी के दर्शन हो रहे हैं। तब गुरुजी ने कहा कि उनकी शरण में आए भक्त को किसी मंदिर में जाकर दूध चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे स्वयं ही महाशिव हैं। एक बार गुरुजी के दिव्य संरक्षण में आने पर वे वास्तव में भगवान शिव के संरक्षण में ही होते हैं।

इस अलौकिक स्वप्न से मेरी पत्नी को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। उसने चल्लां में शिवलिंग पर दूध चढ़ाने के आग्रह को छोड़ दिया।

गुरुजी द्वारा मेरे अनुज का उपचार

अपेंडिक्स के ऑपरेशन के बाद मेरे छोटे भाई के स्वास्थ्य में कुछ समस्याएँ हो गई थीं। वह जब भी चाय पीता था तो मूत्र नलिका में अवरोध होने के कारण उसे तीव्र पेट दर्द होता। डाक्टरों ने इसका कारण तनाव बताया। उन दिनों गुरुजी संध्या समय अपने भक्तों को 10 - 12 कप चाय पिलाते थे। जिस दिन हम उनके दर्शनों के लिए गए तब उन्होंने 15 कप चाय प्रसाद पिलाया। मेरे भाई को पेशाब जाने की अनुभूति होती थी परन्तु वह कर नहीं पा रहा था। उसे लगा कि उसे चंडीगढ़ अस्पताल में भर्ती होना पड़ेगा।
रात 2 बजे गुरुजी लुधियाना न जाकर अपने कमरे में लंगर खाने चले गए। तदन्तर उन्होंने सारी संगत को पंक्तिबद्ध होकर घर जाने की आज्ञा लेने का आदेश भिजवाया। मेरे भाई की बारी सबसे अंत में आई। गुरुजी ने तब उसे एक बार फिर चाय प्रसाद ग्रहण करने के लिए कहा। मेरे अनुज को लगा कि गुरुजी तो ध्यान देंगे नहीं; इसलिए उसने चाय प्रसाद ग्रहण करने से इंकार कर दिया। गुरुजी की आज्ञानुसार सेवादार के देने पर भाई ने चाय प्रसाद ग्रहण किया। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया, " जा तेरा कल्याण कित्ता" (जा मैंने तेरा कल्याण कर दिया)। मेरे भाई ने लुधियाना जाने से पहले शौचालय जाने की सोची। जैसे ही वह मूत्र विसर्जन करने लगा तो 8-10 मिनट तक लगातार करता ही गया। चाय प्रसाद के रूप में गुरुजी के कल्याणकारी आशीर्वाद के चमत्कारी प्रभाव से वह ठीक हो गया। उस रात्रि के पश्चात उसे फिर इस समस्या का सामना कभी नहीं करना पड़ा। हमारे गुरुजी की दया, कृपा में भी उपचार की शक्ति है।

गुरुजी का अक्षय के प्लेस्कूल जाना

गुरुजी हमारे पुत्र अक्षय के स्कूल अक्सर जाते रहते थे। जब हम उनके दर्शनों के लिए चंडीगढ़ जाते थे तब उन्होंने वही चोला पहना हुआ होता था जिसे पहनकर वे अक्षय के स्कूल में जाते थे। गुरुजी प्रसाद रूप में अक्षय के लिए मीठी गोलियाँ, मिठाई और मिश्री लेकर जाते थे। गुरुजी अक्षय और उसके मित्रों के साथ खेलते भी थे। छोटे-छोटे शिशुओं को कल्याणकारी आशीर्वाद देने का उनका यह ढंग होता था।

अक्षय का डी. ए. वी. स्कूल में दाखिला

हर माँ-बाप की भांति हमारी भी यही आकांक्षा थी कि हमारे पुत्र की शिक्षा अच्छे विद्यालय में हो। इस कारण लुधियाना के मान्य स्कूलों में प्रवेश के लिए हमने आवेदन दिए। दान में भारी राशि न देने के कारण कई विद्यालों ने प्रवेश देने से इंकार कर दिया। मात्र डी. ए. वी. विद्यालय ही रह गया था। सुबह अंतिम साक्षात्कार पर जाने से पहले अक्षय ने स्वप्न में देखा कि अक्षय गुरुजी का स्वरूप लेकर विद्यालय जाए। ऐसा निर्देश उसे गुरुजी दे रहे हैं। गुरुजी की स्वप्न में दी गई आज्ञा का अक्षय ने पालन किया। 2500 बच्चों में से केवल 250 बच्चे ही चुने गए थे। गुरुजी की कृपा से अक्षय उन भाग्यशाली बच्चों में से एक था। गुरुजी सस्नेह हमारी रक्षा करते हैं और अपनी निगरानी में ही हमें रखते और देखते हैं।

गुरुजी के भाल पर शिवलिंग दर्शन

गुरुजी का पावन आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए बहुत सारी संगत उनके जन्मदिन, 7 जुलाई 1998 को एकत्रित हुई। बहुत उल्लास ऐंव हर्षपूर्वक यह दिवस मनाया गया। गुरुजी ने मिठाई व अपने स्वरूप सारी संगत में बाँटे। हम उस भाग्यशालियों में थे जिन्हें पवित्र फूल प्रसाद भी मिला। हम जैसे ही लौटने लगे तो मेरा एक मित्र मुझे गुरुजी के पास ले गया। उस समय गुरुजी के आभायुक्त मस्तक पर श्याम रंग के शिवलिंग के दर्शन कर मैं धन्य हो गया। लगभग पाँच मिनट पश्चात शिवलिंग अदृश्य हो गया। गुरुजी स्वयं महाशिव हैं, यह बताने का उनका विलक्षण तरीका था।

गुरुजी का मेरी पुत्री को मोक्ष प्रदान

अपने भतीजे की पहली लोहड़ी (1998) का उत्सव मनाने से पहले गुरुजी के पावन दर्शनों के लिए हम डुगरी गए। मैंने गुरुजी की माताजी से कुछ उपले प्रसाद के रूप में माँगे। माताजी ने जूट का बड़ा थैला भरकर उपले हमें दिए। इस भय से कि गाड़ी अंदर से मैली और खराब न हो जाए, मैंने थैला भर उपले लेने से इंकार कर दिया। माताजी ने समझाया भी कि चाहे प्रसाद कितना भी बड़ा क्यों न हो, भक्त को लेने से इंकार नहीं करना चाहिए। उनके इतना कहने के बावजूद भी मैंने केवल 8 - 10 उपले ही गाड़ी में रखे। फिर वापिस लुधियाना आकर हमने लोहड़ी का त्योहार मनाया।

इसी बीच गुरुजी ने माताजी को अपने साथ रहने के लिए दिल्ली बुला लिया। एक दिन गुरुजी ने माताजी से पूछा कि कोई भक्त कुछ लेने के लिए डुगरी आया था? माताजी ने बताया कि चश्मा पहने हुए एक व्यक्ति आया था और प्रसाद रूप में उपले माँग रहा था। गुरुजी ने फौरन प्रश्न किया कि माताजी ने बोरा भरकर उपले दिए कि नहीं क्योंकि वे मानते थे कि उनका जो अनुयायी गुरुजी के घर आए वह पूर्ण आशीर्वाद लेकर ही जाए। माताजी ने पूरी घटना गुरुजी को सुनाई। गुरुजी ने कहा, "होता ऐ ही।"
" होगा होगा ऐही होगा, होगा होगा नहीं होगा।"

"चलो जब होगा तब देखेंगे।" गुरुजी का ऐसा कहने का भाव यही है कि जो होना है वही होगा। होगा या नहीं हम बाद में देखेंगे जब होगा।

इस घटना के तुरंत बाद ही मेरी पत्नी गर्भवती हो गई। हम मास में एक बार गुरुजी के दर्शनों के लिए दिल्ली जाने लगे। पत्नी के गर्भ के सातवें मास में हमने गुरुजी से प्रार्थना की कि वह अपने पहने हुए चोलों में से एक हमारे होने वाले शिशु के लिए दे दें। गुरुजी ने कहा कि उपयुक्त समय आने पर वह दे देंगे। हम समझ नहीं पाए कि गुरुजी ऐसा क्यों कह रहे हैं। परन्तु हमने उनसे कोई प्रश्न नहीं किया। मेरी पत्नी का आठवाँ मास चल रहा था तो डाक्टर को गर्भ में शिशु की कोई हलचल नहीं लगी। यह जानने पर हमने गुरुजी के पास संदेश भेजा। उन्होंने उत्तर भेजते हुए कहा कि सब ठीक होगा।

यथा समय मेरी पत्नी ने ऑपरेशन द्वारा एक कन्या को जन्म दिया। नवजात शिशु के फेफड़ों में पानी के जमात के कारण मेरी पत्नी को गहन देखभाल कक्ष (आइ. सी. यू.) में रखा गया। तीसरे दिन उसके स्वास्थ्य में कुछ सुधार देखकर गुरुजी के पास दिल्ली संदेश भेज दिया। गुरुजी ने उत्तर में फिर संदेश भेजा कि "कोई चिन्ता ना करो।" मैंने बिटिया के कानों में मंद स्वर में "ॐ नमः शिवाय गुरुजी सदा सहाय" का मंत्र जाप किया। उस रात्रि घर लौटने पर ही मुझे बिटिया की मृत्यु का समाचार प्राप्त हो गया। हमने शिशु का अंतिम संस्कार किया। कुछ दिन पश्चात मेरी पत्नी भी अस्पताल से घर लौट आई थी। उसके पेट के टाँकों में मवाद पड़ गई थी। हमारे परोपकारी सहृदय गुरुजी ने स्वप्न में दर्शन देकर उसकी रक्षा की। गुरुजी ने ने स्वप्न में पत्नी को एक गुप्त उपचार बताया। उन्होंने कहा कि 41 दिनों में वह ठीक हो जाएगी। इन सब घटनाओं से मैं विचलित हो उठा। मैं गुरुजी के पावन स्वरूप

के सामने फूट-फूट कर रोने लगा और पूछने लगा कि ऐसा क्यों हुआ? उस रात लाल चोला पहने हुए गुरु ने अपने पावन दर्शन मुझे दिए। जहाँ मेरी बेटी का अंतिम संस्कार किया था उस स्थान पर गुरुजी मुझे ले गए। उन्होंने मुझे उस स्थान को खोदने के लिए कहा। बेटी का मृत शरीर दिखाई देने पर गुरुजी ने उसे एक हाथ में ले लिया। उन्होंने मुझे बिटिया के छोटे से चेहरे से वस्त्र हटाने के लिए कहा। अपने दूसरे हाथ में अमृत पैदा करते हुए उसे शिशु के मुँह पर जैसे ही छिड़का, बेटी रोने लग गई। तब गुरुजी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं अपनी बेटी वापिस चाहता हूँ? परन्तु मैं मूक रहा। उनके दोबारा पूछने पर मैंने इंकार कर दिया। उस समय मुझे उपदेश देते हुए गुरुजी ने बताया कि मेरे भाग्य में कन्या संतान नहीं है। परिवार के अन्य सदस्यों को मृत्यु से बचाने के लिए ही इस कन्या का जन्म हमारे परिवार में हुआ है। उन्होंने यह भी बताया कि तुम या तुम्हारी पत्नी, या तुम्हारे पुत्र की मृत्यु हो सकती थी परन्तु अब सब कुशल मंगल होगा। गुरुजी ने कहा कि हमारी बेटी को गर्भ के नौ मास में ही उन्होंने मोक्ष प्रदान कर दिया है जबकि हज़ार जन्मों के पश्चात ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। गुरुजी ने मृत शिशु के लिए कभी भी शोक करने से हमें मना किया। उन्होंने बताया कि कन्या जन्म-मृत्यु के चक्र से सदा के लिए मुक्ति प्राप्त कर चुकी है। इस प्रकार के चमत्कारी व विचित्र ढंग से गुरुजी अपने शिष्यों व भक्तों को धन्य करते रहते हैं।

बड़े मंदिर में ज्योतिर्लिंग

एक रात एम्पायर एस्टेट में सत्संग करने के पश्चात गुरुजी अपने अनुयायियों को बड़े मंदिर ले गए। गुरुजी के भाई भी साथ में थे। गुरुजी जब मंदिर दिखा रहे थे तब मुझे शिवलिंग के नीचे पानी दिखाई दिया। पानी अर्धचंद्र के रूप में था। मैंने गुरुजी से कहा कि वर्षा हो रही है। मेरी बात को सुधारते हुए उन्होंने कहा कि यह मात्र पानी नहीं है, यह अमृत वर्षा है (आकाश से अमृत रूप में जल बरस रहा है)। उन्होंने बताया कि भारत में बारह ज्योतिर्लिंग शिवलिंग हैं। किन्तु बड़े मंदिर का शिवलिंग सबसे शक्तिशाली है। जो भक्त सम्पूर्ण निष्ठा व भक्ति से इस शिवलिंग की पूजा करेंगे, उनकी सभी कामनाएँ पूर्ण होंगी।

गुरुजी द्वारा मनकों की माला का निषेध

मैं हमेशा मनकों की माला हाथ में लेकर प्रार्थना किया करता था। गुरुजी का अपने भक्तों से सुमरनी न लेने का आग्रह होता था। उनका मानना था कि इससे भक्त के मन में अहम् की भावना जागृत होती है। एक दिन सुमरनी माला सामने रखकर मैंने ध्यान लगाना आरम्भ किया। अपने ध्यान में मैंने स्वयं को बड़े मंदिर में देखा। मैंने देखा कि दाहिनी ओर गुरुजी अपने आसान पर बैठे हुए हैं और जिस स्थान पर अब शिवलिंग स्थित है वहाँ भगवान शिव विराजित हैं। मैंने देखा कि दो तीव्र प्रकाश की किरणें - एक गुरुजी के हाथ से निकलकर व दूसरी शिवजी के हाथ से निकलकर मेरी सुमरनी की माला से टकराईं और माला टूट गई। अपना ध्यान भंग होने पर मैंने अपने सामने रखी सुमरनी माला को टूटा पाया। अपनी दैवीय शक्ति से गुरुजी ने मेरे ध्यान में देखे हुए दृश्य को वास्तविक कर दिया। इसके पश्चात मैंने मंत्र जाप के लिए सुमरनी माला का प्रयोग बंद कर दिया।

गुरुजी द्वारा अनुज की दुष्टात्मा से मुक्ति

एक दिन संध्या समय मेरा भाई काम से लौट रहा था तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि कोई बहुत निकट से उसका पीछा कर रहा है। ऐसा कई दिनों तक होता रहा परन्तु जैसे ही मेरा भाई घर में प्रवेश करता था तो वह शक्ति या आत्मा उसका पीछा करना छोड़ देती थी। एक रात घर लौटने पर जब वह अपने कमरे में था तो उसे लगा कि कोई उसे बाहर बुला रहा है। उसने अनुभव किया कि न चाहते हुए भी वह अपनेआप को बाहर जाने से रोक नहीं पा रहा है। उसने तुरंत ही मंत्र जाप करना आरम्भ कर दिया। उसे लगा कि वह शक्ति बहुत ताकत से उसे अपनी ओर खींच रही है। मेरे भाई ने प्रार्थना में गुरु का नाम ऊँचे स्वर में लेना आरम्भ कर दिया। हम उसकी पुकार सुन रहे थे। परन्तु उस दुष्टात्मा की नकारात्मक शक्ति हमें उसकी सहायता नहीं करने दे रही थी, हमें रोक रही थी। कुछ क्षणों के पश्चात मेरे भाई को प्रतीत हुआ कि गुरुजी उसके सिर के पास खड़े हैं। उसी समय हम सबको भी लगा कि भाई को उस नकारात्मक शक्ति से छुटकारा मिल गया है। हम सब भाई की ओर भागे। घर के मंदिर में ले जाकर उसे अमृत पिलाया। तब वह ठीक हुआ और सो गया। हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब अगली प्रातः हमने अपने बगीचे में एक बड़ा गड्ढा देखा। ऐसा लगा मानो वहाँ कोई बड़ी लड़ाई हुई हो। अवश्य ही गुरुजी ने आकर उस नकारात्मक आत्मा को युद्ध में परास्त किया होगा।

कुछ दिनों बाद हम एक ज्योतिषी के पास गए। उसने बताया कि उस रात्रि या तो मेरे भाई की मृत्यु हो जाती या उसे पक्षाघात हो सकता था। केवल गुरुजी ही थे जिन्होंने उसे जीवन दान दिया था। हमें भली भांति ज्ञात था कि हमारी रक्षा करने के लिए कौन आए थे।

वह रक्षक पालनकर्त्ता गुरुजी ही थे।

गुरुजी द्वारा भतीजी को आशीर्वाद

मेरी भतीजी की रीढ़ की हड्डी में बीमारी हो गई थी। डाक्टर के कथनानुसार इसकी कोई चिकित्सा नहीं थी। मेरी भतीजी को गुरुजी पर अटूट विश्वास है। पटियाला में अस्पताल जाने से पहले वह गुरुजी के दर्शनों के लिए चंडीगढ़ गई। गुरुजी हॉल में बैठे हुए थे। वह हॉल के बाहर बैठ गई। जब गुरुजी हलवा प्रसाद बाँटने लगे तो वह फूट-फूट कर रोने लगी। सारी संगत को हलवा प्रसाद बाँटने के बाद गुरुजी ने आशीर्वाद देते हुए उसे हलवा प्रसाद दिया। हलवा प्रसाद ग्रहण करने के बाद वह पटियाला के राजेन्द्र अस्पताल में दाखिल हो गई। उसने वहाँ कई मरीज़ों को रीढ़ की हड्डी के रोग से ग्रस्त देखा। दो या तीन सप्ताह में गुरुजी की असीम अनुकम्पा से वह पूर्णतः ठीक हो गई। केवल मूत्र नलिका शेष रह गई थी। परन्तु गुरुजी की कृपा से उसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। यह सब गुरुजी के आशीर्वाद रूप में हलवा प्रसाद, चाय प्रसाद और लंगर प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात ही संभव हुआ। डाक्टर भी इस चमत्कार को देखकर विस्मित थे। परन्तु हम सब जानते थे कि गुरुजी के दैवीय आशीर्वाद से ही यह सब कुछ संभव हो सका था।

गुरुजी का मेरी आंटी को आशीर्वाद

जिन दिनों गुरुजी चंडीगढ़ में रहते थे, डुगरी (मलेरकोटला) की संगत परिवार लंगर बनाती थी। सेवादार लंगर लेकर चंडीगढ़ आते थे। लंगर में मक्की की रोटी व सरसों का साग बनता था। मलेरकोटला के निकट रहने वाली मेरी एक आंटी ने रोटियों की सेवा की प्रार्थना की। अगले दिन एक भिखारी ने उनके घर के बाहर खड़े हो

चाय या भोजन की भिक्षा माँगी। मेरी आंटी ने मना कर दिया। भिखारी ने मेरी आंटी से कहा कि जब तुम चाय या भोजन भी नहीं दे सकती तो पिछले दिन रोटियों की सेवा क्यों माँगी। मेरी आंटी तुरंत रसोईघर में गई। उन्होंने चाय बनाई और लड्डू के साथ उसे दी। भिखारी ने चाय और लड्डू के बदले मेरी आंटी को कुछ माँगने को कहा। मेरी आंटी ने कहा कि मेरे गुरुजी ने मुझे सब कुछ दिया है। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। तब भिखारी ने आशीर्वाद देते हुए कहा "तेरा कल्याण कित्ता।" रसोईघर लौटते समय मेरी आंटी को इन शब्दों का अर्थ समझ आया तो वे घर के द्वार की ओर भागीं। परन्तु वह भिखारी अदृश्य हो चुका था। वास्तव में वे गुरुजी ही थे। वे आंटी की परीक्षा लेने व उन्हें आशीर्वाद देने ही आए थे। गुरुजी बड़े अद्‌भुत और सस्नेह हम सभी को आशीर्वाद देते हैं। कई बार हम उनकी दिव्य उपस्थिति पहचान भी नहीं पाते हैं।

गुरुजी ने डिंपल की पक्षाघात से रक्षा की

कुछ साल पहले मेरी पत्नी डिंपल ने मेरी माताजी के साथ माता नयना देवी के मंदिर जाने का अनुरोध किया। वापिस आने पर हमने घर के प्रवेश द्वार पर हाथों के निशान पड़े देखे। डिंपल ने पानी से धोकर उन निशानों को साफ कर दिया। रात को उसकी उँगलियों में तेज़ दर्द होने लगा और दर्द बढ़ता ही गया। दर्द पैरों में भी शुरू हो गया। डिंपल अपनेआप चलने में भी असमर्थ हो गई। हमने डाक्टर से मिलने के लिए सोमवार का समय लिया। मैं निर्धारित समय पर आफिस से निकलने लगा तो डिंपल का फोन आया और उसने बताया कि वह पूर्णतः ठीक है और डाक्टर से मिलने की कोई आवश्यकता नहीं है।

डिंपल ने बताया कि वह गुरु के पावन स्वरूप से बात करते हुए उनसे यही पूछती रही कि गुरुजी की पावन दिव्य सुरक्षा में सभी भक्त वेदना विमुक्त हो जाते हैं तो उसे इतनी यातना क्यों हो रही है। तब गुरुजी ने उसे दर्शन दिए। उन्हें देख डिंपल इतनी हैरान और स्तब्ध सी हो गई कि पलंग से हिल नहीं पाई। गुरुजी ने पलंग पर बैठते हुए उसे बताया कि मुख्य द्वार पर लगे हाथों के निशान उसकी सास की संभावित मृत्यु के थे। उन्होंने डिंपल के हाथ व पैरों में दर्द देकर उन्हें बचा लिया है। गुरुजी ने डिंपल के हाथों को सहलाया पर वह अभी भी हिलने में असमर्थ थी। उन्होंने फिर से सहलाया तो चमत्कारिक रूप से उसका दर्द मिट गया और वह हिलने डुलने लग गई। अपनी उपचारिक शक्ति से गुरुजी ने उसे ठीक कर दिया।

गुरुजी ने मेरी माताजी को उनके पावन स्वरूप के समक्ष प्रार्थना करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि उनके स्वरूप को जल में भिगोने के बाद उस अमृत रूप जल का सारे घर में छिड़काव कर दें। उन्होंने कहा कि ऐसा करने से आई हुई नकारात्मकता और दुष्ट शक्तियाँ नष्ट होकर घर से चली जाएँगी। हम साधारण प्राणियों के लिए यह सब समझ से परे हैरान करने वाली बातें लगती हैं कि गुरुजी कैसे करते हैं और क्या करते हैं। हमें केवल यही स्मरण रखना चाहिए कि हमारा गुरुजी के प्रति अटूट विश्वास हो और हम पूर्ण रूप से उनके प्रति समर्पित हों।

गुरुजी की मेरी मृत्यु पाश से रक्षा

सन् 1995 में मेरे घर तीन भिक्षु आए। उनमें से एक भविष्यवाणी करने लगा। उसने मेरी माताजी से कहा कि उनकी दो संतानें हैं। माताजी ने उसे बताया कि उनके दो पुत्र व एक पुत्री हैं। मेरी माताजी ने संत से प्रार्थना

की कि वे कुछ ऐसा उपाय करें कि मेरी बहन के ससुराल वाले उससे दुर्व्यवहार करना छोड़ दें। वह संत फिर मेरी माताजी से कहने लगे कि उनकी कोई पुत्री नहीं है और बड़ी संतान की अब तक मृत्यु हो चुकी होगी। मेरी माताजी ने मेरी पत्नी को कमरे में बुलाया। मेरी पत्नी को देखते ही संत कहने लगा कि मेरी बड़ी आयु का वरदान उस महापुरुष का है जिसके हम अनुयायी व अनन्य भक्त हैं। उसने कहा कि हर पल गुरुजी हमारे साथ हैं। उसने भविष्यवाणी की कि माह के अंत तक मेरी मृत्यु हो जाएगी। कुछ भोजन व वस्त्र मिलने पर वह इस दुखद घटना को दूर कर सकता है। संत के ऐसे वचन सुनकर डिंपल बहुत चिंतित हो गई। उसने मुझे गुरुजी के पास एम्पायर एस्टेट जाने के लिए कहा। मैंने ऐसा ही किया। प्रसन्नता की बात यह हुई कि उस समय गुरु पर्व भी मनाया जा रहा था।

उसी रात गुरुजी व माँ काली ने डिंपल को स्वप्न में दर्शन दिए। गुरुजी मुझे व डिंपल को माँ काली का आशीर्वाद लेने के लिए कह रहे थे। माँ काली ने हम दोनों को अपने हाथ दिखाने के लिए कहा। माँ काली ने छड़ी से मेरे हाथ को छुआ। परन्तु भय के कारण डिंपल ने अपना हाथ नहीं दिखाया। गुरुजी ने डिंपल से कहा कि माँ काली के मेरे हाथ पर छड़ी मारने पर गुरुजी ने मेरे सम्पूर्ण बुरे कर्म नष्ट कर दिए हैं। और जो कुछ वह देख रही है वह स्वप्न नहीं अपितु वास्तविकता है। डिंपल जैसे ही अपनी आँखें खोलती है कि मंदिर में रखे गुरुजी के स्वरूप ने लाल चोले की अपेक्षा काला चोला (माँ काली का प्रतीक) धारण किया हुआ है। काले रंग से लाल रंग में चोले को परिवर्तित होने में पाँच मिनट लगे। मुझे कोई संशय नहीं था परन्तु पूर्ण विश्वास था कि गुरुजी माँ काली के साथ हमारा कल्याण करने के लिए घर आए थे।

अक्षय के स्कूल का परीक्षा-फल

फरवरी 2002 में हम अक्षय के स्कूल टीचर व अभिभावक की मीटिंग में गए। टीचर ने कहा कि अक्षय पढ़ाई में बहुत कमज़ोर है और उसे नहीं लगता कि वह अगली कक्षा में जा सकेगा। यह जानकार मैं बहुत विचलित हो उठा। मैंने आफिस जाने के लिए जालंधर की बस ली। फगवाड़ा पहुँचने तक गुरुजी ने मुझे फोन कर जालंधर शीघ्रातिश्रीघ पहुँचने के लिए कहा। वहाँ पहुँचने पर स्कूल में जो कुछ टीचर ने कहा था उसका पूरा विवरण गुरुजी ने मुझे सुनाया। उन्होंने मुझे अक्षय की पढ़ाई के बारे में चिंता ना करने के लिए कहा। कुछ दिनों पश्चात उन्होंने अगले दिन के लिए मुझे हलवा बनाने के लिए कहा। मैं बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि गुरुजी ऐसी सेवा बहुत कम व्यक्तियों को देते हैं। मुझे प्रसन्न देखकर गुरुजी ने बताया कि अक्षय ने परीक्षा अच्छी तरह से दी है। उसे परीक्षा में कितने अंक मिले हैं यह भी गुरुजी ने बता दिया। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि परीक्षा फल एक दिन बाद निकलने वाला था। गुरुजी ने मुझे उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी पर विश्वास करने के लिए कहा। यह सही भी था। अगले दिन अक्षय का परीक्षा फल आने पर गुरुजी के वचन सत्य सिद्ध हुए। जब मैं संध्या समय गुरुजी के दर्शनों के लिए गया तो उन्होंने हँस कर मुझे कहा "देखया गुरु दी ब्लेस्सिंग्ज़ नू" (तुमने गुरु के आशीर्वाद को देखा)। उन्होंने हँसते हुए कहा कि अक्षय की टीचर से जाकर पूछो कि उसे इतने अच्छे अंक कैसे मिल गए?

गुरुजी के आशीर्वाद असंख्य हैं। वे सर्वज्ञाता हैं। आवश्यकता है कि हम उनकी आज्ञा और दिव्य अलौकिकता को पूर्ण निष्ठा से मानें।

केवल गुरुजी ही सर्वज्ञ हैं

एक दिन गुरुजी ने जालंधर आफिस में फोन करके मुझे मंदिर आने की आज्ञा दी। उन्होंने मेरे साथ बाज़ार जाने के लिए कहा। वे अपनी घड़ी में नई बैटरी डालना चाहते थे। दुकान से निकलने के थोड़ी देर बाद

गुरुजी वापिस दुकान जाकर पुरानी बैटरी लेने के लिए कहने लगे। यद्यपि मैं उनका यह कारण समझ नहीं सका परन्तु जैसी उनकी आज्ञा थी वैसा ही किया। पूछने पर दुकानदार ने कहा कि उसने पुरानी बैटरी कचरे के डिब्बे में फेंक दी है। गुरुजी ने कचरे के डिब्बे में से खोजकर पुरानी बैटरी निकाल ली। उन्होंने दुकानदार को बड़े प्यार व दयापूर्ण दृष्टि से देखा और हम दुकान से निकल से निकल गए। बड़े मंदिर पहुँचने पर गुरुजी ने बताया कि वे दुकानदार का कल्याण करने के लिए लौटकर दुकान में गए थे। हम गुरुजी की महिमा पर प्रश्न नहीं कर सकते। हमें इसमें कोई संदेह नहीं था कि उस दुकानदार को अनिष्ठ से बचाने के लिए गुरुजी ने अपना वरद आशीर्वाद उसे दिया है। केवल गुरुजी ही जानते हैं कि किसे आशीर्वाद देना है, कब आशीर्वाद देना है, कहाँ आशीर्वाद देना है और आशीर्वाद कैसे देना है।

गुरुजी द्वारा अक्षय की प्राण रक्षा

मैं और मेरा परिवार अक्सर ज्योतिषी के पास जाय करते थे। नवम्बर 2001 में भी हम गए। ज्योतिषी ने आगामी वर्ष अक्षय के लिए बहुत भारी बताया। जन्म कुंडली के अनुसार अक्षय का जीवन केवल आठ वर्ष थक ही सीमित है, ऐसा उसने बताया। कुछ महीनों बाद बड़े मंदिर जाने पर मैंने अपनी चिंता एक सेवादार को बताई। उसने मुझे सीधे गुरुजी से सम्पर्क करने के लिए कहा। गुरुजी हमेशा कहा करते हैं कि भक्त को बिना किसी मध्यस्थ के सीधे गुरुजी से बात करनी चाहिए। सेवादार ने गुरुजी को बताया कि मैं उनसे बात करना चाहता हूँ। गुरुजी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। मैंने उन्हें ज्योतिषी के बारे में बताया। उसने अक्षय के भविष्य के बारे में जो कुछ कहा वह भी गुरुजी को बताया। गुरुजी ने उत्तर देते हुए कहा, "गुरवां दे लड्डु लगके कदी वि बुरा नहीं हुन्दा है। पंडितां नूं अपनी लाइफ दा पता ते नहीं हुन्दा है, तो ऐ दूसरायाँ दी लाइफ दा किस तरां दस्संगे।" इसका अर्थ यही था कि ज्योतिषियों को अपने जीवन का तो पता नहीं होता तो वे किसी अन्य के जीवन की भविष्यवाणी कैसे कर सकते हैं? जिसे गुरु स्नेह करते हों, जिसकी रक्षा करते हों, उसका नुकसान कभी नहीं हो सकता। गुरुजी ने कहा जीवन-मृत्यु इश्वर के हाथ है। गुरुजी ने मुझे संगत आंटी को यह विवरण सुनाने को कहा। वह गुरुजी के चरण सेवा कर रही थी (गुरुजी के पाँवों की मालिश कर रही थी)। मैंने सारा वृत्तांत आंटी जी को सुनाया तो मुझे वास्तविकता का ज्ञान हुआ कि कितनी बार और कितने विभिन्न तरीकों से गुरुजी ने मुझे और मेरे परिवार को कल्याणकारी आशीर्वाद दे धन्य किया है। गुरुजी के शब्दों में कुछ भी अचानक या अकस्मात नहीं होता। शिष्य या भक्त के जीवन में जो कुछ भी घटित होता है वह गुरुजी की इच्छा और उनके महान निर्णय से ही होता है।

कुछ सप्ताह बाद गुरुजी ने मुझे बांधा अंकल के घर सत्संग पर आने के लिए कहा। चंडीगढ़ में अत्यावश्यक मीटिंग होने के कारण मैंने गुरुजी को सत्संग पर आने की असमर्थता बताई। परन्तु गुरुजी ने कहा कि चाहे कुछ भी हो सत्संग पर आना होगा। चंडीगढ़ से रात 9:30 बजे जालंधर पहुँचकर मैं सीधा बांधा अंकल के घर पहुँचा। गुरुजी हलवा प्रसाद बाँट रहे थे। उन्होंने थोड़ा सा मुझे भी दिया। उन्होंने मुझे लंगर प्रसाद खाने के लिए कहा जिसे मैंने सहर्ष खाया। हलवा प्रसाद और देते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने अक्षय को दीर्घायु का वरदान दिया है अन्यथा उस दिन के पश्चात अक्षय का जीवित रहना असंभव था। उन्होंने कहा कि केवल वे जानते हैं कि कब और कहाँ उनके भक्त को आशीर्वाद दिया जाए।

इसके पश्चात हम गुरुजी के साथ जालंधर मंदिर में आ गए। उन्होंने मुझे चाँदी पर ॐ लिखा हुआ लॉकेट अक्षय को पहनाने का निर्देश दिया। बिना कोई प्रश्न किए मैंने उनकी इस दैवीय आज्ञा का पालन किया।

गुरुजी के आशीर्वाद स्वरूप गाड़ी मिलना

गुरुजी का अपने भक्तों को आशीर्वाद देने का ढंग अद्‌भुत था। सन् 2001 की गर्मियों में अक्षय गाड़ी लेने की ज़िद्द करने लगा। साधारण नौकरी के कारण मैं अक्षय की इस इच्छा को टालने का प्रयत्न कर रहा था। डिंपल को 2 जुलाई 2001 को स्वप्न आया कि गुरुजी एक पुरानी एयर कंडिशन्ड गाड़ी चला रहे हैं। गाड़ी रंग-बिरंगे

फूलों से सजी हुई है। उस पर जालंधर की लाइसेंस प्लेट भी लगी हुई है। स्वप्न में ही गुरुजी ने वह गाड़ी हमें देकर हमें कृतार्थ किया। डिंपल के इस स्वप्न के कुछ दिनों बाद ही मुझे एक पुरानी गाड़ी अच्छे दामों में मिल गई। हमारे आश्चर्य की सीमा न थी क्योंकि यही गाड़ी डिंपल ने गुरुजी को स्वप्न में चलाते हुए देखा था

गुरुजी का आफिस में आगमन

गुरुजी बहुत कम अपने भक्तों के आफिस जाते थे। मैं भाग्यशाली था क्योंकि गुरुजी दो बार मेरे आफिस आए थे। जब वे पहली बार आए तब मैं कोर्ट में था। मेरे अधीनस्थ दो कर्मचारियों, गोल्डी व बावा ने उनका स्वागत ऐंव अभिवादन किया। गुरुजी ने मेरे कोर्ट जाने का कारण पूछा। उन्होंने बताया कि आफिस के काम के सिलसिले में मैं कोर्ट गया हूँ। जब मैं आफिस लौटा तो मुझे गुरुजी के आगमन के बारे में बताया गया। मुझे लगा कि वे मेरे साथ मज़ाक कर रहे हैं इसलिए मैंने चिढ़कर उन्हें डाँटा। उसी समय मैंने गुरुजी के ड्राइवर को आते हुए देखा। उसने कहा कि गुरुजी मुझे मंदिर बुला रहे हैं। मैं ड्राइवर के साथ मंदिर गया। गुरुजी ने कहा कि मेरी अनुपस्थिति में आफिस आकर उन्होंने आफिस को कृतार्थ किया है। इसके बाद गुरुजी एक बार फिर मुझे व मेरे आफिस को कल्याणकारी आशीर्वाद देने के लिए पधारे। कुछ दिनों बाद आफिस का स्थान बदल गया। मैंने इस बारे में गुरुजी को बताया। उन्होंने कहा कि उस भवन में बहुत अधिक नकारात्मकता थी। इस कारण उन्होंने मेरे आफिस का स्थान बदल दिया। एक बार फिर गुरुजी ने अपने अलौकिक प्रेम व आशीर्वाद से मेरी रक्षा की।

गुरुजी के चरणों में अमृत दर्शन

एक दिन मार्च के प्रथम सप्ताह में मैं जालंधर मंदिर में गुरुजी के पैरों की मालिश कर रहा था। तभी ड्राई क्लीनर उनके वस्त्र लेकर आया। गुरुजी ने असली ऊन की एक टी-शर्ट मुझे दिखाते हुए एक और वैसी ही खरीदने का निर्देश दिया। लुधियाना में जिस दुकान से टी-शर्ट खरीदी थी, उसका पता भी दिया। मैंने गुरुजी से इतनी गर्मी में गर्म टी-शर्ट न पहनने की प्रार्थना की। मैंने कहा कि उन्हें पित्त निकल आएगी। गुरुजी ने उत्तर दिया : "ऐन्रा टाइम हो गया, फेर वी तू गुरु नूँ नहीं समझा।" गुरुजी के कहने का तात्पर्य था कि इतने समय से उनका अनुयायी होकर भी मैं उन्हें और उनकी अलौकिकता को समझ नहीं सका। उन्होंने कहा कि ना वे गर्मी अनुभव करते हैं ना सर्दी। और उन्हें पसीना भी नहीं आता। मैं गुरुजी से क्षमा याचना करता रहा परन्तु वे लगातार यही दोहराते रहे कि इतने लम्बे समय से मैं उनके पास आ रहा हूँ परन्तु अभी भी मैं उनकी शक्तियों से अपरिचित हूँ।

गुरुजी ने मुझे, गोल्डी और बावा को नित्य 1:30 से 2:00 दोपहर को मंदिर आकर चाय प्रसाद ग्रहण करने की आज्ञा दी। एक दिन वहाँ जाने पर हमने देखा कि गुरुजी साधना में लीन हैं। उनका रसोइया छाबलिया उनके टाँगों की मालिश कर रहा है। छाबलिया को गुरुजी की मालिश सेवा करते हुए दो घंटे हो गए थे। उसने मुझे मालिश की सेवा लेने के लिए कहा। मैंने मना कर दिया क्योंकि गुरुजी द्वारा हमें निर्देश दिया गया था कि उनकी आज्ञा के बिना कोई सेवा नहीं ले सकता। गुरुजी की समाधि में विघ्न डालना भी उचित नहीं था। गुरुजी ने बताया था कि साधना करते समय उनसे प्रचुर मात्रा में शक्ति पुंज के रूप में आभा प्रस्फुटित होती है जिससे आई हुई संगत का कल्याण होता है। उस समय जो भक्त सेवा कर रहा होता है, उस सेवादार के गिर्द भी उस आभा का घेरा बन जाता है ताकि नकारात्मक शक्ति उसे हानि न पहुँचा सके। हमें लगा कि गुरुजी समाधि में हैं उन्हें पता नहीं चलेगा और मैंने और छाबलिया ने स्थान बदल लिए। जैसे ही मैंने गुरुजी के चरणों की मालिश सेवा आरम्भ की उन्होंने तुरंत आँखें खोलकर पूछा कि कौन है। मैंने उन्हें अपना नाम बताया। उन्होंने पूछा कि क्या मैंने चाय प्रसाद ग्रहण कर लिया है? मेरे हाँ कहने पर उन्होंने चरणों की मालिश सेवा की आज्ञा दी। उन्होंने अपने पैरों के तलवों में जलन की शिकायत की। उनके पैरों की मालिश करने के बाद उन्होंने पैरों की उँगलियों

मालिश करने के लिए कहा। मैं मालिश करने लगा। जब मैं अँगूठे की मालिश कर रहा था तो अमृत बहना शुरू हो गया। पहले उँगलियों से और फिर फव्वारे की भाँति पैरों से अमृत बहने लगा। गुरुजी की जुराबें व कालीन अमृत से सरोबार हो गए। सब ओर सुगन्ध फैल गई। यह सब एक अविश्वसनीय घटना थी। तब गुरुजी ने कहा, "देखा तेरा गुरु की है।" अर्थ यह कि वे कितने समर्थ व शक्तिशाली हैं। मैं यह समझ ही नहीं पाया। उन्होंने कहा कि उनके शरीर में लहू के स्थान पर अमृत है। उन्होंने बताया कि यदि वे मनुष्य रूप में न आते तो साधारण मनुष्यों को उनके दिव्य ऐंव अलौकिक रूप को आँखों से देखना संभव नहीं था। गुरुजी ने हमें भाग्यशाली बताया कि हमें उनकी सेवा करने का मौका मिला है। मनुष्य में गुरु सेवा करने के लिए अगाड़ ऐंव गुरु भक्ति, श्रद्धा व समर्पण की भावना होनी चाहिए। अपनी बात पर बल देते हुए गुरुजी ने कहा कि उनकी सेवा करने पर मनुष्य अपने कर्मों को शुद्ध कर लेता है। गुरुजी के दर्शन व उनकी सुगन्ध से उसका कल्याण हो जाता है क्योंकि वे स्वयं महाशिव हैं।

गुरुजी ने आशीर्वाद रूप में जूते व मोज़े दिए

एक दिन बावा और मैं बड़े मंदिर गए तो हमने एक भक्त को जूते और मोज़ों के बड़े पैकेट के साथ देखा। गुरुजी ने तीन जोड़े जूते व कुछ मोज़े मुझे दिए और दो जोड़ी जूते बावा को दिए। उन्होंने बताया कि ये जूते उन्होंने लगभग दस साल पहले पहने थे। और अचम्भे की बात यह थी कि उन जूतों से चारों ओर सुगन्ध फैल रही थी। घर जाकर मैंने उनके दिए जूतों को ध्यान से देखा। उन जूतों पर उनके दिव्य एंव पवित्र पैरों के निशान थे। हर-हर जोड़ा भिन्न 5-6-8 नंबर का था। ईश्वर होने के कारण ही गुरुजी जैसा चाहते अपने शरीर को घटा या बढ़ा लेते थे।

गुरुजी का चाय प्रसाद

एक बार गोल्डी, बावा और मैं गुरुजी के आशीर्वाद रूप में मिली उनकी सेवा कर रहे थे। गुरुजी ने चाय प्रसाद की आज्ञा की। मुझे बहुत गर्म चाय पीने की आदत थी और गुरुजी अपनी चाय बहुत धीरे-धीरे पीते थे। जब तक उन्होंने चाय के कुछ घूँट ही पिए, हमारी चाय आधे से ज़्यादा समाप्त हो गई थी। हमारे परोपकारी प्रभु गुरुजी ने अपनी चाय बराबर भाग में बाँटकर हमें चखने के लिए दी। उस चाय को हमने चखा और उसकी महक व सुगन्ध के प्रति आकृष्ट हो गए।

एक दिन गुरुजी की सेवा करते समय मैं बहुत भावुक हो उठा और गुरु से कहा कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि आपकी सेवा करने योग्य हूँ। उत्तर देते हुए गुरुजी ने कहा सत्कर्म गहरे कुएँ के समान होते हैं। आवश्यकता आने पर मित्र व सम्बन्धी भी सहायता करने नहीं आते। केवल गुरु ही उस समय अपने भक्त की रक्षा कर सकता है। उन्होंने मुझे गुरुजी पर पूर्ण विश्वास करने का निर्देश दिया। आपदा की घड़ी में गुरु के अलावा कोई सहायक नहीं होता है।

गुरुजी के साथ खरीदारी

एक दिन छाबलिया के साथ गुरुजी जालंधर के एक मॉल में गए। मैं भी गोल्डी और बावा के साथ वहाँ था। मुझे लगा कि गुरुजी को बताए बिना खरीदारी के लिए कारण वे मुझे डाँटेंगे। बावा उनका अभिवादन करने गया। बावा को देखते ही गुरुजी उससे मेरे बारे में पूछने लगे। गुरुजी सुबह से ही मेरे बारे में सोच रहे थे। फिर हम साथ ही पुरुष के परिधान की दुकान में गए। गुरुजी ने दुकानदार से रियायत देने के बारे में पूछा। हमारे बआर-बार कहने पर भी दुकानदार ने कम दाम में देने से इंकार कर दिया। लगभग 150 पैंट देखने के बाद गुरुजी ने दुकानदार से कहा कि उन्हें 40 इंच कमर व 42 इंच लम्बाई की पैंट पहननी है। दुकानदार असमंजस

में पड़ गया क्योंकि गुरुजी की कमर देखने में बहुत छोटी लगती थी। फिर गुरुजी ने दो टी-शर्ट भी पसंद कीं। मैं दुकानदार को पैसे दे रहा था परन्तु गुरुजी ने मुझे देने नहीं दिए। उन्होंने दस हज़ार रुपये निकालकर दुकानदार को दिए। बकाया रुपये फिर अपनी जेब में रख लिए। हम इस घटना का महत्त्व समझ नहीं पाए। परन्तु गुरुजी की अनुकम्पा भी बहुत रहस्यमय ढंग से प्राप्त होती है। और उस दिन किसी न किसी भाँति उस दुकानदार और हम तीनों मित्रों का कल्याण अवश्य ही हुआ होगा।

गुरुजी द्वारा मेरे श्वसुर को आशीर्वाद

मेरे श्वसुर गुरुजी के बाल्य सखा थे। किन्तु उन्हें गुरुजी दिव्य शक्तियों तथा अलौकिकता पर विश्वास नहीं था। वे दोनों बहुधा साथ ही अध्ययन किया करते थे। एक दिन गुरुजी जालंधर मंदिर में थे।उन्होंने कहा कि फोन करके हैडमास्टर को मिलने के लिए बुलाओ। मैंने गुरुजी को स्मरण कराया कि मेरे श्वसुर अध्यापक हैं, प्रिंसिपल नहीं। परन्तु गुरुजी गुरुजी उन्हें हैडमास्टर ही बुलाते रहे। गुरुजी की कृपा से मेरे श्वसुर को सेवा निवृत्त होने के दो महीने पहले प्रिंसिपल की पदवी मिल गई। गुरुजी बड़े स्पष्ट रूप से हमारा भाग्य देख लेते थे और देख रहे हैं। वे हमारे भविष्य में होने वाली घटनाओं की ओर इंगित भी करते थे। यह तो हमारी अबोधता थी जो हम उनकी अलौकिकता को समझ नहीं पाए।

गुरूजी के आशीर्वाद से सीईओ पद की प्राप्ति

गुरूजी के अपने भक्तों को आशीर्वाद देने के ढंग निराले होते थे। उच्च पद प्राप्त होने पर मुझे एक बार गुड़गांव पार्क प्लाजा में एक मीटिंग के लिए जाना पड़ा। यहां CEO और उच्च क्षमता वालों को पुरस्कार दिए जाते थे। श्रेष्ठ CEO के लिए मेरे नाम की घोषणा कर मुझे स्टेज पर आने के लिए कहा गया। मै एक दम हैरान रह। मैंने कभी सपने में भी सपने में भी इतने प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त करने के बारे में सोचा ना था। पुरस्कार समारोह के पश्चात गुरूजी का धन्यवाद करने के लिए मै सीधा एम्पायर एस्टेट पहुंचा। मुझे देखते ही गुरूजी ने प्रसन्नता से कहा - "देख्या गुरूजी दी ब्लेसिंग नु " , इसका अर्थ यह था कि मैंने इस पुरस्कार को गुरुजी के आशीर्वाद के रूप में माना या नहीं। गुरुजी ने यह भी कहा कि भविष्य में मेरे और मेरे परिवार के लिए ऐसे और भी बहुत आशीर्वाद हैं। उन्हें अपने भक्तों के बारे में सब कुछ ज्ञात है और उचित समय पर वो इनाम भी देते हैं।

गुरूजी द्वारा हमारी अहमदाबाद की यात्रा सरल व छोटी रखी गई।

पदोन्नति के कारण मुझे अहमदाबाद जाना पड़ा। मेरे उच्च अफसर ने मुझे गुरुजी के जन्मदिन के उत्सव के पश्चात् अहमेदाबाद आने की अनुमति दे दी। कुछ समय बाद मेरे एक मित्र परमिंदर की बदली अहमदाबाद में हो गई। वह भी गुरूजी का भक्त था। गुरुजी के साथ दीवाली मनाने हम दोनों दिल्ली आए। हमें दिवाली के अगले दिन ही वापस लौटना था। गुरुजी ने पुछा कि हमें अहमदाबाद जाने में कितना वक्त लगेगा। यह अनुमान लगाते हुए कि दिल्ली व अहमदाबाद की दूरी लगभग १५०० किमी है; हमने गुरूजी को बताया कि यात्रा में दो दिन लग जाएंगे। गुरूजी को यह भी बताया कि वापिस लौटते हुए एक रात जयपुर में रुकना

पड़ेगा। गुरूजी कहने लगे यात्रा में केवल एक दिन का ही समय लगेगा। मैंने पुनः कहा कि दो दिन का समय लगेगा। गुरूजी ने मुझे झिड़कते हुए कहा की भक्त या शिष्य को हमेशा गुरु कि बात माननी चाहिए।

परमिंदर व मैंने अहमदाबाद की यात्रा आरम्भ की। आधी रात के लगभग हम जयपुर पहुँचे । हम दोनों में से किसी को नींद नहीं आ रही थी। तो यह तय किया कि बारी बारी से गाड़ी चलाते हुए यात्रा को चालू रखें। मैंने गुरुजी से सूर्योदय से पूर्व जयपुर पहुँचने की प्रार्थना की। सुबह ६:०० बजे से थोड़ा पहले ही हम उदयपुर पहुँच गए। हमें विश्वास नहीं हो पा रहा था कि ५५० मील की यात्रा हमने साढ़े पांच घंटों में पूरी कर ली है। अंततः अहमदाबाद जा कर ही हमें कुछ आराम मिला। मुझे अगले दिन ऑफिस में गुरुजी का फ़ोन आता है और उनहोंने पुछा कि हम कितने समय में अहमदाबाद पहुंचे। जब मैंने यात्रा के समय की गणना की तो मैं हैरान रह गया कि हमने २१ घंटे में ही यात्रा पूर्ण कर ली थी। मैंने गुरूजी को अपना उत्तर बताया। गुरूजी ने कहा कि उन्होंने मेरी यात्रा निर्विघ्न और कम रखी थी। निःसंदेह गुरुजी हमारे जीवन के हर पक्ष का ध्यान रखते हैं। चाहे वह घटना छोटी सी हो या कोई बड़ी समस्या हो। जब तक उनके भक्तों का उन पर अटूट व अगाध विश्वास होता है वे अपने भक्तों को अपने आशीर्वाद से परिपूर्ण रखते हैं।

गुरूजी का हवाई जहाज में यात्रियों को आशीर्वाद

सन २००६ में मेरी नियुक्ति अहमदाबाद में हो गई थी। तब मैं महीने में कम से कम एक बार गुरुजी से मिलने दिल्ली अवश्य जाता था। इसी एक यात्रा के दौरान मुझे एक शबद (भजन) की CD गुरुजी को अंपायर एस्टेट में देनी थी।मैंने गुरुजी को कहा कि सोमवार को मुझे भोपाल भी जाना है तो मैं अंपायर एस्टेट CD देते हुए चला जाऊंगा। गुरुजी ने इंकार करते हुए कहा कि एम्पायर एस्टेट सोमवार ,मंगलवार एवं बुधवार को भक्तों के लिए बंद रहता है। परन्तु उन्होंने मुझे व्यक्तिगत रूप से आर व लंगर प्रसाद ग्रहण करने के लिए कहा। गुरुजी के दर्शन प्राप्त होंगे यह सोच कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। दोपहर को एम्पायर एस्टेट पहुँचने पर एक सेवादार ने चाय प्रसाद एवं मीठा प्रसाद दिया। गुरुजी के दर्शन न मिलने के कारण बड़े खिन्न मन से मै हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गया। हवाई जहाज में तकनीकी खराबी होने के कारण उड़ान से पहले ही यात्रियों को जहाज से उतरना पड़ा। हमें दूसरे हवाई जहाज की प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया।सभी यात्री रात्रि भोजन के लिए इधर उधर चले गए। रात्रि भोजन समाप्त करते समय गुरुजी ने मेरे बारे में पूछा कि मै कहाँ हूँ। मैंने उन्हें हवाई जहाज में आई तकनीकी खराबी और इस कारण यात्रा में देरी होने के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि उनके आशीर्वाद स्वरूप ही हवाई जहाज के सभी यात्रियों के प्राण बचे हैं। यदि हवाई जहाज निर्धारित समय पर उड़ान लेता तो अवश्य ही दुर्घटना होनी थी। उन्होंने कहा कि अपने एक भक्त की रक्षा के लिए उन्होंने सभी यात्रियों के प्राण रक्षा का वरद आशीर्वाद दिया। अपने भक्तों के लिए गुरुजी की कृपा इस प्रकार की थी।

गुरुजी ने मुझे कहा था -"मैं कुछ भी और सब कुछ कर सकता जून। किसी भक्त के बुरे कर्मों को ९०% कम करने की क्षमता इनमें है। शेष १० % भक्त को स्वयं भुगतने पड़ते हैं। मैं ईश्वर हूँ। मैं महा शिव हूँ।" उन्होंने मुझे आनंदमय जीवन जीने के लिए कहा,और यह भी कहा की रात्रि १० बजे हवाई यात्रा शुरू होगी। जो होना था वह वैसा ही हुआ। मै आधी रात के बाद भोपाल पहुंचा।

अगले दिन फ़ोन करके गुरुजी ने यात्रा के बारे में मुझसे पूछा। अपने प्राणों की हेतु मैंने गुरुजी को सादर धन्यवाद दिया। उन्होंने मुझे सचेत करते हुए कहा कि मै उनके प्रति निष्ठा व विश्वास के साथ समर्पित रहूँ।

हमारे गुरुजी: समष्टि में व्यष्टि व व्यष्टि में समष्टि

गुरुजी अपने भक्तों को बिना किसी को मध्यस्थ बनाए उन से सीधा सम्बन्ध बनाने के लिए कहते थे। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए यहाँ वहाँ भटकने की आवश्यकता नहीं है। गुरुजी का निर्देश था कि उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात भक्त सीधा अपने घर जाये।

मेरी चिरकाल से कामना थी कि मै उस पवित्र स्थान वृन्दावन की यात्रा करूँ जहां कि कृष्ण ने अपना बाल्य काल बिताया था। एक बार हमें बैसाखी पर गुरुजी ने पावन दर्शनों के उपरांत अगले दिन वृन्दावन जाने का कार्यक्रम बनाया। परन्तु रात में डिंपल की तबियत ख़राब होने के कारण हम जा नहीं सके। यह गुरुजी का हमें याद करने का ढंग था। वे स्वयं परमेश्वर हैं। यदि हमें उन पर विश्वास और निष्ठा है तो किसी अन्य स्थान पर जाने की आवश्यकता नहीं है। वे समग्र में एक हैं और एक में समग्र हैं।

हमने फिर अगले महीने वृन्दावन जाने का निश्चय किया। हमने तय किया कि संध्या समय गुरूजी के दर्शन के उपरांत अगली प्रातः वृन्दावन के लिए रवाना हो जायेंगे। तदन्तर इतवार की संध्या समय तक फिर गुरुजी के पास पहुँच जायेंगे। और दर्शन कर लुधियाना लौट आएंगे। शनिवार की प्रातः डिंपल ने स्वप्न देखा कि वह और मै एम्पायर स्टेट में गुरुजी के पास हैं। गुरुजी डिंपल से पूछते हैं कि क्या उसने गुरुजी के चरणों की मालिश सेवा की है। डिंपल के, ना कहने, पर गुरुजी ने उसे पैरों पर मालिश करने की आज्ञा दी। उनकी आज्ञा अनुसार जैसे ही डिंपल ने चरणों की मालिश सेवा आरम्भ की तभी न जाने कहाँ से श्री कृष्ण जी की काले संगमरमर में बानी दो फ़ीट की मूर्ति वहाँ आ गई। डिंपल ने कुछ कहने के लिए जैसे ही मुँह खोला ,गुरुजी ने उसे मना कर दिया और देखता रहने के लिए कहा। गुरुजी ने डिंपल से उस मूर्ति को उनके चरण कमलों में रखने के लिए कहा। डिंपल ने जैसे ही मूर्ति उनके चरण कमलों में राखी वह मूर्ति उनके चरण कमलों में समा गई। गुरूजी ने डिंपल से उन्हें रसोई घर के पास ले जाने को कहा। एक ओर से गौरव और दूसरी और से डिंपल गुरुजी को पकड़ कर रसोई गृह के पास ले गए। एकाएक ही गुरुजी का कमरा राधा कृष्ण के मंदिर में परिवर्तित हो गया। तथा राधा कृष्ण अपने सुन्दर नेत्र झपकाते हुए वहाँ विराजमान थे। सारा वातावरण फूलों से सुसज्जित व सुशोभित था। आश्चर्यचकित डिंपल ने गुरुजी से कहा कि राधा कृष्ण नेत्र झपक रहे हैं और उनके नेत्र हिल रहे हैं।गुरुजी ने कहा कि यदि वह लगातार देखती रहेंगी तो राधा कृष्ण उसके साथ चलने लगेंगे। इसी लम्बे व विचित्र स्वप्न में गुरुजी डिंपल से कहते हैं कि वृन्दावन जाने की चिंता मत करो। सभी अन्य देवी देवता प्रभु के अधीन हैं। इस ब्रह्माण्ड में वे उच्चतम देवत्व व प्रभुत्व की शक्ति हैं। वे सर्वोपरि हैं।डिंपल ने अपना स्वपन मुझे सुनाया। तब हमारी समझ में आया कि गुरुजी ने स्वप्न में दर्शन दे कर बड़े प्यार से हमारे सारे भ्रम दूर कर दिए हैं। वे सर्वत्र विद्यमान हैं , सर्वशक्तिमान हैं और सर्व ज्ञाता हैं।

गुरुजी द्वारा सांगत में अपने वस्त्र वितरण

सन २००७ में शिवरात्रि के पश्चात गुरुजी ने फ़ोन कर मुझे व डिंपल को जालंधर मंदिर जाने को कहा। उन्होंने कुछ सेवादारों और कुछ संगत परिवार को बुलाने का निर्देश भी मुझे दिया।उनका आदेश था की उनकी कमीजें, पैंटें, तौलिए व चोला बुलाई हुई संगत में बाँट दूँ। उनकी अलमारी खोलने पर डिंपल को एक अत्यंत सुंदर सफेद रंग का चोला दिखाई दिया। इसे गुरुजी ने २००२ में जालंधर से दिल्ली जाते समय पहना था। डिंपल ने इस चोले को प्राप्त करने की इच्छा बताई। मैंने उसे याद दिलाया कि हम सब कुछ बाँटने के लिए आए हैं। अपने पास कुछ रखने के लिए नहीं आये हैं। उसी समय गुरुजी का फ़ोन आता है और वे कहते हैं कि सफेद चोला डिंपल को दे दो। यद्यपि वे उस समय एम्पायर स्टेट में थे। फिर भी वे देख सकते थे कि जालंधर मंदिर में क्या हो रहा है। केवल ईश्वर के पास ही ऐसी शक्तियां होती हैं। उनके अनुसार वह चोला मैंने

डिंपल को दे दिया। हमने उनके सारे कपडे संगत में बाँट दिए। गुरुजी की आज्ञा से हरे रंग का कोट अक्षय के लिए तथा परिवार के लिए उनका बिस्तर।, रजाई कम्बल ले लिया।

गुरुजी के वस्त्रों के वितरण के पश्चात साड़ी सांगत से मैंने चाय प्रसाद ग्रहण करने की प्रार्थना की। जिस समय हम चाय प्रसाद पी रहे थे उसी समय गुरुजी ने मुझे फ़ोन किया पर कहा कि उनके पलंग के नीचे डिब्बे में कुछ वस्तुएं हैं जो बाँटी नहीं गयी हैं। मैंने डिब्बा खोल कर देखा तो उसमें प्लास्टिक के थैले में दो शर्ट व दो पेंट राखी हुई थीं। गुरुजी ने मुझे स्वयं के लिए कुछ रखने के लिए नहीं कहा था , इसलिए मैंने अपने लिए कोई वस्त्र नहीं रखा था। गुरुजी ने अपने आशीर्वाद रूप में एक ही शर्ट और एक पेंट मुझे अपने पास रखने के लिए निर्देश दिया। अतीव आनंद और प्रसन्नता से मैंने उनके कहे अनुसार वही किया।

गुरुजी बहुत दयालु व हमारे रक्षक हैं। हमारे मन में क्या है उन्हें सब ज्ञात होता है। समय आने पर हमारे लिए जो उत्तम हो उसी का वरदान वे देते हैं।

गुरूजी कर्ता हैं व हमें कर्म के लिए प्रेरित करते हैं

गुरूजी अक्सर फ़ोन पर मुझे बातें किया करते थे। २००६ में मै अपने जन्मदिन पर सारा दिन उनके फ़ोन की प्रतीक्षा करता रहा। अंततः संध्या समय उनका फ़ोन आया। मेरी आंखें अश्रुपूरित हो गईं। मैंने कहा कि गुरुजी की अलौकिक वाणी सुन कर मेरा जन्म धन्य हो गया है। मैंने उन्हें कहा की मुझे ऐसा लगा था कि गुरुजी मेरा जन्मदिन विस्तृत कर चुके हैं। मुझे आशीर्वाद देते हुए उन्होंने कहा कि गुरु को सब ज्ञात होता है। उन्होंने पूछा कि मेरे श्वसुर ने फ़ोन किया था। मैंने बताया कि उनका फ़ोन अभी तक नहीं आया है। उन्होंने फिर पूछा मेरे कि मेरे निकट ज्यादा कौन है - "मेरे गुरू अथवा मेरे ससुराल वाले। " गुरुजी ने मेरे श्वसुर को फ़ोन कर पूछा कि उन्होने मेरे जन्मदिन कि शुभकामनायें देने के लिए अब तक फ़ोन क्यों नहीं किया ?डिंपल को हृदय की तकलीफ होने के कारण मेरे श्वसुर उस समय उसके पास थे। सांत्वना देते हुए गुरुजी ने डिंपल के और टेस्ट करवाने के लिए कहा। साथ ही यह भी कहा कि डिंपल शीघ्र ठीक हो जाएगी। फिर डिंपल को शुभ आशीर्वाद देने की बात भी बताई।

सन २००६ के नव वर्ष की पूर्व संध्या के उत्सव के बाद हमने गुरुजी से जाने की अनुमति मांगी। उन्होंने डिंपल से वजन घटाने के लिए कहा। मुझे व मेरे श्वसुर को यह आदेश दिया कि डिंपल को इस बारे में याद कराते रहे। अगले दिन गुरुजी से मिलने हम एम्पायर स्टेट गए। उन्होंने फिर से डिंपल को वजन कम करने के लिए कहा। उन्होंने कहा यदि डिंपल वजन कम नहीं करेगी तो स्वास्थ्य में और समस्याएं भी हो जाएँगी। मैंने गुरुजी से प्रार्थना करते हुए कहा कि वे ही कुछ कर सकते हैं। गुरुजी ने कहा कि वे सहायता कर सकते हैं परन्तु डिंपल को स्वयं भी प्रयत्न करना होगा वरना वह वजन कम नहीं कर पाएगी। गुरुजी ने डिंपल से माह में १० पौंड वजन कम करने के लिए कहा। उन्होंने कुछ दिन केवल सूप व सलाद खाने के लिए कहा और फिर अंगूर खाने का निर्देश दिया। हमने अगले महीने गुरुजी के पास जाने का विचार बनाया तो गुरुजी ने हमें पंद्रह दिन और रुकने के लिए कहा क्योंकि तब तक डिंपल का वजन दस पौंड तक कम नहीं हुआ था। अगले दिन जब डिंपल ने वजन तोला तो पहले से पूरा दस पौंड वजन कम था। गुरुजी कर्ता हैं। परंतु गुरुजी चाहते हैं कि हमें अपने कर्तव्य करते रहना चाहिए और अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए।

शिव मूर्ति से अमृत धारा

एक बार नव वर्ष की पूर्व संध्या को बड़ा मंदिर बंद था। गुरुजी ने मुख्य हॉल में प्रतिदिन शिवजी की तांबे की प्रतिमा को साफ़ करने का निर्देश दिया। अन्य भक्तों के साथ में मूर्ति को चमकाने का कार्य समाप्त ही

करने वाला था कि शिव प्रतिमा के चरणों से अमृतधारा बहने लगी। यह बहुत आश्चर्यजनक दृश्य था। हमें अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं हो रहा था। हम साफ़ करते रहे परन्तु गुरुजी की अदभुत दैव्य शक्ति के प्रताप से अमृत धारा बहती जा रही थी। यह प्रताप अपनी संगत को निरंतर दिए असंख्य आशीर्वादों का उदाहरण था। उनकी अद्‌भुत शक्ति के दर्शन भी थे।

गुरुजी के आशीर्वाद युक्त पवित्र स्नान

गुरुजी की दैवीय प्रतिभा बहुत प्रखर है। उनके कृपा युक्त आशीर्वाद भी प्रचुर हैं। एक रात स्वप्न में मेरी पत्नी को गुरुजी बड़े मंदिर में अपने आसन पर बैठे दिखाई दिए। उनके लंबे घुंघराले बालों की लटें पीछे तक जा रही थीं। अचानक शिवलिंग से एक हाथ निकला और उसने गुरुजी को बालों से खींच कर ऊपर उठा दिया। गुरुजी ने इशारे से डिंपल को बुलाया। जब डिंपल आदर से उनके समक्ष शीश झुकाने लगी तब उन्होंने अपने सिर से पवित्र गंगा प्रवाहित कर डिंपल को उसमें स्नान करने को कहा। अपने स्वप्न में ही डिंपल ने मुझे भी बुलाने के लिए गुरुजी से प्रार्थना की। परन्तु गुरुजी ने कहा कि यह पावन स्नान केवल उसके लिए ही है।

गुरुजी की कड़ी

अहमदाबाद में रहते हुए एक दिन मुझे कड़ी खाने की बहुत इच्छा हुई। अपनी पत्नी को फ़ोन कर मैंने कड़ी बनाने की विधि जान कर कड़ी बनाना आरम्भ किया। तीन या चार घंटे में रात के दस बजे तक कड़ी बन गयी। गुरुजी को भोग लगाने के लिए मैंने कड़ी चावल प्लेट में डाले। तभी गुरुजी पूछते हैं कि मैंने लंगर प्रसाद ग्रहण कर लिया है कि नहीं। अभी मै कुछ उत्तर दे पता उससे पहले ही उन्होंने कहा कि मेरी बनाई कड़ी व चावल को आशीष दे दी है। उस समय वे दिल्ली में थे और मैं अहमदाबाद में था। ईश्वर के अतिरिक्त और कौन हर व्यक्ति की हर क्रियाकलाप को दयालुता पूर्वक देख सकता है?

गुरुजी का लंगर प्रसाद का आशीर्वाद

एक बार मेरी संगत बहन रीटा नारंग व उनके पति अजय रात्रिभोज के लिए लुधियाना हमारे घर आए। गुरुजी का सत्संग करने के पश्चात हमने भोजन किया। डिंपल ने मेवा व किशमिश डाल कर सेवईयाँ बनाई थीं। गुरुजी को भोग लगाने के बाद उसने हम सब को दी। रीटा ने पहले तो सेवईं प्रसाद ग्रहण नहीं किया। यहाँ भी गुरुजी की दिव्या शक्ति काम कर रही थी। रात ग्यारह बजे गुरुजीने अजय को फ़ोन कर पूछा कि वो कहाँ है ? अजय ने बताया कि वह अपनी पत्नी के साथ लुधियाना में हमारे घर पर है। गुरुजी कहते हैं कि मैंने पहले ही फ़ोन करके गुरुजी को सत्संग के विषय में बता दिया था। अजय ने कहा कि यहाँ तो केवल दो परिवार हैं। गुरुजी ने कहा कि भक्तों की संख्या पर सत्संग का मापदण्ड निर्भर नहीं करता।गुरुजी ने कहा कि जब संगत उनके साथ बैठ कर शब्द सुनती है, गुरुजी के अलौकिक अनुभव सुनती या सुनाती है तथा दोपहर या रात्रि के भोजन का भोग प्रथम गुरूजी को लगाकर फिर खाती तो यही सत्संग है। उनके आशीर्वाद से युक्त भोजन ही लंगर प्रसाद है। अजय के यह सब बताने पर एकदम ध्यान सेवई की कटोरी पर गया जिसे खाने से रीटा ने मना किया था। तदन्तर उसने ख़ुशी के साथ सेवई प्रसाद खाया।

अगली सुबह गुरुजी ने याद दिलाने के लिए फ़ोन किया कि जब भी भक्त जन उनकी महिमा का गुणगान करते हैं और उनके आलौकिक अनुभवों को आनंद से सुनते हैं वही सत्संग है। उस समय श्रद्धालुओं को परोसा जाने वाला भोजन ही मेरा आशीर्वाद युक्त लंगर प्रसाद है।

लॉकेट में ॐ व नाग दर्शन

हम मनुष्यों के गणनात्मक मस्तिष्क का गुरुजी की अलौकिक शक्ति को समझ पाना सरल नहीं है। एक रात मैंने स्वप्न में गुरुजी को हमारे घर सोफे पर बैठे हुए देखा।उन्होंने मुझे बुलाकर अपने पास बिठाया। उनकी आज्ञा से मैं उनके चरणों की मालिश करने लगा। उन्होंने कहा , "कल्याण किता " इसका अर्थ था उन्होंने मेरे भले का आशीर्वाद दिया है। मैंने उनकी और देखा तो उन्होंने तीन बार मेरे कान खींचे और अपनी उँगलियों से मेरा माथा छुआ। प्रातः उठने पर मैंने डिंपल व अक्षय को अपना सपना सुनाया। हम सबने यही माना कि गुरुजी ने इस प्रकार मुझे आशीर्वाद दिया है।

मुझे आशीर्वाद रूप में गुरुजी ने एक लॉकेट दिया था। काफी समय से पहनने के कारण उसमें खरोंचें आ गई थीं। जब मैं डिंपल को दिखा रहा था तो हमने उस पर ॐ लिखा देखा। कुछ दिनों पश्चात उस लॉकेट में नाग का चित्र बनने लगा। जब दिवाली पर गुरुजी से मिलने गए तो मैंने गुरुजी को अपनालॉकेट दिखाया। उन्होंने कहा कि केवल ईश्वर ही लॉकेट पर ॐ व सर्प बना सकते हैं। ईश्वर के अतिरिक्त लॉकेट में चित्र को बदलना किसी और के लिए संभव नहीं है। मैं समझ गया कि यह गुरुजी का ही प्रताप है।

गुरुजी का डॉक्टर अंकल को आशीर्वाद

गुरुजी के जन्मदिन के उत्सव की तैयारियों के कुछ दिन पहले गुरुजी ने मुझे डूगरी जा कर उनके रोगी पिता को एक अच्छे डॉक्टर के पास ले जाने की आज्ञा दी। मलेरकोटला के प्रख्यात डा. गुविंद्र सिंह सिविल अस्पताल में काम करते थे। उन्होंने कुछ टेस्ट करवाने के लिए कहा और देकर अगले दिन फिर आने के लिए कहा। गुरुजी के पिताजी का स्वास्थ्य सुधरने लग गया था। आरम्भ में तो गुरुजी ने जन्मदिन के उत्सव में आने के लिए मुझे मन कर दिया था। वे चाहते थे कि मैं उनके पिताजी की बीमारी में सेवा करूं। उनके पिताजी ठीक होने लग गए थे। ६ जुलाई की रात को गुरुजी ने मुझे जन्मदिन समारोह में सम्मिलित होने की स्वीकृति दे दी। मैं यह जानकर प्रसन्नता से धन्य हो गया।

जब मैंने डा. गुरविंद्र सिंह को गुरुजी के दैवीय अनुभव सुनाए तो उन्होंने कहा कि यह अप्राकृतिक अवधारणा विज्ञान के समक्ष कुछ नहीं है। उनके ऐसे विचार जान कर भी मैं गुरुजी की महिमा का वर्णन करता गया। कुछ दिनों पश्चात गुरुजी ने मुझे फ़ोन पर डा. गुरविंद्र सिंह को साथ लाने के लिए कहा। डा. गुरविंद्र सिंह ने बहुत व्यस्त होने का कारण देते हुए मना कर दिया। एक दिन गुरुजी का पता पूछने के लिए उनका फ़ोन मुझे आया। उन्होंने कहा कि वे दिल्ली में किसी सम्मेलन पर आए हुए हैं और गुरुजी से मिलने की कोशिश करेंगे। मेरा विश्वास है कि यह गुरुजी का अलौकिक प्रताप ही था कि डा. गुरविंद्र सिंह का सम्मेलन जल्द समाप्त हो गया। उन्हें दो दिन गुरुजी के साथ बिताने का सुअवसर प्राप्त हुआ। गुरुजी ने नई डॉक्टरों को और गणमान्य व्यक्तियों को अपना सत्संग सुनाने के लिए बुलाया था ताकि डा. गुरविंद्र सिंह सुन सकें। सत्संग सुनने के पश्चात डा. गुरविंद्र सिंह अपने शहर चले गए। गुरुजी ने मुझे फ़ोन पर डॉक्टर की कुशलक्षेम जानने को कहा। डॉक्टर ने बताया कि गुरुजी ने अपना वरद आशीर्वाद उसकी पुत्री को दिया है।मैंने गुरुजी से पूछा तो उन्होंने बताया कि डॉक्टर की बेटी के मानसिक रोग को उन्होंने ठीक कर दिया है। प्रसन्नता से ओतप्रोत और

आश्चर्यचकित डॉक्टर ने बताया कि उसकी पुत्री बिलकुल ठीक हो गयी है। महान सर्वशक्तिमान गुरुजी के शुभाशीर्वाद ने डॉक्टर की पुती को ठीक कर दिया।

गुरुजी सर्व ज्ञाता हैं

सन २००२ में मेरी नियुक्ति लुधियाना ऑफिस में थी। मुझे दफ्तर के काम से अमृतसर भी जाना पड़ता था। गुरुजी की आज्ञा थी कि मैं जब भी जालंधर आऊं तो जालंधर मंदिर में आशीर्वाद प्राप्त करने जरूर जाऊं। एक दिन काम करते करते मुझे काफी देर हो गई। मैंने सोचा इस समय जालंधर मंदिर जाना कठिन होगा।

कुछ ही क्षणों में गुरुजी का फ़ोन यह पूछने के लिए आ गया कि मैं उस दिन मंदिर गया कि नहीं ? मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने दोबारा अपना प्रश्न पूछा। मैंने बताया कि मैं नहीं जा सका। गुरुजी ने मुझे वहां जाने और चाय प्रसाद ग्रहण करने के लिए कहा। और मुझे यह भी कहा कि वहाँ बैठी हुई संगत को मैं सत्संग भी सुनाऊँ।

जैसे ही मैं जालंधर मंदिर पहुंचा , पड़ोस में रहने वाले एक अंकल ने अपनी पत्नी को सत्संग सुनाने की मुझ से प्रार्थना की। उनकी पत्नी को गुरुजी की दिव्य आध्यात्मिकता के विषय में अभी भी शंका थी।हमें पता भी नहीं चला कि इसमें इतना समय बीत गया और मैं एक के बाद एक सतसंग सुनाता चला गया। दस बजे के लगभग मुझे विचित्र सा अनुभव हुआ कि मेरे हाथ और पांव बहुत ठंडे हो गए हैं। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरा ब्लड प्रेशर बहुत नीचे गिर गया है। उस समय सुदामा (गुरुजी का भक्त व जालंधर मंदिर की देखभाल करने वाला)को ऐसा लगा कि गुरुजी मंदिर में अपने कमरे में जा रहे हैं।

जब मैं मंदिर से रवाना हुआ तो गुरुजी ने फ़ोन पर सरे सत्संग दोहराए जिनका मैंने आंटीजी से मंदिर में वर्णन किया था। सुदामा जी ने गुरुजी के दर्शन किये थे वे बिलकुल सत्य व सही थे। मैं एकदम स्तब्ध रह गया। गुरुजी की महिमा बहुत अद्‍भुत है।

सन्यासी को ज्ञान प्राप्ति

गुरुजी बहुत कम सत्संग सुनाया करते थे और जब वे सुनाते थे तो वो सत्संग बहुत ही भिन्न और उच्च स्तर के होते थे।एक बार उनसे मिलने आये एक सन्यासी का सत्संग गुरुजी ने सुनाया ।गुरुजी ने एक सेवादार से सन्यासी के लिए चाय प्रसाद लाने के लिए कहा परंतु सन्यासी ने चाय पीने से मना कर दिया उसने गुरुजी से असभ्यता पूर्वक बातें की ।उसने गुरुजी पर दोष लगाया कि इतनी कम आयु होने पर भी आप अपने आप को ईश्वर क्यों कहते हो? भक्तों की मन की इच्छा पूरी हो जाती है इस कारन उनके स्वयं के कहने से पूर्व भक्तगण ही उन्हें ईश्वर कहने लग गये हैं ।उन्होनें फिर से सन्यासी से चाय प्रसाद गृहण करने के लिये कहा सन्यासी ने दूसरी बार भी चाय प्रसाद ग्रहण करने से मना कर दिया।सन्यासी ने गुरुजी से उसकी आयु का अनुमान लगाने के लिए कहा उसने अपनी आयु तीन सौ तीस साल बताई ।उसने गुरुजी से उसके लिए सचखंड से दूध मंगाने का आह्वान किया।कृपालु गुरुजी ने सनयासी से कहा कि इतनी आयु प्राप्त करके भी वो सांसारिकता में लिप्त हैं।गुरुजी ने सन्यासी से कहा कि अगर उसने मोक्ष मांगा होता तो ईश्वर होने के नाते वो उसे मोक्ष प्रदान कर सकते थे।तब गुरुजी ने अपनी दिव्य शक्ति से चांदी के बर्तन और चौदह तरह के स्वाद वाले दूध प्रस्तुत कर दिए।तब सन्यासी समझ गया कि गुरुजी पूर्ण परमात्मा हैं। वे सर्वशक्तिशाली और सर्वोच्च हैं।सन्यासी ने नतमस्तक होकर गुरुजी से क्षमा याचना की।।गुरुजी ने बताया कि आयु देवत्व और ईश्वरत्व को निर्धारित नहीं करती अपितु कर्म करते है।उन्होनें सन्यासी को समझाया कि वे अपनी इच्छानुसार कोई भी आकार ले सकते हैं। उन्होनें सन्यासी को शिक्षा देते हुए कहा मनुष्य को शरीर से नहीं आत्मा से स्नेह करना चाहिये ।

मांगो नहीं माना करो

गुरुजी अपने भक्तों को सदैव स्मरण कराते रहते थे कि भक्तों को सांसारिक वस्तुओं को मंगाने की अपेक्षा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिये।वे बहुधा कहा करते थे"मांगो मत,माना करो।"वे कहते थे वस्तुएँ मांगने या कामना पूर्ण होने की प्रार्थना करने से भक्तगण उनकी शक्ति और अलौकिकता को कम समझ पाते हैं।

एक बार दीवाली थी ।एम्पायर स्टेट में गुरुजी रसोईघर के बाहर एक कुर्सी पर बैठे हुए थे।मैं उनकी चरण-सेवा (पैरों की मालिश) कर रहा था तब गुरुजी ने पूछा कि क्यों मनुष्यों को उनसे कुछ मांगना नहीं चाहिये।मैं ने उत्तर दिया कि मनुष्यों को कुछ मांगने की आवश्यकता ही नहीं है। गुरुजी हमारा मन पढ़ सकते हैं इसलिए वे बिना मांगे ही हमारी इच्छाएँ पूर्ण कर सकते हैं ।तब गुरुजी ने कहा कि जब हम मनुष्य उनसे कुछ मांगते हैं तो चाहे उसके भाग्य में हो न हो तब भी उन्हें वो इच्छाएँ पूरी करनी पड़ती हैं परंतु वह कुछ समय के लिये ही प्रसन्नता दे सकती हैं।इसके विपरित जब गुरुजी स्वत: ही आशीर्वाद देते हैं तब केवल इस जन्म में ही नहीं अपितु अगले जन्मों में भी हमें आनन्द प्राप्त होता रहता है ।उन्होंने मलेर कोटला के एक कॉलेज का सत्संग सुनाया ।उन दिनों गुरुजी वहाँ B.A. कर रहे थे वे अपने प्राध्यापक के घर रहते थे उन्होंने वहाँ कई चमत्कार दिखाये और लोगों को धन्य किया।वार्षिक परीक्षा होने से पहले उन्होंने आने वाले प्रश्नों के बारे में प्राध्यापक को बताया ।उन्होंने यह भी बताया कि उन्हें पता है परीक्षा में उन्हें कितने अंक मिलेंगे ।वे एक दुसरे को गुरु कह कर पुकारते थे।प्राध्यापक के एक पुत्री थी उनकी पत्नी एक पुत्र भी चाहती थी। उस ने गुरुजी से कई बार उनको पुत्र रत्न प्राप्त करने का आशीर्वाद देने को कहा । गुरुजी ने उनसे कहा कि वे भी उस के पुत्र सदृश ही हैं परंतु वे लगातार अपनी जिद पर अड़ी रही ।गुरुजी ने प्राध्यापक से कहा कि उनके भाग्य में पुत्र नहीं है फिर भी उनकी पत्नी की जिद के कारण उनको पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया है।परंतु उनके पुत्र की आयु मात्र ग्यारह वर्ष ही होगी ।अपने ग्यारहवें जन्मदिन पर वह ये संसार छोड़ जायेगा ।गुरुजी ने प्राध्यापक को ये तक बता दिया कि जिस समय उस की मृत्यु होगी उस समय कौनसा शबद चल रहा होगा गुरुजी ने प्राध्यापक ये सब बातें पूर्ण रूप से गुप्त रखने को कहा और कहा कि ये बात अपनी पत्नी को भी न बताए ।।

गुरू जी की भविष्यवाणी अनुसार प्राध्यापक पुत्र की ग्यारहवें जन्मदिवस पर मृत्यु हो गई ।गुरूजी द्वारा कही गई कोई भी बात प्राध्यापक ने अपनी पत्नी को नहीं बताई थी।।सन 2002में गुरुजी ने प्राध्यापक को कहा कि वह अपनी पत्नी को बताये कि क्यों किसी को गुरुजी से कुछ मांगना नहीं चाहिये ।वर्षों पहले हुए अपने पति और गुरुजी के वार्तालाप के बारे में सुन कर वह गुरुजी के चरणों में गिर गयी और उनसे क्षमा याचना करने लगी।गुरुजी ने कहा कि वे बहुत प्रसन्न हैं कि प्राध्यापक ने अपने वचन का पालन कियाऔर जब तक आज्ञा नहीं मिली इस बात को किसी को नहीं बताया ।

यह सभी तथ्य बताते हैं कि गुरुजी जानते हैं कि हमारे लिये क्या सही है।हमारे प्रति उनके स्नेह पर हमें पूर्ण विश्वास होना चाहिये ।सब कुछ उँ के हाथों में सौंप कर संपूर्ण समर्पण करना चाहिये ।अपनी कामनाएँ पूर्ण करने की अभिलाषा त्याग कर ,जो कुछ उन्होंने हमें दिया है,उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये ।मात्र प्राणी होने के नाते हम नहीं जान पाते कि हमारे लिये अच्छा क्या है गुरुजी हमारे ईश्वर हैं ,वे सर्वज्ञ हैं। उनकी कृपा एवं सर्वोच अनुकम्पा का आनन्द लेना चाहिये ।

दिव्य शक्ति से जुड़ने के नव चरण

गुरुजी सदा हमारी भलाई सोचते हैं ।गुरुजी का उपदेश था यदि हम मनुष्य दिव्य बनना चाहते हैं और अंत में दिव्यता ही प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उस सीढ़ी पर नौ पग रखने चाहिये जो हमें हमारे गुरु या भगवान से मिलन करवाए ।गुरुजी कहते थे कि वे अपने भक्त को सीढ़ी के आठवे चरण तक बड़ी सुगमता से चढ़ा सकते

हैं उस पड़ाव पर पहुंच कर शिष्य को बहुत महत्व और यश मिलने के साथ साथ सेवा करने के भी बहुत अवसर प्राप्त होते हैं।बहुधा इस पड़ाव पर भक्त में अहंकार भी जन्म ले लेता है और वह स्वयं को गुरुजी के बहुत निकट समझने लगता है बहुत से शिष्य या भक्त या भी समझने लगते हैं कि उँ में दिव्य शक्ति आ गयी है और वे गुरुजी के इतने करीब आ गये है कि कि गुरुजी केवल इन्हीं की बात सुनेंगे ।वास्तव मे कई बार ये स्वयं को गुरुजी सद्दश प्रभुत्वशाली एवं स्वामित्वशाली समझने लग जाते हैं।उस समय गुरुजी शिष्य को नवें चरण पर ले जाते हैं परंतु पहले के चढ़े हुए आठ कदम वे ले लेते हैं फलस्वरुप शिष्य बिना किऐ सहारे के हवा मे हवा में लटकते रह जाते हैं मार्ग से नीचे गिरने पर उन्हें अपनी मूर्खता का भान होता है गुरुजी के शब्दों में भक्ति का नौवाँ चरण "अहम "है इस चरण को पार करने के लिए अत्यंत विनम्र होना आवश्यक है ।हमारे जाने बिना ही हमारे गुरुजी हमारे साथ हैं और अहम के नौवें चरण को लाँघ कर हमें भक्ति की उच्चता की ओर ले जाते हैं ।

जब गुरुजी भक्ति के नव चरणों का वर्णन कर रहे थे। तो मैने गुरुजी से कहा हम तो उँ के चरण कमलौँ की धूल के बराबर भी नहीं हैं गुरुजी ने उत्तर दिया कि सबसे प्यारा और दुलारा शिष्य वही है जो आध्यात्मिक रूप से गुरुजी के साथ जुड़ा रहे ।यदि गुरुजी फिर मानव अवतार में इस पृथ्वी पर आते हैं तो भक्त और शिष्य भी उनके साथ ही आयेंगे ।उन्होँने मुझे कहा कि मेरी गणना अभी उन प्यारे भक्तों में नहीं हुई है।

मैने गुरुजी से प्रार्थना की कि वे मुझे अपनी प्रिय संगत में ले लें।उन्होने कहा कि उस अवस्था तक पहुंचना भक्त के लिये इतना आसान नहीं है।अत्यंत विनीत एवं विनम्र भव से उस अवस्था में पहुंच कर और कुछ न चाह कर केवल उन की सेवा ही माँगे ।भक्ति की यह कठिन परीक्षा कई बार कर्मठ और सच्चे भक्त भी नहीं कर पाते हैं।शिष्य को हमेशा विनम्र भाव से गुरु की सेवा करनी चाहिये ।गुरुजी ने कहा कि जिस प्रकार रस को आखिरी बूंद तक निचोड़ कर निकाला जाता है उसी प्रकार गुरुजी अपने भक्तों की परीक्षा लेते हैं।गुरुजी का शिष्यत्व ग्रहण करना इतना आसान नहीं है ।गुरुजी द्वारा दी गई सभी परीक्षाओं में शिष्य का सफल होना आवश्यक है परीक्षा की कठिन घड़ी में शिष्य के सगे सम्बन्धी भी शिष्य का साथ छोड़ देते हैं । भक्त भक्ति के इस मार्ग में संपूर्ण निष्ठा और सत्य के साथ अकेला ही चलता है ।गुरु पर संपूर्ण विश्वास एवं गुरु की सुरक्षा भक्त को निराश नहीं होने देती ।अन्ततः यह विश्वास और निष्ठा गुरु का ह्रदय जीतती है और भक्त को सदा सदा के लिये परम पिता प्राप्त होते हैं।

गुरुजी का सचखंड प्रसाद

गुरुजी का सचखंड प्रसाद (आशीर्वाद से सुकृत मिठाई जो गुरुजी गुप्त रूप से बनाते थे) कुछ भक्तों को ही देते थे ।हम सब भी चाहते थे कि हमें भी वह प्रसाद मिले।एक बार हम जालंधर मंदिर में थे तब गुरुजी ने दस मिनट के थोड़े समय में दो भक्तों को यह मोहन प्रसाद दोय।उन भक्तों को यह प्रसाद पहले भी मिल चुका था ।मैं सोचने लगा मुझे इस तरह का आशीर्वाद भरा प्रसाद क्यों नहीं मिला है गुरुजी ने मेरे मन के विचार पढ लिये।कुछ दिन बाद में गुरुजी की सेवा कर रहा था तब गुरुजी ने कहा कि दैवीय प्रसाद पूर्वजन्म के अच्छे कर्मों के कारण मिलता है और जिस के लिये बनाया है उसी को वे देते हैं।केवल वे ही जानते हैं कि कब और कैसे यह देना हैं ।

एक दिन एक संगत को ।SBT बस अड्डे कश्मीरी गेट नई दिल्ली उतारने का आदेश गुरुजी ने मुझे दिया ।यह दम्पति गुरु जी के पैरों के जोड़े बनाने की सुसेवा करता था ।गुरुजी ने इस दम्पति को अपने पहनी हुई जूती का जोड़ा भी दिया था । दम्पति ने वह जूती का जोड़ा मुझे दिखाया तो उस समय भी उँ मे से सुगंध फैल रही थी ।मैने आदर पूर्वक उस जूती के जोड़े को अपने मस्तक से लगाया मैने जूती के जोड़े के नीचे सफेद पॉवडर सा लगा देखा ।मुझे पता नहीं चला कि वो क्या था परंतु मैने उसे चखा ।।यह जानने पर कि यही

सचखंड प्रसाद है मेरे उमंग और आनन्द की सीमा न रही ।प्रसाद इतना सुगंधित था कि चखने के बाद भी उस सुगंध को अपने भीतर तक महसूस कर रहा था ।अन्ततः गुरुजी ने इतने प्यारे तरीके से मुझे सचखंड प्रसाद देकर धन्य कर दिया ।मैं सदा के लिये कृतज्ञ और अनुगृहित हूँ ।केवल वे ही जानते हैं कि अपने भक्त को कब और कैसे अनुगृहित करना है वे अपने विशेष अंदाज से हमको आशीर्वाद देते हैं।

महाशिवरात्री पर गुरुजी का आशीर्वाद

सन 2002 में हम सब जालंधर मंदिर में शिवरात्रि मनाने की तैयारियां कर रहे थे। गुरुजी ने सबके लिये अलग अलग-अलग कार्य निश्चित किए थे।कुछ भक्त मंदिर सजा रहे थे ।उस समय गुरुजी,सुधा आंटी,कंवर आंटी और अंकल के साथ बैठे पकौड़े खा रहे थे।अन्य भक्तों के साथ मैने भी उपवास रखा हुआ था। गुरुजी ने कहा कि उन्हें समझ नहीं आता कि शिवरात्रि पर लोग उपवास क्यों रखते हैं जबकि शिवरात्रि तो भगवान शिव और देवी पार्वती के शुभ विवाह का उत्सव मनाने का दिन है ।उसी समय एक भक्त डुगरी से 50लीटर लस्सी लेकर आया। मुझे गुरुजी ने बर्फ के तीन बड़े लौंदे लाने का आदेश दिया।उसके पश्चात उन्होने कहा कि बर्फ और पानी मिला कर प्रसाद रूप में लस्सी बाँट दो उन्होने यह बात किसी को ना बताने का मुझे निर्देश दिया

उसी दिन गुरुजी ने मुझे अपने 500 पावन स्वरूप देकर कहा कि हर भक्त को दो दो स्वरुप उनके आशीर्वाद के रूप में बाँट दूँ । उस दिन जालंधर मंदिर में लगभग 500 भक्त थे।मुझे आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि गुरुजी की आज्ञानुसार सारी संगत को दो दो स्वरुप बाँटने के बाद मेरे पास 15 स्वरुप बच गये ।केवल ईश्वर ही ऐसा कर सकते हैं।गुरुजी तो ईश्वर हैं उन्होने अपने स्वरुपों की संख्या कैसे बढा दी।ये रहस्य मैं आज तक समझ नहीं पाया और कभी समझ भी नहीं पाऊँगा। ईश्वर के अपने रहस्यमय साधन होते हैं । हम जैसे अज्ञानी और साधारण मनुष्य समझ नहीं सकते ।

उसी दिन गुरुजी अपने हाथों से बेर प्रसाद बाँट रहे थे बाँटने के समय 8 टोकरी बेर में से केवल एक टोकरी बची थी ।लगभग एक चौथाई संगत प्रसाद पाने की प्रतीक्षा कर रही थी।एक अंकल गुरुजी के समीप खड़े थे मैने उनको प्रार्थना की कि यह बात गुरुजी को बता दे।गुरुजी ने हमें चिंता न करने के लिये कहा।और उसी बची हुई टोकरी में से संगत को प्रसाद देते रहे ।अंत में मुट्ठी भर बेर मुझे और अंकल को भी दिए ।मुझे प्रसाद अपनी जेब मे रखते देख कर गुरुजी ने समझाया कि आशीर्वाद रूप में दिए गये प्रसाद को जेब में न रखकर उसी समय आदर और प्यार के साथ खाना चाहिये ।

हमें उसी रात्रि वापस लुधियाना जाना था गुरुजी ने गोल्डी और बाबा को सड़क पर खड़ी उन की कार देख के आने के लिये कहा । दोनों गये और लौटकर गुरुजी को बताया की गाड़ी भलीभांति सड़क पर खड़ी है।गुरुजी ने फिर से उन्हें गाड़ी देखने के लिये भेजा ।इस बार वे कुछ बेर लेकर वापस आये गुरुजी ने कहा आशीर्वाद युक्त ये बेर उन दोनों के लिये हैं।गुरुजी ने गाड़ी पर रखे बेर देखने के लिये ही उन्हें भेजा था।गुरुजी के आशीर्वाद युक्त बेर उन दोनो ने भी खाए ।

लुधियाना के भक्त परिवार को गुरुजी का आशीर्वाद

सन 2002में एक शिष्य ने गुरुजी से प्रार्थना की कि वे लुधियाना आकर सत्संग करें। सत्संग की व्यवस्था बहुत ही भव्यशाली थी परंतु जब गुरुजी लड्डू प्रसाद बाँट रहे थे तो लड्डू कम पड़ गए ।मेजबान लज्जित होकर और लड्डू मँगाने लगा परंतु गुरुजी ने उसे कहा 5बड़े डिब्बे लड्डुओं के उनके आसन के नीचे रखे हैं ।ये डिब्बे वहाँ चमत्कारिक रूप से रखे गये होंगे ।

मेजबान अंकल के पौत्र और पौत्री गुरुजी के निकट आने से बहुत डर रहे थे ।गुरुजी के वहाँ से जाने के बाद बच्चों ने इसका कारण बताया कि गुरुजी के गले में जीवित सर्प देख कर वे बहुत भयभीत हो गये थे।हम समझ गये कि गुरुजी ने अपनी असीम कृपा एवं आशीर्वाद रूप से अलौकिक भगवान शिव के रूप में उन बच्चों को दर्शन दिए हैं ।।

बिरला आंटी को मुक्ति प्रदान

जिन दिनों में अहमदाबाद में था बिरला आंटी नामक शिष्या का देहांत हो गया।अगले दिन गुरुजी ने मुझे फ़ोन करके उन की मृत्यु के बारे में बताया । मुझे पता लग चुका था परंतु मैने कुछ कहा नहीं गुरुजी ने कहा कि बिरला आंटी को मोक्ष प्राप्त हुआ है जो हर किसी को प्राप्त होना दुर्लभ है ।

बिरला आंटी ने बहुत सौभाग्यशाली रूप से इस जगत से प्रस्थान किया था सोमवार की संध्या को वो गुरुजी के दर्शन के लिये एम्पायर स्टेट गथी गुरुजी अपने पलंग पर बैठे हुए थे और आंटी उनके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई ।गुरुजी ने आंटी से कहा कि वह फ़ोन करके अपने सब संबंधियों से बात कर ले।आंटी ने ऐसा ही किया चाय प्रसाद ग्रहण करने के बाद जैसे ही आंटी जाने की आज्ञा लेने गुरुजी के चरणों में झुकी,उन्होने अन्तिम सांस ली।गुरुजी के चरणों में प्राण त्यागना अपने आप मे एक बहुत बड़ा वरदान है।

गुरुजी कहते थे उन्के भक्त व शिष्य अपनी कामनाएँ पूर्ण करने की प्रार्थन लेकर प्रतिदिन उन के पास आते हैं परंतु गुरुजी के स्वास्थ्य की चिंता किसी को भी नहीं होती है ।बिरला आंटी ने गुरुजी के लिये ही विशेष रूप से फ़ार्म हाउस खरीदा था जहाँ वे केवल गुरुजी के लिये ही ओर्गनिक (जैविक) सब्जियाँ उगाती थी।वे सप्ताह में दो या तीन बार इन सब्जियों की दो टोकरियाँ गुरुजी के लिये भिजवाती थी।वह गुरुजी के लिये ऑर्गेनिक फल भी आयातित करवाती थी।अक्सर गुरुजी कहा करते थे वे आंटी के मांगने पर उनकी समस्त पारिवारिक समस्याओं को समाप्त करने का आशीर्वाद दे सकते थे परंतु आंटी केवल वही चाहती थी कि उनकी अन्तिम स्वांस गुरुजी के आशीर्वाद के साथ उनके चरणों में निकले ।

तर्क विस्मृत कर ,स्नेह का स्मरण रखो

हम एक बार गुरुजी के पास बैठे हुए थे तो उन्होने बताया कि उन के जन्म के समय समस्त देवी और देवता स्तुति गान करते हुए आये।गुरुजी ने कहा कि जब वे मनुष्य रूप में धरती पर अवतार लेंगे तब समस्त मनुष्यों का कल्याण करेंगे।किन्तु उन के समस्त शिष्यों मे से 5 प्रतिशत ही मोक्ष पाने के लिये पूर्ण रूप से अधिकारी होंगे क्योंकी अन्य मनुष्य उनकी अलौकिकता के किन्तु परंतु के तर्क में ही फंसे रहेंगे।केवल पांच प्रतिशत जो उनके ईश्वरीय रूप को जानते और समझते हैं केवल वही मोक्ष प्राप्त कर पायेंगे ।

इसलिए मेरी गुरुभक्तों से प्रार्थना है कि वे गुरुजी से सांसारिक लाभ न मांग कर उनसे मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करे।पूर्ण रूप से उनके प्रति समर्पित हो जाये।"किन्तु परन्तु" के भ्रम में न उलझ कर गुरुजी के दिव्य अलौकिक प्रकाश में अपनी आत्मा को प्रफुल्लित करें।

चमत्कारिक रूप से सचखंड प्रसाद का प्रकट होना

मेरे हृदय में यह जानने की उत्कट लालसा रहती थी कि गुरुजी किस भांति चमत्कारिक रूप से सचखंड प्रसाद प्रकट कर देते हैं।

रात के लगभग एक बजे गुरुजी ने एक छोटा सा सत्संग एक अन्य भक्त को सुनाने के लिये मुझे कहा।मेरे सुनाने ले पश्चात उन्होने जोशी अंकल को उसी भक्त के लिये एक छोटा सा सत्संग सुनाने का निर्देश दिया।जोशी अंकल के सत्संग आरम्भ करते ही गुरुजी दीवार के साथ खड़े हो गये।उनके चेहरे का रंग बदल गया था।मैने बड़ी हैरानी से पीले रंग की चमकती हुई किरण बड़ी तीव्र गति से गुरुजी की ओर आते देखी।ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होने बड़े अद्भुत ढंग से उस प्रकाश को आत्मसात् कर लिया है और तत्क्षण वह आभा प्रसाद रूप मे परिवर्तित हो गई है गुरुजी ने जोशी अंकल को हाथ जोड़ने की आज्ञा दी।उन्होने अपने हाथ भी जोड़ लिये।कुछ मिनटों में जोशी अंकल के जुड़े हुए हाथ स्वत: ही खुल गये।हमने एक बड़ा लड्डू उनके हाथों में देखा।हमने अंकल से पूछा कि गुरुजी ने उन्हें क्या दिया है।उन्होने कहा की गुरुजी ने उन्हे तरल पदार्थ के रूप में एक छोटा सा बीज दिया है ।इस प्रकार गुरुजी ने मेरी यह इच्छा पूर्ण कर दी कि वे किस तरह चमत्कारिक रूप से सचखंड प्रसाद ले आते हैं

गुरुजी के द्वारा अक्षय के जन्मदिन पर आशीर्वाद

गुरुजी का अपने भक्तों के प्रति निस्वार्थ स्नेह कई विशेष रूपों में लक्षित होता है ।गुरुजी ने दो या तीन बार स्वयं अक्षय का जन्मदिन मनाया

सन 2006में 10 नवम्बर को अक्षय के जन्मदिन के अगले दिन हम गुरुजी से मिलने एम्पायर स्टेट गये।गुरुजी अपने आसन पर बैठे चाय पी रहे थे।गुरुजी की आज्ञानुसार वहाँ आये भक्तों को मैं सत्संग सुनाने लगा।उसी समय गुरुजी ने सुधा आंटी से अक्षय को दूसरी मंजिल से बुलाने के लिये कहा।अक्षय के आने पर गुरुजी ने उसे अपने आशीर्वाद युक्त दो टुकड़े बर्फी के उसके हाथ पर रखे।गुरुजी ने अक्षय को जन्मदिन की शुभकामनायें दी।किसी भी भक्त के लिये जन्मदिन पर गुरुजी द्वारा शुभकामना और आशीर्वाद से बढ़ कर और कोई भेंट नहीं हो सकती।

गुरुजी सर्व ज्ञाता हैं

हमारे कुछ कहने या बताने से पहले ही गुरुजी हमारे मन की बात जान जाते है कि हमारे मन में क्या है जालंधर मंदिर में भगवान शिव का बहुत ही सुन्दर चित्र लगा हुआ था।मुझे वह चित्र बहुत पसंद था।कै दुकानों पर खोजने पर भी मुझे वैसा चित्र नहीं मिला था।एक रात्रि जालंधर मंदिर में सेवा के पश्चात हम लुधियाना के लिये रवाना हुए गुरुजी ने फ़ोन कर के मुझे कहा कि अगली सुबह आकर भगवान शिव का चित्र ले जाऊँ ।उन्होने परिहास करते हुए यह भी कहा कि सुबह 9:30 बजे तक ही चित्र की रक्षा करेंगे।यदि किसी अन्य भक्त ने ले लिया तो वे कुछ नहीं कर पायेंगे।अगली सुबह मैं जालंधर भागा ।गुरुजी द्वारा आशीर्वाद और भेंट स्वरूप शिव जी का चित्र पाकर मेरी प्रसन्नता का कोई ओर छोर न था।

गुरुजी दर्शन एवं आशीर्वाद

मेरे अहमदाबाद प्रवास के दौरान गुरुजी मे जालंधर मंदिर के कालीन बदलवाए।उन्होने मुझे आज्ञा दी कि मै जालंधर आकर भक्तों मे पुराने कालीन बंटवा दूँ ।गुरुजी मुझे जल्द से जल्द आने के लिये फ़ोन पे फ़ोन किए जा रहे थे।मेरे लिये तुरंत जालंधर आना आसान नहीं था। जब मैं ने उनसे वापस लौटने की आज्ञा माँगी तब उन्होने पूछा कि मैं फिर कब आऊँगा ।मैंने उन्हें बताया कि मई 2007के मध्य दिल्ली में एक मीटिंग है तब उनके आशीर्वाद एवं दर्शन हेतू आऊँगा परंतु मीटिंग स्थगित होने के कारण मैं उनसे मिलने न जा

सका।गुरुजी ने मुझे फ़ोन कोया और कहा "आज गुरु तुझे बुला रहा है और तेरे पास टाईम नहीं है ।कल तेरे पास टाईम होगा पर मैं पता नहीं कहाँ होऊँगा।"उनके कहने का भावार्थ था कि अभी तो वे स्वयं मुझे बुला रहे हैं परंतु मेरे पास समय नहीं है ।अगली बार यदि मेरे पास गुरुजी को मिलने का समय होगा तो वे शायद कहों और होंगे।मैं ने प्रश्न किया कि वे ऐसा क्यों कह रहे हैं गुरु जी ने उत्तर दिया कि वे किसी अन्य देश या वन में जा सकते हैं ।उन्होने मुझे चेतावनी देते हुए कहा कि जिस तरह हम रेत को मुट्ठी में पकड़ना चाहते हैं परंतु वह फिसल जाती है उसी प्रकार वे भी इस संसार से अदृश्य होकर किसी को दिखाई नहीं देंगे ।
16मई 2007से मेरा स्वास्थ्य खराब होने लगा ।मुझे केवल दो या तीन घन्टे ही नीन्द आती थी।मुझे बेचैनी और घबराहट सी रहने लगी।यह सब मेरी भविष्य में होने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी चेतावनी थी।गुरुजी के दर्शन के लिये 27मई को मैं दिल्ली गया ।गुरुजी ने पूछा कि काम में इतना व्यस्त होने पर भी मैं उनसे मिलने दिल्ली कैसे आ गया।मैं ने अपनी सारी परेशानी उन्हें बताई ।गुरुजी ने कहा कि ये अच्छा हुआ कि मैं उनका आशीर्वाद प्राप्त करने आया हूँ ।उन्के ऐसा कहने का तात्पर्य मैं समझ नहीं पाया ।लंगर प्रसाद ग्रहण करने के बाद मैंने उनसे जाने की आज्ञा माँगी उन्होने मुझे प्रतीक्षा करने के लिये कहा गुरुजी अपना लंगर ग्रहण करने के बाद आये। ।अपने आसन पर बैठ कर उन्होने कई सत्संग सुनाए।उन्होने कहा दिल्ली श्रापित है इसलिये कोई बजी महापुरुष यहाँ अधिक समय तक नहीं रह सकता।उन्होने श्रवण कुमार की कथा सुनाई।श्रवण कुमार अपने नेत्रहीन माता-पिता को पालकी में बिठा कर तीर्थयात्रा करा रहा था।दिल्ली पहुँचने पर उस ने यह कहा कि उसे कोई लाभ नहीं हो रहा है और पालकी भूमि पर रख दी ।उसकी माता ने पालकी दिल्ली से बाहर ले जाने की उस से प्रार्थना की ।दिल्ली से बाहर आने पर उसे अपनी भूल का अनुभव हुआ दिल्ली में लालच,लोभ,ईर्ष्या क्रोध और खून खराबे की पराकाष्ठा है ।प्राचीन काल में ऋषि मुनियों ने दिल्ली को श्राप दिया था कि कोई भी महापुरुष दिल्ली में ज्यादा देर तक नहीं रह पायेगा।गुरुजी द्वारा नश्वर शरीर त्यागने पर ही लोगों को ज्ञात होगा कि भगवान शिव उनका भला करने आये थे परंतु लोग अपनी मूर्खता एवं संकीर्णता के कारण उनको पहचान नहीं पाये।लोग उनसे केवल सांसारिक इच्छाओं को पूर्ति की प्रार्थना करते थे ।
कुछ दिनों पश्चात ही गुरुजी महा समाधि में लीन हो गये।तब मुझे पता चला कि गुरुजी मुझे बार बार आशीर्वाद के लिये क्यों बुला रहे थे ।

अपने अहंकार को नष्ट करो

गुरुजी के अत्यंत समीप होने के कारण कई भक्तों के हृदय में अहंकार पनपने लगता था ।उन्हें प्रतीत होता था कि वे गुरुजी और उनके दिखाये मार्ग को बहुत अच्छी तरह से जानते है।इस झूठे अहंकार को गुरुजी पल भर मे ही नष्ट कर सकते हैं एक रात एक भक्त आंटी गुरुजी से मिलने आई।गुरुजी ने अपने आसन के पास वाली कुर्सी पर उन्हें बिठाया ।गुरुजी ने मुझे सत्संग सुनाने के लिये कहा मैं ने गुरुजी की आज्ञा का पालन किया।मैं ने आंटी को बताया कि गुरुजी ने कभी मेरा नाम नहीं पूछा ।कभी ये भी नहीं पूछा कि मैं कहाँ से आया हूँ परंतु मुझे क्या चाहिये इस बारे में उन्हें सब विदित होता है ।शायद मुझे अभिमान हो रहा था आंटी ने बताया कि वह लगभग दो साल बाद गुरुजी के दर्शन के लिये आई है।गुरुजी को सब याद था और उन्होने उसे आशीर्वाद दिया।उस समय मुझे उपदेश देते हुए गुरुजी ने कहा किआशीर्वाद देने का सम्बंध इस बात से नहीं है कि कौन कितनी देर के पश्चात आया है अपितु आशीर्वाद का सम्बंध व्यक्ति के कर्मों और उसकी त्याग और तपस्या पर निर्भर करता है ।मेरे पास बैठी आंटी पर उनकी बहुत कृपा है ।उसके पति अपने काम के प्रति बहुत ईमानदार IAS अधिकारी हैं।गुरुजी ने बताया कि वे उन अंकल के साथ साइकिल की सवारी करते हैं।वे बहुत विनम्र और ईमानदार व्यक्ति हैं।
स्वयं को गुरुजी के इतना घनिष्ठ समझने के कारण ये सब बातें सुनकर मैं लज्जित हो गया।मुझे ज्ञात हो गया कि गुरुजी की दृष्टि में सब भक्त एक समान हैं।

गुरुजी सर्वज्ञ हैं

गुरुजी सर्वज्ञ हैं।वे हमारे मन व विचारों को पढ सकते हैं।अहमदाबाद में अपनी नियुक्ति के समय मैं अपनी पुरानी गाड़ी के बदले में नई स्विफ्ट कार लेना चाहता था परंतु गुरुजी की आज्ञा पाने की शक्ति नहीं संजो पाता था।एक दिन उन्होने फ़ोन कर के पुरानी स्विफ्ट कार बेच कर नई स्विफ्ट कार लेने के लिये कहा।सारे कार्यकाल में उन्हें ज्ञात था कि मेरे दिमाग में क्या चल रहा है।उपयुक्त समय आने पर उन्होने स्वयं ही इसकी आज्ञा दी।

गुरुजी की आज्ञा सर्वोपरि है

गुरुजी के आशीर्वाद से सन 2006 के आरम्भ मे ही मेरी नियुक्ति तीन साल के लिये अहमदाबाद में हो गई थी परंतु कुछ माह बाद ही गुरुजी ने मुझे दिल्ली बदली कराने के लिये कहा।मैं ने उन्हें अपने तीन साल के अनुबंध के बारे में बताया।उस पर गुरुजी ने मुझे दिल्ली में कोई अन्य नौकरी देखने के लिये कहा।मैं ने अपने एक पूर्व उच्च अधिकारी को फोन किया। वे एक प्रसिद्ध वाणिज्य कम्पनी में मैनेजिंग डायरेक्टर थे।उन्होने अच्छे वेतन के साथ मुझे दिल्ली में नौकरी दे दी।गुरुजी को फ़ोन कर मैंने सब बातें उन्हे विस्तार से बताई।पहले तो वे चुप रहे परंतु बाद में उन्होने मुझे वह पद लेने से इन्कार करने के लिये कहा।मैं विचलित सा हो उठा और एक बार फिर गुरुजी से पूछा परंतु उन्होने कोई उत्तर नहीं दिया।कुछ दिनों बाद मैं गुरुजी के पावन दर्शनों के लिये गया और बिना कुछ बोले नियुक्ति पत्र उनके चरणों में रख दिया।उनके पूछने पर मैं ने सब कुछ बताया।गुरुजी ने नियुक्ति स्वीकार ना करने के लिये फिर से मुझे सचेत किया।उन्होने मुझे सांत्वना देते हुए कहा कि मैं जिस कंपनी में काम कर रहा हूँ वहाँ वे वेतन बढ़वा देंगे।मैं गुरुजी की असीम अनुकम्पा का धन्यवाद किए बिना न रह सका।यद्यपि नये पद को छोड़ना कठिन लग रहा था परंतु मैं ने गुरुजी की आज्ञा का पालन किया और इस बात की मुझे प्रसन्नता हुई।

मांगो मत माना करो

गुरुजी का कहना था गुरुओं से गुरु मांगना चाहिये। न माँ,न पिता,न पत्नी,न बच्चे, न रिश्तेदार काम आते हैं ।वक्त आने पर केवल एक गुरु ही तुम्हारे साथ खड़ा होगा।वक्त आने पर सब छोड़ जाते हैं परंतु गुरु तुम्हारी बाँह कभी नहीं छोड़ता ।लोग केवल सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये ही उनके पास आते हैं कोई भी अच्छी वस्तु लेने नहीं आतापूर्ण गुरु का प्राप्त होना भी आसान नहीं है ऐसे मनुष्य विरले होते हैं जो गुरु से गुरु को ही मांगते हैं। जब आप गुरु से गुरु को मांगते हो तभी तुम्हारी परीक्षा शुरु हो जाती है ।मैं तुम्हे नींबू की तरह निचोड देता हूँ और भली-भाँति तुम्हरी परीक्षा लेता हूँ ।फिर मैं अपनी पक्की संगत मे आने की आज्ञा देता हूँ ।जब भी गुरुजी से कुछ मांगना हो तो केवल उन्हें ही मांगे । माँ-बाप,पति-पत्नी बच्चे या नातेदार कोई भी सदा के लिये तुम्हारे साथ नहीं होगा।केवल गुरु ही है जिन पर पूर्ण विश्वास किया जा सकता है क्योकि केवल गुरु ही हैं जो कभी दगा नहीं देते और न ही कभी अकेला छोड़ते है।लोग मेरे पास सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये आते हैं।कोई भी अलौकिक आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने नहों आता।दिव्य गुरु को प्राप्त करना इतना सरल नहीं है ।केवल कुछ ही हैं जो इस दिव्य आत्मिक ज्ञान के सत्य को जानना चाहते हैं ।जब कोई भक्त दिव्य अलौकिक ज्ञान प्राप्ति के लिये गुरु को अपना सर्वस्व मान कर उनकी छत्र छाया में आना चाहता है तब गुरु उसके प्रेम और निष्ठा की कड़ी परीक्षा लेते हैं।नींबू की भांति निचोड़ कर शिष्य की कठिन परीक्षा होती है जब शिष्य इस परीक्षा में खरा उतरता है तभी उसे सदा के लिय अपना भक्त बना लेता हूँ ।

गुरुजी के कथनानुसार “न हम जन्म लेते हैं न हमारी मृत्यु होती है ।हम अपनी इच्छा से आते हैं और अपनी इच्छा से जाते हैं।”इया शब्दों का भावार्थ ये था कि महापुरुष न जन्म लेते हैं न उनकी मृत्यु होती है ।वे अपनी इच्छा से ही इस संसार में आते हैं और अपनी इच्छा से ही ये मानवीय शरीर त्यागते हैं।

गुप्त पाठ, गुप्त दान और गुप्त सेवा

गुरुजी सदैव तीन सिद्धांतो को महत्व देते थे ।वे कहते थे अलौकिकता के मार्ग पर चलने के लिये इनका पालन करना चाहिये ।गुरुजी के अनुसार एक उत्तम मनुष्य और उनका सच्चा शिष्य बनने के लिये गुप्त पाठ,गुप्त दान और गुप्त सेवा करनी चाहिये।

1 गुप्त पाठ:-गुरुजी हमेशा याद दिलाते थे कि भक्त को इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये कि साथ बैठे व्यक्ति को भो पता न चले कि वह प्रार्थना कर रहा है ।उनके अनुसार दिखावे के लिये की गयी प्रार्थना और अपनी और ध्यान आकर्षित करने के लिये की गयी प्रार्थना से किसी का उत्ना कल्याण नहीं होगा जित्ना विनम्रता और श्रद्धा से की गयी प्रार्थना से होगा।उन्होने उपदेश देते हुए कहा कि गृहणी प्रार्थना करती हुई परिवार के लिये खाना बनाती है तो अधिकतम सकारात्मकता घर में प्रवेश करती है और उस परिवार को गुरुजी का दैवीय आशीर्वाद प्राप्त होता है।

2 गुप्त दान:-गुरुजी बारम्बार कहते थे कि परमार्थ के लिये दान करते समय इतना विनम्र और गुप्त होना चाहिये कि हमारे एक हाथ को ज्ञात ही न हो कि दूसरा हाथ कित्ना दान कर रहा है ।दिए गये दान केप्रचार के वे अत्यंत विरोधी थे।गुरुजी सर्व व्यापक है और उनकी आज्ञा का पालन करते रह्ना ही हमारे लिये सर्वोच्च कल्याणकारी कर्म है।

3 गुप्त सेवा:-संपूर्ण मानवता एवं प्रभुत्व के प्रतीक गुरुजी का कथन है कि नाम ,प्रसिद्धि या किसी लाभ की आकांक्षा से किए गये कार्य से सेवा का अर्थ समाप्त हो जाता है। वे यह भी कहते हैं कि सेवा करते समय या बाद में सेवा करने वाला किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाता है तो उसकी निस्वार्थता समाप्त हो जाती है और उसके द्वारा की गई सेवा उसका कल्याण करने में सहायक नहीं होती है ।

ओम नम: शिवाय गुरुजी सदा सहाय

द्वितीय खंड

गुरुजी हमारे साथ तब भी थे अब भी वे साथ हैं और वे हमेशा हमारे साथ रहेंगे।उनका आशीर्वाद अनश्वर है और उनका स्नेह नि:स्वार्थ है ।वे हमारे भगवान है। हमारे मार्गदर्शक और हमारे पालक हैं।वे अपनी दिव्य ज्योति से हमेशा हमारा जीवनपथ आलोकित करते हैं।

1हम सब पर गुरुजी का आशीर्वाद
केवल गुरुजी ही अपनी लीलाओं के विषय में जानते हैं ।31मई 2007 को उन्होने समाधि ली।उन्होने एक महिने पश्चात् ही वर्तमान समाधि स्थल डिम्पल को स्वप्न में दिखाया था ।डिम्पल ने स्वप्न देखा था कि समाधि में वे अपने आसन पर बैठे हुए संगत को आशीर्वाद दे रहे हैं ।

2 डिम्पल को टायफायड:-
एक रात्रि डिम्पल ने स्वप्न में देखा कि वह यह संसार त्याग कर गुरुजी के धाम पहुँच गयी है ।स्वप्न में ही गुरुजी उसे कहते हैं "आंटी तू इधर कैसे आ गयी है ? मैं ने अभी तुझे बुलाया नहीं है । जब टाईम आयेगा मैं अपने आप तुझे बुला लूँगा ।"उन्होने अन्य भक्तों से डिम्पल का परिचय कराते हुए कहा कि डिम्पल और वे भक्त गण इकट्ठे ही पृथ्वीलोक छोड़ कर उनके पास आयेंगे।इस स्वप्न के कुछ दिनों बाद डिम्पल को तेज बुखार चढ़ा और उसको टायफायड हो गया।डिम्पल बहुत तेज प्रतिरोधक दवाएँ ले रही थी।गुरुजी फिर से डिम्पल के स्वप्न में आये और सब टेस्ट एक बार और करवाने के लिये कहा।रक्त की दुबारा जांच करवाने पर पता चला कि डिम्पल को टायफायड नहीं है ।डॉक्टर ये देख कर आश्चर्य चकित हो गये और डिम्पल को दवाएँ बन्द करने के लिये कहा।डिम्पल जल्द ही ठीक हो गयी ।ये हमारे गुरुजी की महानता है ।उनकी अध्यात्मिक शक्तियों के समक्ष विज्ञान भी पराजित है ।

अक्षय को पूना व डलहौजी में दर्शन

गुरुजी की महासमाधि के उपरांत अक्षय ने ८वीं कक्षा के लिए सतारा के छात्रावास स्कूल में प्रवेश लिया।गुरुजी ने अक्षय को स्वप्न में कहा कि वह उत्तर दिशा की ओर के छात्रावास स्कूलों में प्रवेश ले। अक्षय की पूना छात्रावास में एक छात्र से मित्रता हो गई। अक्षय उसके साथ गुरुजी के सत्संग किया करता था। छुट्टियाँ आरम्भ होने से पहले मित्र ने अक्षय से 'लाइट ऑफ़ डिविनिटी' नमक पुस्तक ले ली।

उस मित्र के दादाजी शिव भक्त थे।उस पुस्तक को पढ़ते हुए उनका तादात्म्य उस पुस्तक से बहुत हो गया। गुरुजी का पावन स्वरूप देखने पर उन्होंने कहा कि वे केवल गुरुजी नहीं हैं ; ये तो साक्षात् स्वयं महाशिव हैं। उन्होंने अपने नाती को बताया कि गुरूजी सनातन हैं।वे स्वयंभू हैं। गुरुजी ने अपनी इच्छा से ही जन्म लिया है और अपनी इच्छा से ही शरीर का त्याग किया है। यह गुरुजी की महिमा ही है कि जिस व्यक्ति ने गुरुजी को कभी देखा ही नहीं वह भी इन्हें महाशिव का अवतार मानता है।

पूना से लौटते समय अक्षय और मैंने महाराष्ट्र के शिरडी तथा त्र्यंबकेश्वर मंदिर जाने का निश्चय किया। गुरुजी ने अक्षय को कुछ समय के लिए काले धागे में उनके स्वरूप वाला लॉकेट धारण करने के लिए कहा था।परन्तु यह नहीं बताया था कि इस लाकेट को कब उतारना है।शिरडी में प्रसाद के साथ काला धागा मिलने पर अक्षय ने पुराना काला धागा निकाल दिया। फिर त्र्यंबकेश्वर की यात्रा पर गए। दर्शन करने के बाद घर लौटने की तैयारी के समय अक्षय ने देखा कि काला धागा व लॉकेट उसके गले में नहीं है।हम तत्काल शिव मंदिर गए और हर संभव स्थान पर खोजने लगे परन्तु हमारे सारे प्रयत्न निष्फल हुए। मैं बहुत चिंतित हो गया कि अक्षय के गले में गुरुजी का लॉकेट अवश्य होना चाहिए। डिंपल ने मलेरकोटला में फ़ोन करके लॉकेट बनाने की प्रार्थना की। उस भक्त ने डिंपल को चांदी में बने चार लॉकेट ले जाने के लिए कहा। डिंपल ने लॉकेट ला कर हमारे घर के मंदिर में रख दिए। मैं अभी भी सोच रहा था कि गुरुजी उन लॉकेट को कैसे अभिषिक्त करेंगे। वास्तव में यह मेरी मूर्खता व अज्ञानता थी। उसी रात गुरूजी ने डिंपल के स्वप्न में आकर उन चारों लॉकेटों को आशीर्वाद दे अनुग्रहित किया। उन्होंने उसे एक लॉकेट अक्षय को पहनाने का निर्देश दिया और शेष तीन लॉकेट अन्य भक्तों जिनके घर मैं जाऊँ उन्हें देने के लिए कहा।

गुरुजी के आशीर्वाद से अक्षय को डलहौजी पब्लिक स्कूल (जैसा गुरुजी चाहते थे कि उत्तर दिशा में हो)में बिना किसी साक्षात्कार और लिखित परीक्षा के बिना प्रवेश मिल गया। हम महीने में एक बार उससे मिलने के लिए जाने लगे। जुलाई का महीना गुरुजी जा जन्म माह होने के कारण हम उससे मिलने नहीं जा पाए। अक्षय ने गुरुजी के जन्मदिन पर स्वप्न देखा कि गुरुजी स्कूल के प्रिंसिपल के कार्यालय में बैठे हुए हैं। गुरुजी ने प्रिंसिपल से अक्षय को बाहर ले जाने की अनुमति मांगी। उन्होंने आवेदन पत्र तथा आज्ञा पत्र हस्ताक्षर भी किए। स्वप्न में गुरुजी ने अक्षय को बताया कि उन्हें पता है कि उसके माता पिता जुलाई के महीने में उससे मिलने नहीं आ रहे हैं। इसलिए गुरुजी अपने जन्मदिन पर अक्षय को बाहर ले जाने व सारा दिन उसके साथ बिताने के लिए डलहौज़ी आए हैं।

गुरुजी द्वारा कर्मों का शुद्धिकरण

गुरुजी के भक्त रजनीश का पैर फिसलने के कारण उनके पाँव की हड्डी टूट गई थी।मैं और मेरा परिवार उनका कुशलक्षेम पूछने के लिए गए। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि पाँव की हड्डी टूटने के पीछे गुरुजी ने उनकी कोई भलाई सोची होगी। उनके इस अगाध विश्वास से मैं बहुत प्रभावित हुआ। रजनीश अंकल ने हमें बताया कि यदि भक्त के बुरे कर्म अधिक होंगे तो वे अपने भक्त को दर्शन नहीं दे पाते हैं। क्योंकि ऐसा करने से बुरे कर्मों का प्रभाव घनीभूत हो कर कर्म शुद्धि में देर कर देता है। उसी रात डिंपल ने गुरुजी व रजनीश अंकल

को अमरनाथ यात्रा से लौटते देखा। उन्होंने शिवलिंग और नंदी को लाल कपड़े में लपेट कर उसे दिया।डिंपल को निर्देश दिया कि रजनीश अंकल को दे दें। हम वह स्वप्न रजनीश अंकल को सुनाने में हिचकिचा रहे थे कि वे यह सब सुन कर वे क्या सोचेंगे ? परन्तु गुरुजी ने तो पहले ही से सब निर्धारित कर लिया था। अपनी अलौकिक शक्तियों से उन्होंने रजनीश अंकल को स्वप्न के बारे में आभास करा दिया था। अंकल ने मुझे फ़ोन कर के पूछा कि क्या डिंपल को गुरूजी व उनके बारे में कोई स्वप्न उन्हें सुननया। गुरुजी के पास हमारे कल्याण हेतु आशीर्वाद देने के मार्ग बड़े अद्‌भुत व दैवीय हैं। मेरा विश्वास है कि यदि तुम गुरूजी के साथ आस्था से जुड़ गए हो तो वे किसी भी समय दर्शन देकर आशीर्वाद दे देते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है की कौन से कर्मों की शुद्धि के लिए वे कौन सा आशीर्वाद देते हैं।

गुरुजी के कथनानुसार ध्यान लगाना आवश्यक है

एक रात स्वप्न में गुरुजी को अनेक भक्तों के साथ डूगरी में बैठे हुए देखा। गुरुजी संगत से शांत हो कर ध्यान लगाने के लिए कह रहे थे। परन्तु संगत बातें किए जा रही थी। गुरुजी ने एक लाठी उठा कर डांट लगानी आरम्भ कर दी। जैसे ही गुरुजी डिंपल के पास आए उसने गुरुजी को बताया कि उसे ध्यान लगाने में कठिनाई आ रही है।

गुरुजी ने डिंपल से कहा उनसे तार जोड़ने के लिए ध्यान लगाना बहुत आवश्यक है। इसलिए वे संगत को ध्यान लगाने का निर्देश देते हैं। उन्होंने कहा कि अलौकिक दिव्य प्रभु से तारतम्य जोड़ने के लिए शांत एवं निस्तब्ध वातावरण में ध्यान लगाना आवश्यक है।

डिंपल ने हलवा प्रसाद बनाया

मेरा परिवार एम्पियर स्टेट जाता रहता था। परन्तु उन्हें कभी भी हलवा प्रसाद बनाने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ था। एक रात डिंपल ने स्वप्न में देखा कि हम सब एम्पायर स्टेट में बैठे हुए हैं। जब गुरुजी अपने कमरे से लंगर प्रसाद ग्रहण करके आए तो उन्होंने डिंपल से जोशी आंटी को भी रसोई घर में साथ ले जाने के लिए कहा। (जब गुरुजी मानवातार रूप में थे तब जोशी आंटी ही एम्पायर स्टेट में हलवा बनाती थीं।) इस प्रकार गुरुजी ने डिंपल की हलवा प्रसाद बनाने की कामना पूर्ण की तथा उसे वरद आशीर्वाद भी दिया।

गुरुजी द्वारा मेरे नानाजी को आशीर्वाद रूप में जोड़े देना

जिन दिनों गुरुजी एम्पायर स्टेट में समय बिताते थे तब मेरे नानाजी व उनका परिवार अक्सर उन्हीं के साथ वहाँ होता था। एक दिन मेरे नाना जी ने गुरुजी से उनके सुनहरे व लाल रंग के स्पोर्ट्स जुटे के जोड़े

आशीर्वाद के रूप में लेने की प्रार्थना की। गुरुजी ने कहा कि उचित समय आने पर वे आशीर्वाद रूप में अपने जुटे उन्हें दे देंगे।

सन २०१० में मेरे नानाजी ने हड्डियों के कैंसर से ग्रस्त हो बिस्तर पकड़ लिया। उनकी चिकित्सा हो रही थी। उस समय उनकी आयु नब्बे वर्ष से कुछ अधिक थी। नानाजी की मृत्यु से एक महीना पहले मैंने स्वप्न में नानाजी को गुरुजी के साथ एम्पायर स्टेट में बैठा देखा। और गुरुजी ने अपने आशीर्वाद रूप में सुनहरे व लाल रंग का जोड़ा उन्हें दिया है। उसी रात मेरे नानाजी को भी यही स्वप्न आया की गुरुजी उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। इसके पश्चात नानाजी स्वयं को पहले से अच्छा अनुभव करने लगे। वे प्रसन्नता पूर्वक दिन बिताने लगे। एक मास उपरांत उन्होंने शान्ति पूर्वक अपने प्राण त्यागे।

गुरुजी द्वारा मित्र की पुत्री को वरदान

गुरुजी ने डिंपल को स्वप्न में आकर मेरे मित्र हितेश (गुरुभक्त) को पुत्री का वरदान दिया। डिंपल ने स्वप्न के बारे में बताया। गुरुजी ने डिंपल को आज्ञा दी कि मेरे अतिरिक्त किसी को भी यह स्वप्न तब तक नहीं बताना जब तक यह सच नहीं हो जाए। एक साल पश्चात हितेश ने फ़ोन द्वारा पुत्री के जन्म का शुभसमाचार मुझे सुनाया। तब मैंने हितेश को डिंपल के स्वप्न के बारे में बताया। और यह भी बताया कि गुरुजी की आज्ञा थी कि जब तक स्वप्न सच न हो जाए किसी को न बताया जाए।

गुरुजी कहा करते थे कि वे दंपत्ति को पुत्र प्राप्ति का वरदान आसानी से दे देते हैं। परन्तु जिन दम्पत्तियों के कर्म अच्छे होते हैं केवल उन्हें ही पुत्री का वरदान मिलता है। उनके शब्दों में "लास्की तो वे बेरों की तरह बाँट देते हैं , कन्या किसी किसी को ही देते हैं। मैं अच्छे कर्मों वालों को ही बेटियाँ देता हूँ।

अक्षय की अमेरिका यात्रा

जुलाई २००८ में दिल्ली में एक वित्त कंपनी में नौकरी ले ली। जल्द ही आर्थिक मंदा आ गया। कई कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को निकाल दिया। कईयों की दुकानें व दफ्तर बंद हो गए। जिस कंपनी में मैं काम करता था उसके प्रबंधकों ने कर्मचारियों की छंटनी नहीं की , परन्तु सामान प्रतिशत के अनुसार सभी कर्मचारियों के वेतन में कटौती कर दी।इस आर्थिक मंदे के कारण जीवन जटिल हो रहा था। मैंने पंजाब लौटते का निर्णय किया।उसी रात स्वप्न में मैं गुरूजी को अपनी परिस्थिति बता रहा था. गुरुजी ने मुझे उन पर विश्वास रखने को कहा और दिल्ली की नौकरी न छोड़ने को कहा। उन्होंने मुझे पहले जैसा वेतन प्राप्त होने का आशीर्वाद भी दिया। गुरुजी की आज्ञा का पालन करते हुए मैंने दिल्ली की नौकरी नहीं छोड़ी। १८ मास बीत गए परन्तु मेरे वेतन के बारे में कोई शुभ समाचार नहीं आया।

अक्षय के स्कूल के विद्यार्थियों के साथ NASA फ्लोरिडा जाना था। मेरे पास हवाई यात्रा की टिकट के पैसे नहीं थे। मैंने उधार लेकर उसके यात्रा के पैसे एकत्रित करने की सोची। मेरे लिए बहुत सुखद आश्चर्य था कि ऑफिस के प्रबंधकों ने ऐलान कर दिया कि अठारह माह के वेतन की एवज़ वह कर्मचारियों को बोनस देंगे और एक साल के बराबर का वेतन विशेष बोनस के रूप में भी दिया। गुरुजी के वचन सत्य सिद्ध हुए। उन्होंने कृपापूर्वक वरदान दिया कि बिना उधार लिए मैं अक्षय के स्कूल की अमेरिका यात्रा का खर्च उठा सकूं।

अक्षय के पास पासपोर्ट नहीं था। हमें स्कूल से मान्यता पत्र लेकर पासपोर्ट ऑफिस जाने के लिए कहा गया।डिंपल ने स्वप्न में डूगरी वाले घर में मुझे , डिंपल व अक्षय को गुरुजी के साथ बैठे देखा। उसने स्वप्न में ही देखा कि गुरूजी मुस्कुरा कर हम सब को आशीर्वाद दे रहे हैं। अगली सुबह हम लुधियाना के पासपोर्ट ऑफिस गए। पासपोर्ट अधिकारी ने बिना कोई प्रश्न पूछे ही अक्षय को पासपोर्ट दे दिया।गुरुजी के अपने आशीर्वाद रूप में बिना अतिरिक्त शुल्क दिए इकॉनमी क्लास से बिज़नेस क्लास में सीट हो गई।

गुरुजी द्वारा किराए के मकान को आशीर्वाद

हम लगभग कई साल से सरिता विहार नई दिल्ली में एक किराए के मकान में रह रहे थे। हमारा मकान मालिक चाहता था कि हम मकान छोड़ दें। इस कारण हम मकान बदल कर एक अन्य किराए के मकान के चले गए। नए मकान में जाते ही मुझे बुरे बुरे सपने आने लग गए। एक रात स्वप्न में गुरुजी ने जिस मकान में मैं रह रहा था उसे छोड़ कर अन्य मकान में जाने के लिए कहा।मैं छः मास के किराए के अनुबंध को तोड़ नहीं सकता था। मैं गुरुजी से याचना कर रहा था कि अनुबंध जल्द तोड़ने पर अग्रिम राशि वापिस नहीं मिलेगी। उन्होंने फिर भी मुझे वहाँ से जल्द निकलने की आज्ञा दी।इसी मध्य डिंपल व मैं बीमार हो जाते हैं। तभी गुरुजी के आशीर्वाद से करिश्मा हुआ। मकान मालिक ने मुझे बुलाकर कहा कि वह मकान बेच रहा है और यदि मैं मकान छोड़ दूँ तो वह अग्रिम राशि भी लौटा देगा। शीघ्र ही संगत की एक आंटी ने उनके घर के पास का ही एक मकान दलाल को फ़ीस दिए बिना ही हमें देने का प्रस्ताव रखा। हमने जल्द से जल्द नए स्थान पर जाने का निर्णय किया। गुरुजी ने डिंपल से स्वप्न में कहा कि जिस नए घर में हम जा रहे हैं उसे गुरुजी ने अपने आशीर्वाद से कल्याणकारी बना दिया है।

डिंपल ने स्वप्न में ही देखा कि हम एक अन्य भक्त रजनीश अंकल के घर गए हुए हैं। उसने गुरुजी द्वारा प्रदान की गई जूती ,चोला अन्य व्यहवारिक वस्तुएं हमें दिखाईं। उसने सब वस्तुएं बड़ी सावधानी पूर्वक एक चादर से ढक कर रखी हुई हैं। स्वप्न में ही गुरुजी ने डिंपल से यह भी कहा कि वे बहुत प्रसन्न हैं और खेलना चाहते हैं। उन्होंने हमें उनके समक्ष नतशिर होने के लिए कहा ताकि वे हमारे कान खींच सकें। उन्होंने सभी भक्तों के कान खीचे और कहा कि खेल खेल में ही उन्होंने अपने अनोखे अंदाज से सबको कल्याणकारी आशीर्वाद दे दिया है। हमारे गुरुजी की यही महिमा है। उनके दिव्य आशीर्वाद से हम अपने नए निवास स्थान में आ गए।

गुरुजी एवं सचखंड

गुरुजी चाहते थे कि उनकी संगत “किन्तु परन्तु” के ब्रह्म को त्याग कर अच्छे कर्म करे। उनके द्वारा महासमाधि लेने के पश्चात कई भक्तों ने श्वेत वस्त्र पहनने आरम्भ कर दिए। कुछ भक्तों को तो गुरुजी द्वारा ऐसा आदेश मिला था परन्तु अन्य भक्त तो गुरुजी के आदेश के बिना ही पहनने लग गए थे। गुरुजी ने एक अंकल को श्वेत वस्त्र धारण करने की आज्ञा दी थी। हमने इस बारे में उनसे पूछा। उन्होंने बताया कि गुरुजी कहते थे कि केवल सचखंड में ही श्वेत वस्त्र धारण किए जाते हैं। इस कारण गुरुजी ने उन्हें श्वेत वस्त्र धारण करने की आज्ञा दी है। मैं और डिंपल उदास से होकर घर लौटे। गुरुजी ने तो हमें श्वेत वस्त्र धारण करने की आज्ञा नहीं दी है। हम कभी भी सचखंड (where divine resides) नहीं जा पाएंगे।और गुरुजी के पावन दर्शन प्राप्त नहीं होंगे। उसी रात डिंपल ने स्वप्न में देखा कि उसकी मृत्यु हो गई है और वह सचखंड पहुँच गई है। उसने स्वप्न में ही देखा कि सचखंड बहुत सौंदर्यशाली है और अनेक संगत श्वेत वस्त्र धारण किए हुए है। तभी अपने समक्ष गुरुजी के दर्शन पाकर वह नतशिर होती है। गुरुजी पूछते हैं ,”आंटी तू यहाँ कैसे आ गई है।” उन्होंने डिंपल को समझाया कि केवल श्वेत वस्त्र पहनने से ही कोई सचखंड नहीं पहुँचता है। “व्यक्ति के सुकर्म व मेरा आशीर्वाद ही उसे सचखंड ला सकता है।” उन्होंने डिंपल से कहा कि चाहे उसने श्वेत वस्त्र धारण किए हों या नहीं वह सचखंड ही आएगी। गुरुजी ने कुछ अन्य लोगों के चेहरे डिंपल को दिखाते हुए कहा कि इन व्यक्तियों ने भी श्वेत वस्त्र धारण किए है परन्तु फिर भी इनके भाग्य में सचखंड नहीं हैं।इसके पश्चात गुरुजी ने डिंपल को घर जाने की आज्ञा दी। प्रातः काल जागने पर डिंपल ने सारा स्वप्न मुझे सुनाया।

गुरुजी कहा करते थे , “ यदि तुम्हें गुरु प्राप्त करना है तो गुरु को सच्चे दिल व सच्चे मन से प्यार करो।

गुरुजी द्वारा मेरे अंकल को मोक्ष प्रदान

गुरुजी की शरण में जो भी आता है , उसे गुरुजी अपना आशीर्वाद देते हैं। वे भक्तों के कर्मों की शुद्धिकरण में सहायता भी करते हैं। वे "महाशिव हैं।" और संगत को मोक्ष प्रदान करने में सहायक हैं।

लगभग आठ वर्ष पहले मेरे पिताजी के भाई का देहांत हो गया था। उन दिनों हम सरिता विहार , नई दिल्ली में रहते थे। एक रात डिंपल के स्वप्न में उन्हें देखा। उनके साथ उनके परिवार के अन्य सदस्य भी थे जिनकी मृत्यु उनसे पहले हो गई थी। उन्होंने डिंपल की बांह पकड़ते हुए कहा कि वे उसे लेने आए हैं। उसी समय डिंपल ने मंत्र जाप , "ॐ नमः शिवाय , शिवजी सदा सहाय," करना आरम्भ कर दिया। मंत्र जाप करते करते उसने गुरुजी के स्वरूप को पानी में रख दिया। फिर वही अभिमंत्रित जल अंकल व अन्य सम्बन्धियों पर छिड़कना आरम्भ कर दिया। ऐसा करने के कारण सारे सम्बन्धी तो अदृश्य हो गए परन्तु अंकल बारम्बार उसे अपने साथ ले जाने का आग्रह करते रहे।मंत्र जाप करते हुए डिंपल उन पर पवित्र जल छिड़कती जा रही थी। इससे अंकल शांत हो गए। उन्होंने डिंपल को आशीर्वाद दिया। अंकल ने डिंपल को बताया कि उन्हें मुक्ति नहीं मिल रही थी इस कारण उनकी आत्मा भटक रही थी। परन्तु अब मंत्र जाप व पवित्र जल छिड़कने के कारण उनको मुक्ति मिल गई है और उन्हें मोक्ष प्राप्त हो गया है।

मेरे जन्मदिन पर गुरुजी का शुभ आशीर्वाद

भक्त क्या सोचते और क्या करते हैं , इस बारे में गुरुजी को सब ज्ञात होता था। यदि हम सच्चे दिल से उनका स्मरण करते हैं और उनसे मिलने की हार्दिक लगन है तभी गुरुजी अनेक रूपों में हमारे प्रति अपना स्नेह दर्शाते हैं।

जब गुरुजी मानव रूप में अवतरित थे तब मेरे हर जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते थे। सन २०११ में अपने जन्मदिन पर मैं उदास था। और उनके मानव रूप को याद कर रहा था। उसी रात गुरूजी ने स्वप्न में दर्शन दे कर मुझे जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने प्रसाद व कल्याणकारी आशीर्वाद भी दिया।

स्वप्न में शिवलिंग दर्शन

सात नवम्बर २०११ में गुरुजी ने मेरे स्वप्न में दर्शन देकर मुझे एक शिवलिंग दिखाया। स्वप्न में ही मैं पहाड़ी पर छुट्टियाँ मनाने एक रिसोर्ट में जा रहा हूँ जहाँ मैंने कई मनोहर जल प्रपात देखे। स्वप्न में ही कुछ चढ़ाई के बाद मैंने एक मंदिर देखा। मंदिर के निकट पहुंचते ही मंदिर के कपाट स्वतः ही खुल गए मैंने मंदिर में अत्यंत ही अलौकिक व ज्योतिर्मय शिवलिंग के दर्शन किए। मंदिर बहुत ही पुराना एवं बिना सीमेंट लगाए

छोटे पत्थरों से बना लग रहा था। दो फीट ऊँचे भव्य शिवलिंग के सामने अत्यंत ही मोहक व सुंदर गणेश जी की प्रतिमा थी। वहाँ कुछ भक्तजन घेरा डाले हुए खड़े थे। उन्होंने कहा कि यहाँ कपडा जलाने की प्रथा है। मैंने जैसे ही कपड़ा जलाया तो कपड़े में से चकाचौंध करने वाली नीली रौशनी शिवलिंग की और गई। अगले ही क्षण सारा मंदिर उस प्रकाश से जगमगाने लगा। उस दिन सोमवार का प्रातः काल था। मुझे पूर्ण विश्वास था कि गुरूजी ने शिवलिंग व गणेश जी के रूप में मुझे दर्शन दिए हैं।

एक ही रात्रि में हम सबको गुरुजी द्वारा स्वप्न दर्शन

२३ अक्टूबर २०११ की रात्रि में मैंने गुरुजी के दर्शन किए। एम्पायर स्टेट में वे अपने आसन पर बैठे हुए थे। उन्होंने मुझे व डिंपल को पास बुलाकर आशीर्वाद दिया। उनके चरण कमलों को अपने होंठों से छूकर मैंने उनसे जाने की आज्ञा मांगी। उनके चरण कमलों से निकलने वाले अमृत का भी मैंने रस पान किया।

उसी रात्रि डिंपल के स्वप्न में उसके पिताजी उसे मिलने आए। प्रसन्नता पूर्वक उन्होंने बताया कि वे गुरुजी के साथ ही रहते हैं व उनके साथ ही भोजन भी करते हैं। पिताजी ने यह भी बताया कि गुरुजी के रसोइये ने भोजन में ज्यादा घी डाल दिया था। गुरुजी ने उसे भविष्य में काम घी डालने के लिए कहा। डिंपल ने ही अपने पिताजी से पूछा कि उन्होंने अपने लिए गुरुजी से लम्बी आयु का वरदान क्यों नहीं माँगा ? पिताजी ने उत्तर दिया कि वे स्वयं को बहुत भाग्यशाली और धन्य मानते हैं कि गुरुजी स्वयं उन्हें लेने आए। डिंपल व अक्षय को गले लगा कर वे अलौकिक ज्योति में अंतर्ध्यान हो गए।

और भी आश्चर्यजनक बात यह हुई कि उसी रात अक्षय के भी स्वप्न आया। स्वप्न में गुरुजी व डिंपल को पिताजी (नानाजी) मिलने आये और उन्होंने अक्षय से बातें कीं। गुरुजी ने अक्षय से कहा कि वह अपने नानाजी की चिंता न करें। वे स्वयं उसके नानाजी का बहुत ध्यान रखते हैं। फिर गुरुजी व नानाजी दोनों ने अक्षय को गले लगा कर आशीर्वाद दिया। गुरुजी ने अक्षय से कहा कि उन्हें ज्ञात है कि वह मंत्र जाप नहीं करता है। गुरुजी ने उसे नियमित रूप से मंत्र जाप व ध्यान लगाने का निर्देश दिया। इसके पश्चात गुरूजी अक्षय को नानाजी के साथ अदृश्य हो गए। जागने पर अक्षय ने अपना स्वप्न सुनाया। उस दिन से उसने फिर से मंत्र जाप करना आरम्भ कर दिया।

यह निश्चित है कि यह कोई संयोग नहीं था कि एक ही रात में गुरुजी हम तीनों के सपने मैं आये। गुरुजी चाहते थे इसलिए यह संभव हो सका। यह साधारण मनुष्य नहीं व केवल ईश्वर के लिए ही संभव है।

गुरुजी की छत्रछाया में हम कभी भी अकेले नहीं हैं

फरवरी सन २०१२ में डिंपल व मैं कुछ दिनों के लिए लुधियाना गए। काम से केवल एक हफ्ते का ही अवकाश था। नौकरी पर लौटने से पहले मैंने डिंपल को वहाँ और ज्यादा रहने को कहा। जैसे ही मैं घर से निकला गुरुजी के आशीर्वाद से मुझे अन्तराभास हुआ कि गुरुजी डिंपल को दर्शन देंगे। लुधियाना पहुँचते ही

डिंपल ने फ़ोन पर मुझे बताया कि मेरा पूर्वाभास वास्तव में सत्य हुआ।   एक बार डिंपल घर अकेली थी। उसे लगा कि उसे मूर्छा आ गई है। तथा एक महिला और बच्चा उसे कस कर पकड़े हुए हैं। डिंपल सहायता के लिए गुरुजी को पुकार लगाने लगी। डिंपल ने उस महिला और बच्चे को दूसरी मंजिल से फेंकने की चेष्टा भी की। उन दोनों ने फिर वापस आने का प्रयत्न किया। पर डिंपल पहली मंजिल पर रहने वाले भक्त के घर चली गई। उसी क्षण द्वार की घंटी बजती है। डिंपल के द्वार खोलने पर वहाँ गुरुजी को खड़ा देखती है। डिंपल गुरुजी के गले लग जाती है। गुरुजी उसे सांत्वना देते हुए कहते हैं , जब तक उसके पति वहाँ नहीं हैं , गुरुजी वहीँ रहेंगे। उसे अकेले होने के कारण डरने की आवश्यकता नहीं हैं। गुरुजी हर क्षण अपने भक्तों के साथ हैं। उनके होते हुए हम कभी भी अकेले नहीं हैं।

महाशिवरात्रि आशीर्वाद

सन २०१२ की महाशिवरात्रि की पूर्व रात्रि डिंपल ने एक और गुरुजी का स्वप्न देखा।उन्होंने डिंपल को अपनी चरण सेवा देकर उसका कल्याण कर दिया। डिंपल बहुत प्रसन्न थी कि स्वयं महाशिव ने उसे इस सेवा का अवसर दिया है।

उसी दिन ऑस्ट्रेलिया से एक भक्त शिवरात्रि का उत्सव मनाने वहाँ आया हुआ था। उसी रात्रि उसे वापस लौटना था।डिंपल ने उसे दो मिठाई के डिब्बे ले जाने के लिए दिए। अधिक सामान होने के कारण उस भक्त ने मिठाई ले जाने से इंकार कर दिया। हमने उसे भरोसा दिलाया कि यह गुरुजी का प्रसाद है। और गुरुजी ही अपनी कृपा से अतिरिक्त शुल्क दिए बिना ही ले जाने देंगे। अंततः वे सज्जन दो डिब्बे मिठाई के ले जाने के लिए मान गए। उसका सामान निर्धारित वजन से अधिक था परन्तु गुरुजी के आशीर्वाद से उसे अतिरिक्त शुल्क नहीं देना पड़ा। बिना किसी बाधा के प्रसाद उनके घर पहुंच गया। गुरुजी हर क्षण हमारे साथ होते हैं और उनका महिमा युक्त आशीर्वाद हर कदम पर हमारे साथ होता है। हमें उनके अलौकिक प्रभुत्व पर अगाध विश्वास होना चाहिए। किसी भी तरह का कोई प्रश्न किए बिना उनकी हर आज्ञा का पालन करते हुए सम्पूर्ण समर्पण करना चाहिए।

गुरूजी द्वारा कॉफी से डिंपल का उपचार

गुरुजी भिन्न भिन्न रूपों में हर भक्त को अपनी दिव्यता के दर्शन देते थे। गुरुजी ईश्वर हैं। इस कारण उनके अद्भुत कार्यों को हम मनुष्य समझ नहीं सकते। वे ईश्वर हैं। अप्रैल सन २०१२ में डिंपल बुखार ,पेट दर्द ,त्वचा रोग आदि अन्य कई स्वास्थ्य जनित समस्याओं से ग्रस्त रहने लगी। उसने काफी टेस्ट करवाए और कई डॉक्टरों से परामर्श किया। परन्तु कोई भी डॉक्टर रोग के कारण न जान सके। गुरुजी ने डिंपल को स्वप्न में दर्शन दे कर किसी भी अस्पताल जाकर वहाँ चाय या कॉफी पीने को का निर्देश दिया। डिंपल ने स्वप्न पर ध्यान नहीं दिया। डिंपल को फिर वही स्वप्न दोबारा आया। और गुरुजी ने उसे याद दिलाया। परन्तु हम डिंपल की बिमारी के कारण व उसकी चिकित्सा में ही उलझे रहे। अंततः गुरुजी ने फिर तीसरी बार स्वप्न में दर्शन दिए और अस्पताल में चाय या कॉफी पीने का आदेश दिया।रात ११:३० बजे मैं डिंपल को ले कर अपोलो

अस्पताल गया। हमने वहन कॉफी पी और घर लौट कर सो गए। अगले दिन से डिंपल के स्वास्थ्य में निरंतर सुधार होने लगा और यह देखकर डॉक्टर भी चकित हो गए।

कई बार हम गुरुजी के स्वप्न व उनके आदेशों की अवहेलना कर देते हैं। हमें सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि वे ईश्वर हैं। उनका कहा एक एक शब्द हमारे लिए आशीर्वाद के मोती हैं। जिनका हमें आदर करना चाहिए। उनका हर भक्त को आशीर्वाद देने का भिन्न भिन्न तरीका है। हमारा कर्तव्य है कि हमें उन पर अगाध विश्वास होना चाहिए। हमें ज्ञात नहीं की चिकित्सा रूप में उन्होंने क्यों डिंपल को अस्पताल जा कर चाय या कॉफी पीने का आदेश दिया। पर हमें वास्तव में बहुत प्रसन्नता हुई कि अंततः हमने उनका आदेश माना।

गुरूजी द्वारा सत्संग को आशीर्वाद

गुरुजी की आज्ञा के बिना मैं कोई सत्संग नहीं सुनाता था। यह असंगत भी नहीं था क्योंकि हर संगत का गुरुजी को स्नेह काने का भिन्न भिन्न होता है। मेरा यह दृढ़ विशवास है कि हमारा गुरुजी से आत्मिक संबंध है तो गुरुजी आवश्यकता अनुसार अपनी आज्ञा हम तक पहुँचा देते हैं। १६ मई सन २०१२ की रात्रि डिंपल ने स्वप्न देखा। गुरुजी हमारे साथ व अन्य भक्तों के साथ अरोमा आंटी के घर सत्संग के लिए जा रहे हैं। लाल चोला पहने हुए गुरुजी हम सबके साथ चल रहे थे। उन्होंने आसन पर अपना स्थ ग्रहण किया। और मुझे संगत में से दो बालक व बालिकाओं को सत्संग सुनाने के लिए कहा। इसके पश्चात डिंपल को सत्संग सुनाने का निर्देश दिया। परन्तु प्रयत्न करने पर भी डिंपल सत्संग न सुना सकी। स्वप्न में ही गुरूजी हंसने लग गए और यहीं डिंपल का स्वप्न समाप्त हो गया।

गुरुजी के आदेश पर ही अरोमा आंटी अपने घर में सत्संग कराना चाहती थीं। उसी २६ तारीख को उनके घर सत्संग था। जैसा डिंपल ने स्वप्न में देखा था उसके अनुरूप ही हम उनके घर चल कर गए। जिन चार बच्चों का उल्लेख डिंपल ने मुझसे किया था , वे कहीं दिखाई नहीं दिए। लंगर प्रसाद समाप्त होते ही गुरुजी ने मुझे आज्ञा दी कि मैं संगत को डिंपल का स्वप्न सुनाऊँ। मैंने सत्संग सुनना आरम्भ कर दिया। उसी समय दो कन्याएँ आकर गुरुजी के समक्ष सर झुकाती हैं। डिंपल ने तत्काल पहचान लिया कि यही दो बालिकाएँ उसके स्वप्न में आई थीं। यद्यपि डिंपल के स्वप्न में जो दो बालक आए थे वे हमें दिखाई नहीं दिए।

चमत्कार को नमस्कार

एक रात गुरुजी मेरे स्वप्न में आये। स्वप्न में मैं एक अन्य भक्त के सुनील खेरा के साथ गाँव में बैठा हुआ हूँ। सुनील अंकल ने हाल ही में घटित हुआ एक सत्संग सुनाने की प्रार्थना की। न जाने किस भांति सारा दृश्य जालंधर में बदल गया। वहाँ गुरुजी का आसन बहुत सुंदरता से सजाया हुआ था और हॉल भक्तों से भरा हुआ था। एक भक्त ने गुरुजी से पूछा कि क्या वह संगत के लिए चाय प्रसाद लाए ? परन्तु गुरूजी ने मना कर दिया। वे अपने आसन से उठ कर फर्श पर बैठ गए। बड़े आश्चर्यजनक ठंग से उन्होंने अपना कद मंदिर की छत तक ऊँचा कर लिया। और मछलियों के कुंड की दो बार परिक्रमा की। इसके पश्चात् वे बड़े क्षीण से दिखाई दिए और लौट कर अपने आसन पर बैठ गए। गुरुजी का इतना दुर्बल चेहरा निहार कर संगत रोने लग गई। यद्यपि एक भक्त उनके पीने के लिए जल भी लाया परन्तु गुरुजी ने नहीं पीया।मैंने गुरुजी के हाथों व पैरों की मालिश आरम्भ कर दी। गुरुजी कुछ अच्छा अनुभव कर सकें इसलिए अक्षय उनकी टांगों पर बैठ गया। गुरुजी ने अक्षय को उनकी गोदी में बैठने को कहा। मेरे आग्रह करने पर उन्होंने थोड़ा सा जल पिया। मैंने उनसे प्रश्न

किया कि अपने स्वाभाविक आकार के शरीर को इतना बड़ा व्यक्तित्व क्यों दिया। उन्होंने उत्तर दिया : "चमत्कार को नमस्कार है।" उन्होंने कहा की जब तक गुरु कोई चमत्कार न दिखाए ,लोग विश्वास नहीं करते। वे मुक्त हस्त से अपने आशीर्वाद की वर्षा करते हैं इसलिए संगत बड़े मंदिर व सत्संग में आती है। उन्होंने यह भी कहा संगत जो चाहती है , वे यदि देना बंद कर दें तो संगत उनके पास आना बंद कर देगी। हर भक्त अपनी मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना से उनके पास आता है। गुरुजी ने सस्नेह मुझे कहा यदि भक्तजन शांत हो कर बैठेंगे तो वे और भी मुक्त हस्त से अपना दिव्य वरदान हर भक्त को देंगे। क्योंकि केवल उन्हें ही ज्ञात है कि कब और क्यों और क्या हमारे लिए उचित है।

गुरुजी के कथनानुसार अपने कर्मों का भुगतान स्वयं करो

हम अक्सर लुधियाना से दिल्ली टैक्सी द्वारा आते थे। परन्तु अप्रैल १९९९ मेरे बहनोई व् मैंने रेलगाड़ी से यात्रा की। हमें बड़े मंदिर का मार्ग पता नहीं था। तीन बसें बदलने के बाद हम फार्च्यून होटल पहुँचे। उस दिन दोपहर को भीषण गर्मी थी। बड़े मंदिर जाने के लिए कोई साधन भी नहीं था। उस भीषण गर्मी में हम पैदल ही बड़े अमंदिर की ओर रवाना हो गए। मार्ग में हम यही बातें करते रहे कि गुरुजी ने इतने निर्जन स्थान पर क्यों मंदिर बनवाया। क्योंकि वहाँ पहुँचना कठिन है। और विशेषकर यदि कोई गरीब मनुष्य वहाँ जाना चाहता हो। अंततः तीन बजे हम बड़े मंदिर पहुँच गए। शाम को बस द्वारा हम एम्पायर स्टेट पहुंचे। संध्या छः बजे मंदिर के कपाट खुल गए। हमने अपने कमरे के बाहर बैठे हुए गुरुजी के दर्शन किए। हमारे प्रणाम करते ही गुरुजी ने पूछा कि हम दोपहर में कहाँ थे। मैंने उन्हें दोपहर का सारा वृत्तांत सुनाया। उन्होंने उत्तर दिया , "ऐसी छोटी छोटी बातों के लिए गुरु को याद नहीं करना चाहिए। तू सड़क पर चलते मुझे याद कर रहा था और उसकी दस्तक मेरे कक्ष में हो रही थी। जिसके कारण मुझे पाठ करते समय ध्यान में विघ्न हो रहा था।" उन्होंने कहा कि वे हर क्षण अपने भक्तों के साथ होते हैं। परन्तु हमें छोटी छोटी बातों के लिए उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। उन्हें भक्तों की व हमारी और भी कई समस्याएं सुलझानी होती हैं।

उन्होंने कहा यदि समस्या बड़ी है तभी उनकी सहायता मांगनी चाहिए। जब हम अपनी समस्या को दूर करने में असमर्थ हों तभी उनसे सहायता मांगनी चाहिए। उन्होंने मुझे सचेत करते हुए कहा कि कुछ कर्मों का सही भुगतान उन्हें टालने की अपेक्षा उनका सामना करने से ही होता है।

सर्व सुख हिताय प्रार्थना

गुरुजी सदैव इस तथ्य पर बल देते थे कि यदि पूर्ण कल्याण चाहिए तो आत्मकल्याण की अपेक्षा पर हिट के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। उनका कथन था कि मनुष्य बहुत स्वार्थी एवं आत्मकेंद्रित है। उसे दूसरों के प्रति तनिक भी सहानुभूति नहीं है। गुरुजी हमारे ईश्वर हैं, दाता हैं, पालक हैं। परन्तु हमें भी पूर्ण श्रद्धा और विश्वास एवं विनीत भाव से उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।

लुधियाना में हमारी पड़ोसन अपने प्रथम शिशु के साथ मायके गई थी। दुर्भाग्यवश बच्चा बीमार हो गया और उसका देहांत हो गया। दुख भरी माँ ने डिंपल से कहा कि मायके में शिशु के देहांत होने के कारण उसके मायके वाले अब उसे मायके आने की आज्ञा कभी नहीं देंगे। डिंपल और वह स्त्री जब बातें कर रहे थे उस समय मैं अपने घर के मंदिर में था। ज्योत जलाते समय उस माँ की व्यथा का ध्यान कर मेरी आंखें आंसुओं से भर गई। मैंने गुरुजी से प्रार्थना में यही माँगा कि वे उसे साल के भीतर पुत्र प्रदान करें। गुरुजी की दिव्य महिमा से साल भर में ही स्त्री के पुत्र उत्पन्न हुआ।

संगत से मेरी यह हार्दिक प्रार्थना है कि जब भी गुरुजी से स्वाम के लिए कुछ मांगते हैं।, उस समय किसी जरूरतमंद व्यक्ति की इच्छा पूर्ति की प्रार्थना भी अवश्य करें। ऐसा करने पर गुरुजी की असीम व असंख्य कृपा तुम पर बनी रहेगी।

विवाह उत्सव में गुरुजी का आशीर्वाद

एक बार एक आंटी जी ने अपने परिवार में होने वाले विवाह में सम्मिलित होने के लिए गुरुजी को आमंत्रित किया। उन दिनों गुरुजी एम्पायर स्टेट में रहते थे। विवाह जालंधर में था। गुरुजी ने उस कार्ड पर मेरा नाम व फ़ोन नम्बर लिख कर एक भक्त के हाथ मुझे भेज दिया और मुझे विवाह में सम्मिलित होने का आदेश दिया। इसके पश्चात फ़ोन पर भी उन्होंने यही कहा।

हम आंटी जी को जानते नहीं थे। हमारे ईश्वर हमारे गुरुजी ने आज्ञा दी थी इस कारण विवाह में सम्मिलित होना अत्यंत आवश्यक था। मैं दो भक्तों के साथ विवाह में सम्मिलित होने जालंधर गया। गुरुजी की आज्ञा अनुसार शगुन का लिफाफा भी दिया।

कुछ दिनों बाद वह महिला गुरुजी का धन्यवाद करने आई। उसने बताया कि सब कुछ भली भांति सम्पन्न हुआ। परन्तु गुरुजी को विवाह समारोह में नहीं देखा। गुरुजी ने कहा कि वे वहीँ थे। उन्होंने विवाह का एक वाक्य बताया। उन्होंने मेहमानों की संख्या ,भोजन में क्या क्या बना था और कई अन्य बातें विस्तार से बताईं। उन्होंने कहा कि उन्होंने दो संगत भी विवाह में भेजी थीं। गुरुजी ने कहा कि जब वे अपने भक्त को कहीं भेजते हैं तब वे भी साथ में होते हैं। गुरुजी सदा हमारे अंग संग हैं। आंटी एक ही समय में बहुत आश्चर्यचकित भी हुईं और आभारी भी हो गईं। हमारे गुरु ,हमारे ईश्वर हमारे स्वामी की इस प्रकार की मंत्रमुग्ध करने वाली लीलाएँ थीं।

गुरुजी के अकल्पनीय आशीर्वाद

गुरुजी हमेशा स्मरण करते रहते थे कि उनके शरीर की अपेक्षा उनकी आत्मा से स्नेह करना चाहिए। गुरुजी कहते थे यदि हम उनसे आत्मिक रूप से संबंध रखेंगे तो हम कहीं भी हों , गुरुजी हमेशा हमारे साथ रहेंगे। उनकी कृपा की छात्र छाया हम पर बानी रहेगी। गुरुजी कई बार कहा करते थे कि वे स्वयं , महाशिव एवं गुरु नानक तीनों एक ही में समाए हुए हैं।और भक्तों को हर साँस के साथ उनका नाम जपना चाहिए। गुरुजी हम सबके हृदय में निवास करते हैं। हमें केवल अपनी अंतरात्मा पर ध्यान केंद्रित कर उन्हें खोजना चाहिए।

गुरुजी के अपनी संगत के कल्याण करने हेतु आशीर्वाद देने के ढंग असाधारण व अतुलनीय हैं। उन्हें ज्ञात है कि कब व कैसे हम सब पर अपनी कृपा करनी है। सन २००२ में जालंधर मंदिर में उनके दर्शन के उपरांत गुरुजी ने सुनील व मुझे जाने की आज्ञा दी। तभी हमें सावधान करते हुए उन्होंने हमें अपनी गाड़ियाँ एक दूसरे

के पीछे पीछे ध्यान पूर्वक चलने को कहा। उन्होने यह सावधानी तीन बार कही। मंदिर से थोड़ा दूर जाते ही तीन स्त्रियों व एक पुरुष ने हमें रोका। उनकी कार ख़राब हो गई थी और वे लुधियाना लौटना चाहते थे। पहले तो हम उन्हें गाड़ी में बैठने की अपेक्षा आगे निकल गए। गुरुजी के उपदेश कानों में गूंजने लगे। और हम उनकी सहायता के लिए लौटे। उस वक्त रात काफी हो चुकी थी। वे काफी देर से गुजरने वाली गाड़ी वालों से प्रार्थना कर रहे थे। परन्तु किसी ने उनकी सहायता नहीं की थी। तीनों स्त्रियाँ तो हमारी गाड़ी में बैठ गई। परन्तु पुरुष गाड़ी ठीक करने के लिए मैकेनिक खोजने के लिए रुक गया। वे स्त्रियाँ शिव भक्त थीं और सहायता भेजने के लिए शिवजी से प्रार्थना कर रही थीं।

गुरुजी वास्तव में महाशिव हैं। निःसंदेह गुरुजी को ज्ञात होगा कि लौटते समय हमारे साथ क्या होगा। इसलिए उन्होंने हमें सावधानी पूर्वक गाड़ी चलने को कहा था। यदि सुनील अंकल और मेरी गाड़ी एक दूसरे के निकट अंतराल पर नहीं चल रही होती तो उन तीनों महिलाओं को गाड़ी में बिठाना कठिन हो जाता।

हमारे गुरुजी ब्रह्मांड के स्वामी हैं। उन्होंने हमें सहायता के लिए भी भेजा और हमारे अंतर्मन की परीक्षा भी ले ली। भक्तों को पता चले या न चले परन्तु भक्त जब किसी दुविधा में होते हैं उस समय गुरुजी सदैव उनके साथ होते हैं। उनका दिव्य स्नेह व अलौकिक आशीर्वाद हम सबके साथ सदैव होता है। जिससे हमें अपने कर्म करने में सहायता प्राप्त होती है।

मणिमहेश में शिव दर्शन दे परिवार का कल्याण

एक रात डिंपल ने स्वप्न में देखा कि हमारा परिवार उनकी आंटी सहित मणिमहेश सरोवर की यात्रा पर गया है। सरोवर में पानी बहुत कम था। डिंपल आंटी को बता रही थी कि पिछली बार जब आए थे तो सरोवर भरा हुआ था। तभी उसने कैलाश पर्वत से सरोवर की ओर आती हुई एक परछाई देखी। और वह परछाई भगवान शिव में परिवर्तित हो गई। वैसे तो यह स्वप्न था परन्तु हमें ऐसा प्रतीत हुआ गुरुजी ने हमें अपना आशीर्वाद दे दिया है। गुरुजी अपनी इच्छा से ही भक्त के स्वप्न में आते हैं। स्वप्न में भी उनके दर्शन पावन और कल्याणकारी हैं जितने कि जाग्रत अवस्था में होते हैं।

अलौकिक गुरुजी द्वारा सत्संग

कई बार गुरुजी ने फोन पर ही सत्संग सुना कर मेरा कल्याण किया है। ऐसी ही एक घटना उन दिनों की है जब मैं अहमदाबाद में था। उन्होंने मुंबई से आई एक आंटी के बारे में मुझे फ़ोन पर बताया। वे अपनी एक मित्र के साथ गुरुजी के दर्शन के लिए आईं थीं। उनकी मित्र का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। की डॉक्टरों ने उनकी बीमारी को लाइलाज बताया था। गुरुजी ने बताया कि जैसे ही वह स्त्री उनके चरणों में झुकी, उन्होंने कहा कि वह उनसे दूसरी बार मिल रही है। वे पहले भी उससे मिल चुके हैं। पर उसने इंकार कर दिया। गुरुजी के दोबारा कहने पर उस महिला ने फिर कहा कि वह गुरुजी से पहले कभी नहीं मिली है। गुरुजी ने उसे पिछले २० वर्षों की बात याद दिलाई। जहां वह रहती थी, उसके पड़ोस का विवरण तो दिया ही, साथ में उसके घर का पूरा पता भी बताया। गुरुजी ने कहा कि वे भिखारी के रूप में उसके घर भिक्षा मांगने आए थे। उन्होंने भिक्षा में पानी व भोजन माँगा था। उसने यह कहते हुए इंकार कर दिया थे, "हट्टा कट्टा तो है। कुछ काम करके क्यों नहीं कमाता।" गुरुजी ने याद दिलाया कि महिला ने उनकी बार बार की हुई प्रार्थना को निष्ठुरता से ठुकरा दिया था। गुरूजी ने बताया कि वह महिला पूर्व जन्म में बड़ी नेक और सच्ची भक्तिनी थी इस कारण वे उसे आशीर्वाद देने आए व उसका कल्याण करने आए थे। गुरुजी ने स्तब्ध सी हुई महिला से कहा यदि उस समय

वह थोड़ा सा जल व भोजन उन्हें दे देती तो उसकी व्यथा तभी समाप्त हो जाती। सर्वशक्तिमान एवं परम दयालु गुरुजी ने उस महिला को आशीर्वाद दिया। और अपनी दैव्य शक्ति से उसकी बीमारी भी ठीक कर दी।

यह प्यारा सा सत्संग सुनाने के पश्चात् गुरुजी ने कहा कि भविष्य में उनके कई शिष्य बनेंगे। मैंने उनसे पूछा कि वे उत्तर भारत से आगे तो जाते नहीं हैं तो अधिक संगत कैसे जुड़ेगी। स्वयं गुरुजी ने मेरी अबोधता पर मुस्कुराते हुए घोषणा की कि उनके असंख्य रूप हैं। उनके सच्चे भक्त किसी भी स्थान में हों उनकी पूजा कर सकते हैं। जिस रूप में वे मुझे देखना चाहते हैं और विश्वास करना चाहते हैं उसी रूप में वे मेरी आराधना करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में उनके दर्शनों के लिए भक्तों की लंबी कतारें लगेंगी।

केवल स्वामी की आज्ञा - पालन करो

एक बार गर्मियों की दोपहर थी। लुधियाना ऑफिस में मैंने दोपहर का भोजन समाप्त किया था कि गुरुजी का फ़ोन आ गया। उन्होंने मुझे निर्देश दिया कि मैं जालंधर मंदिर जाऊं,वहाँ चाय प्रसाद ग्रहण करूँ और किसी से बात किए बिना वापस चला जाऊं। बिना एक क्षण के लिए कुछ भी सोचे , मैंने अपने प्रभु की आज्ञानुसार जो उन्होंने कहा था वैसा ही किया। लुधियाना लौटने की उसी शाम गुरुजी का फ़ोन यह जानने के लिए आया कि उन्होंने मुझे करने के लिए कहा था वह करके मैं लौटा या नहीं। उन्होंने कहा कि उन्होंने मेरा कल्याण कर दिया है। हालांकि मैं यह नहीं समझ सका कि मुझे किस संकट से उन्होंने मुझे उभारा है। परन्तु मैं इस बात से संतुष्ट था कि गुरुजी की कृपा दृष्टि मुझ पर बनी हुई है।

"किन्तु - परन्तु"

गुरुजी हमेशा हमारे साथ होते हैं। वे कृपा पूर्वक हमारी रक्षा करते रहते हैं और सहायता करते हैं।हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम कोई प्रश्न किए बिना उनकी आज्ञा का पालन सम्पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा विश्वास के साथ करें।एक बार मैं चंडीगढ़ व पानीपत के रास्ते में था मार्ग की पीपली में रुकने का विचार बना रहा था। पीपली पहुंचते ही गुरुजी ने फ़ोन किया और मुझे जल्द से जल्द दिल्ली पहुँचने की आज्ञा दी। मैंने उन्हें समझने का प्रयत्न किया कि इस समय उनके पास पहुंचना कठिन होगा। गुरुजी ने मुझे डांटते हुए कहा कि भक्त जन उनके दर्शनों के लिए तरसते हैं और मैं उन्हें मन कर रहा हूँ। मैं अपने प्रभु से क्षमा याचना करते हुए गिड़गिड़ाया और दिल्ली के लिए तुरंत रवाना हो गया। रात के लगभग ९:३० पर मैं दिल्ली पहुँच गया। गुरुजी के समक्ष नतमस्तक हुआ तो उन्होंने मुझे लंगर प्रसाद ग्रहण करने का आदेश दिया। उन्होंने इसके पश्चात अगले आदेश की प्रतीक्षा करने के लिए कहा। अपने कमरे से लंगर प्रसाद खाने के बाद गुरुजी बाहर आए और एक अन्य भक्त के साथ सत्संग करने का कह कर वे सैर करने चले गए। जब वे लौटे तो आधी रात हो चुकी थी तब भी उन्होंने जाने की आज्ञा नहीं दी। और निरंतर सत्संग करते रहने के लिए कहा। अंततः रात २:३० बजे के लगभग उन्होंने मुझे एक संगत के घर रुकने के लिए कहा। और सुबह पानीपत जाने की आज्ञा दी। गुरुजी के चरणों में मेरी अटूट श्रद्धा के कारण मुझे विश्वास था कि मेरे किस संकट के निवारण हेतु गुरुजी मेरी रक्षा कर रहे हैं। बिना किसी किन्तु परन्तु को सोचे मैं अपनी आज्ञा का पालन करता हूँ। केवल वे ही ज्ञाता हैं। वे सब कुछ जानते हैं इसलिए मैं पूर्ण रूप से सुरक्षित हूँ।

मैं और सांईं एक हैं

सन २००६ में अपने जन्मदिन पर मैं गुरूजी के दर्शन के लिए नहीं जा सका था। इस कारण मैंने सांईं बाबा के दर्शन के लिए सांईं मंदिर शिरडी जाने का निश्चय किया। ५:३० सुबह के लगभग मैं शिरडी पहुँच गया। तैयार हो कर सांईं बाबा को चढ़ाने के लिए मैंने गुलाब के फूलों का गुलदतस्ता ख़रीदा। मैं मन ही मन गुरुजी से प्रार्थना कर रहा था कि मैं उनके दर्शनों के लिए ही जा रहा हूँ। मैं चाहता था कि गुरुजी मुझे कुछ ऐसे संकेत थे जिससे मुझे पता चला कि मेरी प्रार्थना स्वीकार करके सांईं मंदिर में वे मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। गुरुजी को मोगरे के फूल बहुत पसंद थे। मेरी खरीदने की बहुत इच्छा थी परन्तु मोगरे के फूल मिले नहीं। मैं मंदिर में प्रवेश कर ही रहा था इतने में मुझे मोगरे के फूलों की सुगंध आई। मैंने मुढ़ कर देखा कि एक बालक मोगरे के फूल बेच रहा था। उसे देखकर मैं प्रसन्न हो उठा और जल्दी ही उस बालक से मोगरे के फूल खरीद लिए। मुख्य हॉल में जा कर सांईं बाबा पर चढ़ाने के लिए गुलाब मैंने पुजारी जी को दे दिए। जिसे मेरी ओर से पुजारी जी ने सांईं बाबा पर दिए। फिर मैंने उसे कुछ मोगरे के फूल दिए और प्रार्थना की कि गुरुजी मेरी भेंट स्वीकार कर लें। मैं हर्षित हो उठा कि पुजारी जी ने सर्प बाबा के चरणों में मोगरे के फूल अर्पित किए। अत्यंत आनंदित हो मैंने गुरुजी की दयालुता का धन्यवाद किया। गुरुजी के शब्द मेरे कानों में गूंजने लगे कि "मैं और सांईं एक हैं।"

कुछ महीनों बाद शिरडी में फिर पहले जैसा हादसा हुआ। इस बार भेंट चढ़ाने के लिए दिए गए मोगरे के फूलों को पुजारी ने सांईं बाबा जी के चरणों में चढ़ा दिए। एक बार फिर मेरे परम दयालु गुरुजी ने मेरी भेंट स्वीकार की। मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली और धन्य समझने लगा।

गुरुजी से कुछ छुपाया नहीं जा सकता

अहमदाबाद में अपनी नौकरी के दिनों में मैं महा-कालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शनों के लिए उज्जैन शहर गया। जब मैं उस पाक धार्मिक स्थल पर प्रार्थना कर रहा था उस समय गुरुजी मुझे लगातार फ़ोन किए जा रहे थे। मेरे मंदिर से बाहर आते ही फिर उनका फ़ोन आ गया। वे कहने लगे "कर ली महाकाल शिवलिंग की पूजा। पगले महाशिव तो तेरे साथ है , और तेरे सामने है और तू मंदिरों में उसे खोज रहा है।" मैं आवक और लज्जित हो गया। परन्तु गुरुजी की सुरक्षा में होने के कारण मैं उनका बहुत ध्नयवादी भी हूँ। वे स्वयं महाशिव हैं। जिनसे कुछ भी छुपाया नहीं जा सकता। वे सर्वज्ञता हैं। वे सर्वव्यापक दैवीय अलौकिक प्रभु हैं।

सन २०१२ छोटे मंदिर में गुरुजी - जन्मोत्सव

सन २०१२ में गुरुजी के जन्मदिन के कुछ दिन पहले, उनकी एक भक्तिनी मंजू आंटी ने स्वप्न में गुरुजी को तेरह वर्ष की एक बालिका के साथ छोटे मंदिर में आते हुए देखा। उन्होंने मंजू आंटी से कहा कि वे अपना जन्मदिन मनाने छोटे मंदिर आए हैं। नरेंद्र अंकल की बेटी जन्मदिन महोत्सव देखने के लिए उनके साथ आई है। उन्होंने यह भी बताया कि यह कन्या संसार छोड़ने के बाद से ही उनके साथ है। यह सुनकर मुझे अतीव आनंद हुआ व मेरे संतोष की कोई सीमा न थी। मेरा विश्वास और दृढ़ हो गया कि मेरी बेटी को मोक्ष प्राप्त हुआ है और वह गुरुजी की छात्र छाया में है।

गुरुजी के जन्मदिन की पूर्व संध्या सभी भक्तों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। सभी भक्त शिवजी के महोत्सव रूप में गुरुजी का जन्मदिन मानते हैं।बड़ी संख्या में भक्तगण ६ जुलाई को बड़े मंदिर व छोटे मंदिर में एकत्रित होते हैं। ७ जुलाई को भी बड़ी संख्या में भक्तों का जमाव रहता है। हम मंदिर में बैठे यह मंत्रणा कर रहे थे कि जिस रंग से गुरुजी के चोले से सजाया जाए। सुधा आंटी ने सुझाव दिया कि ७ जुलाई २००६ में गुरुजी ने लाल रंग का चोला पहना था। हमें वही लगाना चाहिए। गुरुजी के आशीर्वाद से सात राग के केक काटे गए। अत्यधिक संख्या में संगत ने प्रेम व भक्ति के साथ उनका जन्मदिन मनाया।

गुरुजी के ड्राइवर छोटू अंकल ने सुझाव दिया की हलवा प्रसाद रात में ही बना लिया जाए। केवल डेढ़ किलो घी था। उसने जा कर और घी खरीदने का निश्चय किया। डिंपल ने कहा कि मिठाई प्रसाद यथेष्ठ है इसलिए हलवा प्रसाद की आवशयकता नहीं पड़ेगी।

रोचक बात यह हुई कि गुरुजी के जन्मदिन के एक दिन बाद डिंपल ने स्वप्न में देखा कि गुरुजी का हाथ अपने स्वरूप से बाहर निकल कर सभी श्रद्धालुओं को बैठने का संकेत कर रहा है। उनका दिव्य आदेश मान कर संगत बैठ गई। लाल चोला धारण किए हुए गुरुजी आए। अपने आसन पर बैठ कर उन्होंने सब भक्तों को कल्याणकारी आशीर्वाद दिया। अधिकांश भक्तजन चले जाते हैं। तब सुधा आंटी, साहनी अंकल और आंटी, डिंपल व मैं और बेरी आंटी और अंकल गुरुजी के निकट बैठ जाते हैं। उन्होने सुधा आंटी और मुझ से पूछा कि क्या वे लौट आएं ? हम दोनों ने कुछ न कह कर आदरपूर्वक शीश झुका दिए। गुरुजी ने मुस्कुराते हुए साद्दश्यता पूर्वक सुधा आंटी की प्रशंसा करते हुए कहा कि लंगर प्रसाद बहुत स्वादिष्ट बना है और कच्चे आम की हरी चटनी भी बहुत अच्छी बनी है। उन्होंने कहा कि एक वस्तु प्रसाद में नहीं थी। उन्होंने याद दिलाया कि हलवा प्रसाद नहीं था। उन्होंने यह भी कहा कि घी की मात्रा थोड़ी रहा गई है। जब सुधा आंटी और डिंपल इस बारे में बात कर रही थीं उन्होंने सुधा आंटी को चपाती बना कर उसे चटनी के साथ परोसने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा यदि हलवा प्रसाद नहीं बन पाया है तो कोई बात नहीं संगत को चटनी व रोटी रखकर भी उनका अलौकिक व दिव्य आशीर्वाद प्राप्त हो जाएगा। सुधा आंटी ने रोटियां बना कर खट्टी हरी चटनी के साथ भक्तों को परोसा।

क्षमाशील गुरुजी

गुरुजी के अपने भक्तों को आशीर्वाद देने के ढंग बड़े विचित्र होते हैं। एक बार अपने दिव्य स्वप्न में मैं शिवरात्रि परकोटे मंदिर में था। जब मैंने गुरुजी के चरण कमल स्पर्श किए उन्होंने एक सेवादार को अपनी खाई हुई थाली से प्रसाद लाने के लिए कहा। उन्होंने मुझे पूरी थाली खा कर समाप्त करने के लिए कहा। उनके चेहरे पर सौम्य मुस्कुराहट थी। उन्होंने कहा कि जिस थाली से उन्होंने स्वयं खाया है, उस थाली को कल्याणमय आशीर्वाद के साथ मुझे दे रहे हैं। ऐसा कल्याणकारी प्रसाद पाकर मैं स्वयं को भाग्यशाली समझ रहा था। मैंने प्रसन्नता पूर्वक सारा भोजन बहुत स्वाद से खाया।

कुछ सप्ताह बाद मैं बड़े मंदिर में सेवा कर रहा था। गुरुजीने फ़ोन कर मुझे तत्काल छोटे मंदिर पहुँचने की आज्ञा दी। उनकी आज्ञा से मैं भागा भागा वहाँ पहुँचा। मैंने देखा कि गुरुजी कुछ भक्तों को डांट रहे हैं। मुझे देखते ही उन्होंने मुझे भी डांटना शुरू कर दिया। इस कारण मैं बहुत दुखी और व्याकुल हो गया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि गुरुजी मुझे आगे से अपने भक्त के रूप में नहीं रखेंगे। अपने कर्तव्य अनुसार जो सेवा मेरे लिए निर्धारित की गई थी, उसे पूर्ण करने के लिए मैं बड़े मंदिर वापिस पहुँचा। १:३० बजे के करीब में छोटे मंदिर वापस लौटा। वहाँ हलवा प्रसाद बन चुका था। पंकज चन्द्रशेखर उनकले भी वहाँ उपस्थित थे। गुरुजी ने एक चम्मच प्रसाद खाया व थोड़ा सा पंकज अंकल को दिया। इसके बाद उन्होंने एक चम्मच और खाया। जब उन्होंने मेरा नाम पुकारा तो मैं भौंचक्का सा हो गया। जिस चम्मच से उन्होंने खाया था उसी चम्मच से उन्होंने मुझे हलवा प्रसाद दिया। साथ ही यह भी कहा कि शिवरात्रि के शुभ अवसर पर वे अपना असीमित आशीर्वाद मुझे दे रहे हैं।

तब तक मुझे समझ में आया कि गुरुजी अपने भक्तों से स्नेह करते हैं। यदि कभी वह नाराज होकर हम में से किसी को डांटते हैं तो वह भी हमारे कल्याण व हमारे कर्मों की शुद्धि के लिए होता है। उनके क्रोध के पीछे हम सबके लिए मृदुल भाव व स्नेह छुपा होता है जिसकी तुलना किसी अन्य प्रेम से नहीं की जा सकती। वे हमारे पालनकर्ता हैं, हमारे बंधु हैं हमारे उत्तम मित्र हैं। वे हमारे सर्वोच्च गुरु एवं हमारे ईश्वर हैं।

सत्संग में भक्तों को आशीर्वाद

गुरुजी का अथाह आशीर्वाद उनके समस्त भक्तों के लिए वरदान हैं। फिर भी यह तथ्य कई बार हृदय की गहराइयों को समझा जा सकता है। जब हम सरिता विहार में रहते थे तब निचली मंजिल में गुरुजी की एक भक्तिनी रहती थीं। उनका नाम मंजू आंटी था। उनकी पोत्री लीशिका भी गुरुजी की भक्त है। एक लीशिका बड़े मंदिर में थी तो उसे ऐसा आभास हुआ कि गुरुजी दिखाई दिए हैं। गुरुजी ने उसे मिश्रित दाल और आलू मटर लंगर प्रसाद में बनाने का निर्देश दिया है। उन्होंने लीशिका से कहा कि वे उसके घर आएंगे। लीशिका ने अपने परिवार को सारी बातें बताईं।परिवार ने सत्संग करना तय कर लिया और जो गुरुजी ने कहा था वैसा ही लंगर बनाया। यद्यपि सत्संग में ध्यान लगा कर समाधि में जाना मेरे लिए कठिन होता है, परंतु उस दिन मैं गहरे ध्यान में चला गया। और मैंने स्वयं को छोटे मंदिर में देखा। मैं उन्हें लीशिका के घर सत्संग पर चलने की प्रार्थना कर रहा था। उन्होंने दो बार मना कर दिया परन्तु तीसरी बार मेरे कहने पर उन्होंने काले रंग की कमीज और भूरे रंग की पेंट पहनी और लाल व सफेद धारियों वाले प्यूमा के जूते पहन तैयार हो गए। मैंने उनसे अपनी कार में बैठने की प्रार्थना की परन्तु उन्होंने इशारे से अपने ड्राइवर छोटू अंकल को उनकी गाड़ी लेने के लिए कहा। हम सरिता विहार पहुँचे जहाँ लीशिका रहती थी। बिजली की कौंध के सामान गुरुजी ने एक दम मुझसे पूछा कि पहले मेरे घर चलें या लीशिका के घर जाएँ। मैंने बहुत विनीत व नम्रता से प्रार्थना की कि वे पहले लीशिका के घर पधार कर एकत्रित हुई संगत को आशीर्वाद दें। वे मान गए और कहा कि वे केवल दस मिनट ही वहाँ रुकेंगे।जैसे ही वे अपने दिव्य आसन पर विराजमान हुए मेरी ध्यान की समाधि भांग हो गई। और मैंने भोग लगाने के लिए लंगर प्रसाद वाली थाली लाने की गुरुजी की आवाज सुनी। मैंने मंजू आंटी को बुलाया, वे शीघ्र ही लंगर थाली ले आईं। लंगर थाली को ढके कपडे को मैंने हटाया तो देखा कि किसी ने चपाती से दो कौर खाए हुए हैं। मेरा अटूट विश्वास था कि गुरुजी ने दो निवाले खा कर लंगर प्रसाद को अपना आशीर्वाद दे दिया है। यह निश्चय और भी पक्का हो गया जब आश्चर्यचकित सी लाशिका ने कहा कि उसने काली कमीज ,भूरी पेंट व लाल सफेद जूते पहने हुए गुरुजी को आसन पर विराजमान देखा है।

गुरूजी पुनः भाग्य लिख देते हैं

अक्षय को बचपन से ही स्वास्थ्य सम्बन्धी कई समस्याएं थीं। बचपन में पटियाला में कई बार पेट दर्द होता रहता था। कई डॉक्टरों को दिखाने पर भी उसके इलाज में कोई सुधार नहीं हो पा रहा था। कुछ का कहना था कि पथरी के कारण दर्द है। अन्य डॉक्टर पथरी के कारण दर्द बताते थे। अंततः मेरा एक मित्र उसे पटियाले से लुधियाने लेकर आया। हम उसे DMC अस्पताल में दिखाने ले गए। जब मैं और डिंपल दिल्ली से अस्पताल पहुँचे तो उसके टेस्ट चल रहे थे। आधी रात को और अन्य टेस्ट भी होने लगे। सारा समय मैं इसी विश्वास के साथ गुरुजी से प्रार्थना करता रहा कि गुरुजी का आशीर्वाद अक्षय के साथ है। अतः सब ठीक होगा।ऐसा हुआ भी ,सुबह अक्षय की तबीयत कुछ ठीक थी। और सभी टेस्ट का परिणाम सही आया था।

अगले दिन हम दोनों मेरी बहन को मिलने गए। उसके घर में एक ज्योतिषी को बैठा देखकर , अक्षय की चिंता के कारण हम उससे अक्षय के भविष्य के बारे में पूछने से अपने आप को रोक नहीं पाए। ज्योतिषी ने अक्षय की जन्म कुंडली बनाई। उसने हमें सचेत करते हुए कहा कि अक्षय का बुरा समय चल रहा है। बुरे प्रभाव को नष्ट करने के लिए हमें कुछ दान चाहिए। घर पहुँच कर हमने अक्षय को साड़ी बातें बताईं। उसने स्पष्ट रूप से ज्योतिष की बात मानने से इंकार कर दिया। उसने कहा कि गुरुजी हमारे साथ हैं , इस कारण चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

अगले दिन अक्षय ने स्वप्न में गुरुजी को हमारे घर डिंपल , मैं और उसके साथ पलंग पर बैठे देखा। गुरुजी मुझे ज्योतिषी से परामर्श करने पर डांट रहे थे। गुरुजी ने अक्षय की कुंडली उन्हें दिखाने के लिए कहा। उन्होंने वह कुंडली अपने पास रख ली और उस ज्योतिष को दिखाने के लिए एक नई कुंडली मुझे दी। स्वप्न में वही ज्योतिष आता है और अक्षय की बदली हुई कुंडली देख कर हैरान हो जाता है। गुरुजी ज्योतिषी से कहते हैं कि वे अक्षय के देवदूत हैं।इस कारण अपने भक्त का भाग्य उन्होंने पुनः लिख दिया है। ईश्वर के अतिरिक्त और कौन ऐसा कर सकता है।

गुरुजी के चमत्कारपूर्ण मार्ग

गुरुजी सदैव कृपा पूर्ण दृष्टि से हमें देखते रहते हैं। अपने सुख के दिनों में चाहे हम इसका अनुभव न कर पाएं परन्तु जब भी हम पर किसी तरह का संकट आता है तब उनकी दिव्य शक्ति हमेशा हमारी रक्षा करती है। यह तथ्य हम भली भांति समझते हैं।

एक रात्रि गुरुजी ने स्वप्न में मुझे दर्शन दिए। वे फ़ोन पर मुझे कह रहे थे कि वे कुछ भक्तों के साथ मेरे घर आ रहे हैं।उन्होंने मुझे २५ लीटर दूध व २५ दर्जन केले खरीदने का आदेश दिया। हम उन दिनों लुधियाना में रहते थे। उन दिनों वहाँ इतनी संगत नहीं होती थी। इसलिए डिंपल व मैं हैरान थे। अंततः डिंपल व मैंने तय किया कि हम दूध व केले खरीद कर जरूरतमंदों में बाँट देंगे।

कुछ दिनों पश्चात मैं एक समारोह में गया हुआ था। मेरे साथ एक पुजारी जी बैठे हुए थे। मैंने उन्हें अपने इस दिव्य स्वप्न के बारे में बताया। उन्होंने मेरी जन्म तिथि पूछ कर मेरी कुंडली बनाई। उन्होंने कहा कि कुंडली के अनुसार मेरे जीवन का कठिन समय चल रहा है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह प्रभावित भी हुआ कि गुरुजी को यह ज्ञात था। इसलिए उस दुष्ट दैवीय शक्ति का प्रभाव मुझ पर व मेरे परिवार पर कम हो सके। इसलिए यह दान मुझसे दिलवाया। अपनी महानता के अनुरूप मेरे जाने बिना भी गुरुजी ने मेरे कष्ट दूर किए हैं। मेरे पास उनके आशीर्वादों की महिमा का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं।

शिवलिंग दर्शन

गुरुजी हमेशा कहा करते थे जब तक वे न चाहें किसी के स्वप्न में नहीं आते। किसी के लिए यह संभव नहीं है कि वह उन्हें स्वप्न में देख सकें। इस कारण यदि वे किसी व्यक्ति स्वप्न में दर्शन देते हैं तो उनके स्वप्न

के दर्शन को वास्तविक मान कर आदर करना चाहिए। हो सकता है उनके पावन दर्शनों का महत्त्व हम उस समय न समझ पाए हों परन्तु किसी न किसी रूप में हमें उनका आशीर्वाद ही मिला है।

डिंपल हमेशा अमरनाथ में शिवलिंग के दर्शन के लिए जाना चाहती थी।सर्वज्ञता गुरुजी ने अपनी अलौकिकता से कई बार स्वप्न में उसकी यह ीचा पूर्ण की है। अपने एक स्वप्न में उसने देखा कि शिवलिंग समुद्र के बीच में स्थित होने के कारण भक्त जन वहाँ जाने से डर रहे हैं। गुरुजी के आशीर्वाद से जब हमारी बारी आई तो वहाँ बहुत कम पानी रह गया था। अक्षय , डिंपल और मैंने शिवलिंग के बड़े सुंदर दर्शन किए। हमने प्रार्थना की और परिक्रमा भी की।

नैनीताल में नदी तट पर रिसोर्ट

एक स्वप्न में डिंपल ने देखा कि गुरुजी हमारे परिवार व कुछ मित्रों के साथ नैनीताल गए हैं। जिस रिसोर्ट में हम ठहरे हुए थे वह नदी तट पर था व सुंदर आम के वृक्षों से घिरा हुआ था गुरुजी ने आम खाने की इच्छा व्यक्त की। गुरुजी की इच्छा पूरी करने हेतु अक्षय पेड़ पर जैसे ही चढ़ने लगा , उसे आम से भरी टोकरी लिए आता दिखाई दिया। गुरुजी ने प्रसन्नता पूर्वक आम खाए। और वह शुभ स्वप्न समाप्त हो गया। गुरुजी हमारे जीवन का केवल भाग नहीं हैं , वे हमारा जीवन हैं। हम हर सांस उनके आशीर्वाद के कारण लेते हैं। और उनकी इस म्हणता के हम ऋणी हैं।

जैसी यात्रा गुरुजी ने हमारे भाग्य में लिखी थी वैसे ही हुई। गर्मियों की छुट्टियाँ होने के कारण सभी होटल भरे होने पर भी हमें एक रिसोर्ट में ठहरने का स्थान मिल गया। यह वही रिसोर्ट था जिसे गुरुजी ने डिंपल को स्वप्न में दिखाया था। उसके एक ओर नदी भी बह रही थी।हम वहाँ तीन दिन ठहरे। हर रात गुरु जी के पावन दर्शन हमें स्वप्न में होते थे। हम एक नई स्फूर्ति लेकर घर लौटे।

मुक्ति दाता गुरुजी

हमारे आनंदमय अनुभव ने हमें फिर से नैनीताल जाने की प्रेरणा दी। और डिंपल ने स्वप्न में देखा कि इस बार भी गुरुजी हमारे साथ हैं। वह गुरुजी को खिलाने के लिए कद्दू लेकर आती है और कहती है कि यह उनके स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। उसी रात सुधा आंटी ने स्वप्न में देखा कि एक विचित्र सा बुलबुला उनके चारों ओर चक्कर काट रहा है। वह स्वयं को अपने पुराने घर में देखती हैं और मधु संजय के लिए चीखें मार रही है। वे डर के मारे एक दम उठ जाती हैं। थोड़ी देर में उनकी घबराहट कम होती हैं।

हमें उस समय तक कुछ भी समय नहीं आया। हम सब आग जला आराम से गुरुजी की महिमा की चर्चा कर रहे थे। तभी रिसोर्ट का मालिक भी आ गया। उसने बताया कि पहले यह रिसोर्ट एक हवेली हुआ करता था। मधु नामक एक गायिका यहाँ रहती थी व उसकी मृत्यु भी यहीं हुई थी। रिसोर्ट के मालिक ने उसका नाम संजय बताया तो हम सब हैरान हो गए। हमें विश्वास हो गया कि गुरुजी ने मधु की आत्मा को मुक्ति प्रदान कर दी है। उनकी महिमा हमारी समझ से परे है। केवल उन्हें ही ज्ञात है कि कैसे कब और कहाँ किसका कल्याण करना है और वे ऐसा ही करते हैं।

हमारी पालमपुर की शुभ - यात्रा

एक बार सुधा आंटी हमें व कुछ भक्तों को एस्टेट पालमपुर में ले गई। गुरुजी ने कुछ दिन वहाँ निवास कर उस स्थान को पावन कर दिया था। हमने पालमपुर जाने के लिए रात्रि बस ली। हम सब प्रसन्नता से बातें करते व गाना गाते समय बिताने लगे। सुबह छः बजे के लगभग गुरुजी के एक भक्त ने एक सहयात्री को फ़ोन कर बताया कि गुरुजी ने उसे स्वप्न में दिखाया कि कई संत व भक्तजन एक साथ बस में जा रहे हैं। उनमें एक सिख दंपत्ति भी है। हमें कोई संदेह नहीं था कि जो बस उसने स्वप्न में देखी थी , उसमें एक सिख दम्पति हमारे साथ यात्रा कर रहा था। गुरुजी ने भक्त को स्वप्न में यह भी दिखाया कि हम सब एक पुराने मंदिर में गए हैं। और वास्तव में अगले दिन गुरुजी के आशीर्वाद से ऐसा ही हुआ।

अपने कमरे में हम सब ने गुरुजी के लिए पलंग लगाया और प्रार्थना के पश्चात सोने चले गए। अगले दिन हम चामुंडा देवी के दर्शन के लिए चले गए। फिर वहाँ के शमशान घाट भी गए। ऐसी मान्यता थी कि वहाँ जो भी जाता है उसके लिए शुभकारी होता है।ऐसा कहा जाता है कि वहाँ प्रतिदिन एक शव जलाया जाता है। यदि किसी दिन कोई शव नहीं आता तब उस दिन लकड़ी का नकली शव बनाकर उसका दाह संस्कार किया जाता है। दोपहर के भोजन के बाद सभी लोग दो समूहों में बंट गए। एक समूह चाय पीने के लिए गया व दूसरा "कैफ़े कॉफी डे" ढूंढने लगा। दूसरा समूह कुछ कदम ही चला होगा कि इमारत अचानक ढह गई। व ईंट पत्थर जमीन पर गिरने लगे। भाग्यवश कुछ ही भक्तों को हल्की सी चोट आई और कोई बहुत ज्यादा घायल नहीं हुआ। गुरुजी ने हमें बहुत बड़ी दुर्घटना से बचा लिया। रिसोर्ट पहुँचने पर हम सबने गुरुजी की प्रार्थना कर हमें बचाने के लिए उनका बहुत धन्यवाद किया। गुरुजी ने अपनी अद्भुत और मोहक सुगंध फैला कर हमें अपनी उपस्थिति का अनुभव कराया। उनका यह उपहार पाकर हम सबका जीवन धन्य हो गया।

अगले दिन सुधा आंटी हमें अपने एस्टेट दिखाने ले गई। उन्होंने वहाँ भिक्षुकों के ठहरने के लिए एक आश्रम बनाया हुआ था। काफी समय से वहाँ किसी के न ठहरने के कारण शिवलिंग पर धूल जम गई थी। हम सबने मिलकर शिवलिंग के सारे स्थान की सफाई की। इसमें एक श्मशान स्थल भी सम्मिलित था। हमें समझ नहीं आ रहा था कि गुरुजी हमें नित्य उस स्थान पर क्यों भेजते हैं जहाँ श्मशान स्थल होता है। परन्तु इतना हमें निश्चित ज्ञात था कि वे हमारे कल्याण के लिए ही कर रहे हैं। आखिरकार वे हमारे गुरुजी हैं हमारे भगवान हैं। और उन्हें ज्ञात है कि हमारे लिए कहाँ,क्या और किस समय सब सही है।

गुरुजी ने हमें नैना देवी मंदिर भेजा

डिंपल के एक स्वप्न में गुरुजी ने डिंपल को माता नैना देवी मंदिर की तीर्थ यात्रा करने के लिए कहा। और उसे चावल व राजमा का प्रसाद दिखाया। हम एक अन्य भक्त परिवार के साथ गए। हमने एक रात आनंदपुर साहब रुक कर अगली सुबह नैना देवी मंदिर जाने का निर्णय किया। हमने रहने की व्यवस्था किसी भी होटल में पहले से नहीं कराई थी। फिर भी एक गेस्ट हाउस में हमें चार कमरे मिल गए। सुबह गेस्ट हाउस के मालिक ने बताया कि किसी ने फ़ोन करके चार वातानुकूलित कमरे हमारे लिए पहले से ही बुक करवा लिए थे। निश्चय ही वह हमारे पूजनीय गुरुजी हो थे जो अपने भक्तों की छोटी से छोटी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखते हैं। उस दिन मंदिर में माता के सुंदर दर्शन पा कर हम धन्य हो गए। और उसके पश्चात हम सब घर लौट आए। हम समझ नहीं पाए की गुरुजी हमें वहाँ क्यों भेजना चाहते थे। परन्तु सांगत होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि किसी किन्तु या परन्तु के बिना उनकी आज्ञा का पालन करें।

बैंगलोर में अक्षय की कर्म शुद्धि

गुरुजी की असीम कृपा से हमारे पुत्र अक्षय को होटल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट बैंगलोर में स्थान मिल गया। सौभाग्य से उसे वहाँ संगत भी मिल गई और वह नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संग में जाने लगा।
अप्रैल २०१४ में एक दोपहर अक्षय बहुत थका हुआ कॉलेज से घर लौटा। उसके सोते ही गुरुजी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए। उन्होंने कमीज व पेंट पहनी हुई थी। वे अक्षय के पलंग के कोने में बैठ गए। उन्होंने अक्षय से बातें करनी आरम्भ कर दीं। उन्होंने उसे सचेत करते हुए कहा कि उसका कठिन समय चल रहा है परन्तु उसे चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। गुरुजी का आशीर्वाद उसकी रक्षा कर रहा है। उन्होंने कहा है कि अक्षय के समय के दुष्प्रभाव को उन्होंने कमरे में रखे पंखे व ट्यूबलाइट में डाल दिया है। उन्होंने अक्षय को आदेश दिया कि वह पंखे और ट्यूबलाइट की ओर देखे। अक्षय ने देखा कि लाइट व पंखे से वास्तव में चिंगारियाँ निकल रही थीं और उसमें आग लग गई थी। गुरुजी ने अक्षय को अस्पातल भर्ती होने के लिए कहा। माता पिता वहाँ नहीं होने के कारण चिंता नहीं करने के लिए कहा। उन्होने कहा कि वे अक्षय के साथ हैं। गुरुजी ने डॉक्टरों की अनुमति के बिना अस्पताल छोड़ने के लिए भी मना किया। इसके पश्चात गुरुजी अक्षय के कमरे से चले जाते हैं। जागने पर अक्षय ने लेत व पंखे से चिंगारियाँ निकलती देखीं। उसने देखा कि फ़ोन का चार्जर भी जल गया था। सात बजे के करीब उसे तेज पेट दर्द होने लगा। पड़ोस के डॉक्टर की सलाह से दवाई लेने पर भी उसकी हालत ज्यादा बिगड़ गई। अंत में अपने एक मित्र के साथ फोर्टिस अस्पताल पहुँच कर उसने मुझे फ़ोन किया। उसने अपनी साड़ी परिस्थिति मुझे बताई और गुरुजी के स्वप्न के बारे में भी बताया। चिकित्सा के खर्चे के लिए मैंने उसके बैंक के खाते में पैसे भिजवाए। अक्षय ने मुझे समझाते हुए चिंता न करने के लिए कहा। उसने कहा कि गुरुजी मेरे साथ हैं इसलिए मैं चिंता न करूँ।

अगली सुबह अक्षय का पेट दर्द काम हप गया। और गुरुजी की कृपा से सभी टेस्टों के परिणाम भी ठीक आए। सभी डॉक्टर हैरान हो गए थे। कुछ समय तक और उसका निरीक्षण करने के बाद उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। गुरुजी की कृपा और आशीर्वाद से अक्षय का स्वास्थ्य ठीक है।

किसी समस्या आने से पूर्व या जीवन में कोई बढ़ा का सामना करने से पूर्व ही संगत को गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है।इसे चाहे संयोग समझें परन्तु गुरुजी अपनी इच्छा व अपनी पसंद हमेशा सिद्ध करते हैं। गुरुजी का स्वप्न में अक्षय से बातें करना ,पंखे व लाइट में चिंगारियाँ निकलना और वास्तव में अक्षय का अस्पताल में रहना ;यह सारी बातें अक्षय को आशीर्वाद देने की गुरुजी की योजना थी। अक्षय के कर्मों की शुद्धि में गुरुजी की सहायता थी। ईश्वर के अतिरिक्त और कौन इतना पूर्ण व सटीक हो सकता है।

कैलाश मानसरोवर की यात्रा

गुरुजी सदैव हमारी इच्छाओं और आवश्यकताओं के प्रति जागरूक रहते हैं। मेरी पत्नी डिंपल व मैं सदा कैलाश मानसरोवर जाने के इच्छुक थे। जब भी मैं गुरुजी के समक्ष अपनी इच्छा व्यक्त करता था , गुरुजी का यही उत्तर होता था कि ईश्वर हमारे भीतर है। उसे प्राप्त करने के लिए हमें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। एक रात्रि गुरुजी ने डिंपल को स्वप्न में अपने पावन दर्शन दिए। स्वप्न में ही उन्होंने हमें कुछ अन्य भक्तों के साथ कैलाश मानसरोवर में में एक विवाह में सम्मिलित होने की आज्ञा दी। हम विवाह समारोह में गए। तत्पश्चात पवित्र धाम के दर्शन किए। रात्रि को एक छोटे कमरे में हम सब सोए। आधी रात को एक संत ने हमारा द्वार खटखटाया। एक छोटी सी पुड़िया देते हुए उसने कहा कि इसमें पवित्र धाम की पावन मिटटी है। इस प्रकार गुरुजी ने हमारी कैलाश मानसरोवर जाने की अभिलाषा स्वप्न में ही पूर्ण कर दी। जैसे यह कोई बड़ा उपहार न हो , गुरुजी ने कुछ दिनों पश्चात् डिंपल को फिर स्वप्न में दर्शन दिए , स्वप्न में वे स्वयं कैलाश मानसरोवर पर खड़े हो हमें अपना दिव्य आशीर्वाद दे रहे हैं।

गुरुजी द्वारा मुझे देवी दर्शन

सितम्बर २०१४ में नवरात्रि की पूर्व रात्रि में मैंने स्वप्न में गुरुजी को अपने आसन पर विराजमान देखा। और मैंने देवी माँ के नव रूपों को छोटे मंदिर में प्रतीक्षा करते हुए देखा। गुरुजी ने मुझे बताया कि नवरात्रि उत्सव की पूर्व रात्रि में ये सभी आदरणीय देवियाँ उनका दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए यहाँ आई हैं। गुरुजी ने अपने पावन दर्शन देकर मुझे तो धन्य किया ही साथ में अपनी महानता से सुखदाई कल्याणमयी नव देवी माँ के दर्शन भी कराए।

गुरुजी के आशीर्वाद से अक्षय का कद बड़ा

हमने नवम्बर २००६ में अक्षय का बारहवाँ जन्मदिन गुरुजी के साथ मनाया। सुबह गुरुजी से आज्ञा लेते समय उन्होंने पूछा “अक्षय कितने साल का हो गया है”? अक्षय और मैं दोनों सकुचा से गए क्योंकि अक्षय का कद अपनी आयु के अनुसार बहुत छोटा था। फिर गुरुजी ने मेरी आयु पूछी। मेरे बताते ही उन्होंने घोषणा कर दी “दादी पर जायेगा।” फिर उन्होंने मुझसे कहा “तेरे से बड़ी हाइट इसकी होगी।” उन्होंने मुझे कहा कि जब भी मैं दिल्ली उनके दर्शनों के लिए जाऊँ साथ में अक्षय को भी लेकर आऊं। गुरुजी ने कहा कि जब भी अक्षय उनके आशीर्वाद के लिए दिल्ली आएगा उतनी बार उसका कद बढ़ता जाएगा। निश्चित ही गुरुजी की कृपा अपना काम कर रही थी। मुझे प्रसन्नता है कि गुरुजी के आशीर्वाद से अक्षय का कद मुझसे लम्बा है।

गुरुजी द्वारा अक्षय व उसके मित्रों की सुरक्षा

सन २०१३ में अपनी १२ कक्षा के बोर्ड की परीक्षा से अक्षय स्कूल के पहले व बाद में कोचिंग में जाता था। एक कोहरे भरी सुबह उसने व उसके मित्रों ने सुबह का नाश्ता बाहर करने का विचार बनाया। अक्षय जैसे ही कार की पिछली सीट पर बैठा उसे याद आया कि वह अपना पर्स भूल गया है। वह तुरंत अपना बटुआ लेने के लिए भागा। कुछ क्षणों में ही उसने जोरदार धमाके की आवाज सुनी। उसने देखा कि मित्रों की कार को पिछली ओर से किसी अन्य कार ने टक्कर मार दी है। वह डर गया कि उसके मित्रों को बहुत चोट आई होगी। वह गाड़ी में बैठे मित्रों को देखने लगा। .गुरुजी की असीम कृपा से मित्रों ने शरीर पर तनिक सी खरोंच भी नहीं आई थी। सभी सुरक्षित थे। अक्षय हैरानी से वहाँ खड़ा था तभी उसे गुरुजी की दैवीय सुगंध आने लगी। तब उसे पता लगा कि यदि वह बटुआ लेने न गया होता तो दुर्घटना के समय वह पिछली सीट पर बैठा होता। निसंदेह ही हमारे कृपालु व दयावान गुरुजी ने अक्षय व उसके मित्रों की भयंकर दुर्घटना से रक्षा की है।

महाशिव के कल्याणकारी दर्शन

जनवरी २०१७ में गुरुजी से दूरबोध के साथ मेरी पत्नी डिंपल ने देखा कि सत्संग के समय एक महिला भक्त आकर गुरुजी के आसन पर बैठ गई हैं। जब डिंपल ने उस महिला को उस पावन आसन से उठने के लिए कहा तो वह महिला अकड़ती हुई वहाँ से चली गई और एक बालक आकर उस आसन पर बैठ गया। डिंपल ने डांटते हुए उस बालक को भी पवित्र आसन से उठने के लिए कहा। कुछ ही देर में गुरुजी आकर आसन पर बैठ जाते हैं। गुरुजी भक्तों की अज्ञानता व अनादर पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हैं। एक आंटी गुरुजी को भेंट देने के लिए मग ले कर आती हैं।मग पर हृदय की आकृति चित्रित है।मग में डबल रोटी का एक टुकड़ा ,१२ रूपए और एक मठरी रखी होती है। गुरूजी डिंपल को मग में रखी वस्तुएँ आशीर्वाद के साथ देते हैं। इसके पश्चात वह स्त्री डबल रोटी के कई टुकड़े लेकर आती है , जिसे गुरुजी आशीर्वाद के साथ सारी संगत में बाँट देते हैं।

इसके पश्चात गुरुजी मेरे पास आते हैं और मेरा शीश अपनी धोती झुका लेते हैं। मैं गुरुजी के दिव्य शरीर से आती हुई अलौकिक सुगंध से मंत्रमुग्ध और ऊर्जा से भरा जा रहा था , उन्होंने डिंपल को भी अपने महाशिव रूप में दर्शन देकर धन्य किया। इसी के साथ अपने मानव रूप में शिवलिंग के दर्शन भी कराए। उस अलौकिक रूप को डिंपल सहन न कर पाने के कारण मूर्छित हो जाती है। होश आने पर गुरुजी को अपने सामने खड़ा देखती है। गुरुजी डिंपल से और पुत्र प्राप्ति के बारे में प्रश्न करते हैं। डिंपल केवल कृतज्ञता और विनीत भाव से सर झुका कर अक्षय को पाने का धन्यवाद करती है और प्रार्थना करती है कि गुरुजी का आशीर्वाद सदा अक्षय पर बना रहे।

यह दूरबोध है ,संयोग नहीं

गुरुजी अपने भक्तों से सदैव कहा करते थे चाहे हम शारीरिक रूप से उनके पास न हों , परन्तु वे आएँगे और दूरबोध द्वारा हमसे वार्तालाप भी करेंगे। वे हमेशा दृढ़ पूर्वक कहते थे कि हमारे स्वप्नों में उनके दर्शन, मात्र संयोग नहीं हैं। वे हमारे स्वप्नों में तभी आते हैं जब वे हमसे सीधे संपर्क करना चाहते हैं। वे हमेशा हमें याद दिलाते थे कि उनका स्वप्न व उनका दिखाई देना भ्रम न हो कर टेलीपैथी का ही रूप है। चाहे वह आशीर्वाद देने के लिए हो या कोई महत्वपूर्ण संदेश हमें देना चाहते हों।

मार्च २०१७ में मैंने दूर मनोबोध से स्वयं को एक कमरे में गुरुजी की सेवा करते हुए देखा। वे अपने आसन पर बैठे हुए थे। मेरे स्वामी ने मुझे पीठ पर मालिश करने की आज्ञा दी। जैसे ही मैं मालिश करने लगा मैं आश्चर्यचकित हो उठा और मुझे यह देखकर विश्वास ही नहीं हुआ कि उनकी रीढ़ की हड्डी अंदर की ओर गोलाकार है। मेरे अंतर्भावों को समझकर उन्होंने कहा कि बहुत से भक्तों के बुरे कर्मों को ुत्रोहनने आत्मसात किया है। उनकी नकारात्मकता अपने ऊपर ले लेने के कारण उनकी रीढ़ की हड्डी अंदर की ओर धंस गई है। गुरुजी बहुत दुखी व निराश लग रहे थे। उन्होंने मुझे बताया कि इस व्यावहारिक और स्वार्थी समय के कारण संगत अपनी भूलें सुधारती नहीं है और ईश्वर के नाम पर दिन प्रति खिलवाड़ बुरी तरह से बड़ रहा है।

निश्चय ही हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे कई बुरे कर्म गुरुजी अपने ऊपर ले लेते हैं। और हमारे लिए कुछ ही कार्मिक भुगतान छोड़ देते हैं।

गुरुजी की महानता की दिव्य ज्योति सारे विश्व में फैली हुई है। सम्पूर्ण विश्व के कई देशों के शहरों में सत्संग होने लग गए हैं। गुरुजी जब अपने मानवातार में थे तो कई बार कहा करते थे जैसे जैसे वर्ष बीतते जाएंगे बड़े मंदिर में सत्संग करने वाली संगत की संख्या भी बढ़ती जाएगी। परन्तु उनमें से कुछ ही उनके अन्य भक्त व श्रद्धालु होंगे जो सच्चाई व ईमानदारी से उनके बताए हुए मार्ग पर चलेंगे।

१३ अप्रेल २०१७ की बैसाखी की सुबह डिंपल ने स्वप्न में देखा कि गुरुजी लुधियाना में एक भक्त के घर पावन सत्संग कर रहे हैं। डिंपल ने देखा कि गुरुजी असंतुष्ट से होकर कह रहे हैं कि भक्तों की इतनी अधिक संख्या में आने के कारण उनके लिए शांति से बैठने के लिए कोई स्थान नहीं है। गुरुजी घर के अन्य कमरों को देखते हुए जाते हैं और डिंपल उनके पीछे पीछे चल रही है।
और अंततः एक खाली कमरे में बैठने का वे निश्चय करते हैं। गुरुजी का मन लंगर खाने का नहीं था इसलिए वे डिंपल को दाल व चावल बनाने की आज्ञा देते हैं। उनकी आज्ञानुसार डिंपल दाल व चावल पकाती है। प्रेशर कुकर खोलने पर देखती है कि दाल व चावल की अपेक्षा खिचड़ी गई है। गुरुजी यह बताने पर वे कहते हैं कि वे सहर्ष खिचड़ी खा लेंगे और उन्होंने खाई भी। खाते समय उन्होंने फिर दोहराया कि आने वाले वर्षों में पूर्ण रूप से समर्पित भक्त काम हो जाएंगे। यद्यपि उनका आशीर्वाद पाने वाले भक्तों की संख्या प्रति मिनिट बढ़ती जाएगी।

हमारे गुरुजी सम्पूर्ण शाश्वत ,अनंत, अलौकिक, दैवीय, सत्य के साक्षात अवतार हैं।हमसे केवल यही अपेक्षा रखते हैं की हम उनके नेक ईमानदार और विनम्र मनुष्य बन सकें। और विश्व में निस्वार्थ भाव से सत्य व अच्छाई फैलाएं। उनके बताए हुए मार्ग पर सच्चाई पूर्वक चलने से हमें अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होगा।

गुरुजी के आशीर्वाद से हमारी ऑस्ट्रेलिया यात्रा

गुरुजी अपने भक्तों से बहुधा कहा करते थे , "अपने गुरु का श्वास श्वास शुकराना किया करो , तुम लोगों को ज्ञात नहीं है मैं तुम्हारा कितना ध्यान रखता है।" जब उनके कुछ भक्त जीवन के कठिन समय से गुजर रहे होते हैं और उन्हें कई विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, तब अक्सर गुरुजी उन्हें एक शहर या देश से दूसरे देश में अस्थाई या स्थाई रूप से जाने के लिए कहते थे।जब वे अपने मानवातार रूप में थे तब वे हमें कहते थे कि वे भक्तों को स्थान बदलने के लिए इस कारण से कहते थे ताकि वे उन्हें आशीर्वाद दे सकें और उनके कष्ट व संकट बकी विपरीत परिस्थिति को उचित समय पाकर भक्तों के अनुकूल कर सकें।

सितम्बर २०१६ में मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी। हमने अक्षय के पास ऑस्ट्रेलिया जाने का विचार बनाया। परन्तु मेरे पास आय का साधन प्रदर्शित करने के लिए वेतन के साक्ष्य का कोई दस्तावेज नहीं था। इस कारण वीसा मिलने में कठिनाई आ रही थी। मेरे एक मित्र ने मुझे लुधियाना के ट्रेवल एजेंट के बारे में बताया। मैं अपनी पत्नी के वीसा आवेदन पत्र के लिए गया था परन्तु ट्रेवल एजेंट ने मुझे भी आवेदन देने के लिए कहा। आश्चर्य की बात है कि हम दोनों को एक साल का वीसा मिल गया।

२० मई २०१७ को हमने ऑस्ट्रेलिया के लिए रवाना होना था। जाने से एक रात पहले गुरुजी ने दूर मनोबोध (टेलीपैथी) द्वारा मुझे और डिंपल को आशीर्वाद दिया। डिंपल ने स्वप्न में देखा कि गुरुजी थैले के भीतर देख रहे हैं कि डिंपल ने ऑस्ट्रेलिया में क्या खरीदारी की है। मेरे स्वप्न में उन्होंने मुझे अपने चरण कमलों की सेवा दी और कहा शेष सब कुछ गुरुजी पर छोड़ दो।

हमारे रवाना होने से एक दिन पहले हमारे बेटे अक्षय ने इंटरनेट पर दिल्ली से हांगकांग की यात्रा के दौरान हमारी सीट खिड़की व कोने वाली करवा दी। परन्तु आगे सिडनी तक की यात्रा के लिए वह खिड़की व मध्य वाली सीट ही सुरक्षित कर सका। मैंने उसे कहा कि जितना उससे बन पड़ा है उसने कर दिया है। अब वह हमारी आरामदेह यात्रा की चिंता गुरुजी पर छोड़ दे। जब हमने हांगकांग से सिडनी की यात्रा के लिए हवाई जहाज लिया तो जहाज यात्रियों से पूरी तरह भरा हुआ था। केवल हमारे साथ की कोने वाली सीट ही खाली थी। हमने उस सीट का प्रयोग किया व हमारी यात्रा बहुत आरामदायक रही। यह सब गुरुजी के पुण्य प्रताप के कारण ही संभव हो सका। गुरुजी करुणा व दयालुता से अपनी संगत को हर क्षण देखते रहते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में,डिंपल व मैं एक रात, गुरुजी के भक्त के घर रहे। तड़के सुबह गुरुजी का स्वरुप हम पर गिरा तो हमने बड़े आदरपूर्वक उसे टांग दिया। जागृत होने से पहले मैंने स्वप्न में देखा कि डिंपल धीमन आंटी के घर सत्संग हो रहा है। मैं उन्हें सलाह दे रहा हूँ कि दूसरी मंजिल पर बहुत जगह है , वहाँ सत्संग कर लेते हैं। मैंने गुरुजी को उनके घर पर बैठे हुए देखा। मेरी पत्नी और अन्य महिला भक्त उनके चरण कमलों के पास बैठे हुए हैं। गुरुजी मेरी पत्नी से पूछते हैं कि इसके क्रेडिट कार्ड पर व्यय करने की अधिकतम राशि कितनी है ? डिंपल उन्हें रू २००००० / बताती है। गुरुजी कहते हैं कि आज के बाद यह राशि रू ८००००० / हो जाएगी। दूसरी स्त्री यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गई। गुरुजी ने उस महिला को बताया कि वे अपने भक्तों को अनेक व भिन्न भिन्न रूप में आशीर्वाद देते हैं। जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। हमें समझ नहीं आया कि कौन सी मात्रा गुरुजी ने बड़ाई है , परन्तु किसी भी शिष्य का गुरुजी से प्रश्न करना अनादर है। उसे गुरुजी के आदेश को उपकार व आशीर्वाद समझ कर सदा सदा धन्यवाद ही देना चाहिए।

२८ जून २०१७ को हम भारत लौट रहे थे। हवाई जहाज चढ़ने के दस मिनट पहले घोषणा हुई कि कुछ तकनिकी समस्या के कारण , उसके ठीक होने के बाद ही जहाज उड़न भरेगा। एक घंटे की संभावित देरी की अपेक्षा जहाज को उड़न भरने में तीन घण्टे लग गए। इस कारण हांगकांग से दिल्ली यात्रा की उड़न हमसे छूट गई। हमें बैंगलोर जाने वाली उड़न में चढ़ाया गया। जहाँ से हमने दिल्ली यात्रा की उड़न भरी। डिंपल व मैंने उसे गुरु जी का आशीर्वाद ही माना। क्योंकि वे जो भी करते हैं अपने भक्तों के भले के लिए ही करते हैं।२९ तारिक को हमने दिल्ली में हुए एक सत्संग में भाग लिया। अगले दिन लुधियाना के लिए रवाना हो गए। लुधियाना जाते समय गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। परन्तु गुरुजी के आशीर्वाद से हम दोनों में से किसी को भी चोट नहीं लगी और हम सुरक्षित लुधियाना पहुँच गए। गुरुजी के प्रति अडिग एवं अटूट विश्वास तथा सम्पूर्ण समर्पण ही हर विपरीत परिस्थिति का सामना करने में सहायक सिद्ध होता है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि अपने प्रभु गुरुजी की दिव्य सुरक्षा में हम सदैव सुरक्षित हैं।

गुरुजी द्वारा अक्षय की अन्य दुर्घटना में रक्षा

एक बार सिडनी में दिन के यातायात के अत्यंत व्यस्त समय में अक्षय कार चला रहा था। जब वह लाल बत्ती के सिग्नल पर रुका तो एक व्यक्ति ने कार की खिड़की खटखटा कर कार के एक टायर की जांच करने के लिए कहा क्योंकि एक टायर की हवा काम थी। अक्षय ने हरी बत्ती होते ही चौराहा पार करके कार रोकी व टायर की जांच की। किसी भी टायर में पंचर नहीं था। अक्षय ने अनावश्यक देरी होने के कारण उस अनजान व्यक्ति को गाली निकाली। कुछ दूर आगे जाने पर उसने दो कार व एक टैंकर के दुर्घटनाग्रस्त देखा। टैंकर से तेल बह कर साड़ी सड़क पर फैला हुआ था। यह देखकर अक्षय को झुरझुरी सी आ गई , उसने सोचा कि यदि वह अनजान व्यक्ति उसकी गाड़ी न रोकता तो दुर्घटनाग्रस्त गाड़ियों में से एक गाड़ी उसकी होती। गुरुजी ने अपनी असीम कृपालुता से अक्षय की प्राण रक्षा की। उस अनजान व्यक्ति के लिए नकारात्मक सोच व अपशब्द कहने अपराधबोध भी हुआ। गुरूजी का अत्यंत धन्यवाद करते हुए उसने अपने अपराध के लिए क्षमा याचना की।

गुरुजी सदैव हमारे साथ होते हैं। यह हम भक्तों की अज्ञानता है कि हम भूल जाते हैं। गुरुजी जहाँ भी हों वे हर समय हम भक्तों का ध्यान रखते हैं।

गुरुजी मानव रूप में भगवान शिव हैं

गुरुजी के शब्द में , “मैं ही दिव्य ज्योति हूँ और मैं ही ॐ और एक ओंकार हूँ। विष्णु एवं महेश की उत्पत्ति मुझ से हुई है। न मेरा जन्म होता है , न कभी मृत्यु होती है। मैं अपनी इच्छा से इस धरती पर आता हूँ , और अपनी इच्छा से ही जाता हूँ। आप सब बड़े भाग्यशाली हैं जो मेरी शरण में हो। मैं तो परमात्मा हूँ। न मुझ से पहले कोई था , न मेरे आगे कोई होगा।पहले भी मैं था , अब भी मैं हूँ , और आगे भी मैं ही होऊँगा।न मैंने किसी से गूढ़ मंत्र लिया है , न किसी को दिया है। मैं तो आप लोगों को ब्रह्म से निकालने के लिए और जागृत करने के लिए आया हूँ।

आभार

सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण है कि मैं अत्यंत विनम्र भाव से अपने प्रभु , मेरे पालक , मेरे मार्गदर्शक , मेरे अलौकिक पिता गुरुजी का धन्यवाद है। जिनके आशीर्वाद के बिना अस्तित्त्व ही नहीं होता।

मैं श्री मस्तरामजी (बापू जी) और स्वर्गीय माताजी का बड़ी विनम्रता से अभिवादन करता हूँ। उन्होंने महाशिव के अलौकिक अवतार को गुरुजी के रूप में जन्म दिया। मैं अपनी श्रेष्ठ मित्र अपनी पत्नी डिंपल का आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक लेखन में मुझे उत्साह व प्रेरणा दी है।मेरी हार्दिक प्रशंसा अपने पुत्र अक्षय के सस्नेह सहयोग व सहायता के लिए भी है।

मैं कमलेश चौधरी आंटी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनके विनम्र व समर्पित प्रयास से इस सम्पूर्ण पुस्तक का अनुवाद और संपादन सम्पन्न हुआ।

मैं विशेष रूप से अपने गुरु परिवार (सम्बन्धी एवं मित्र) का धन्यवाद करता हूँ। विशेषकर गुरुजी के भतीजे , नवदीप सिंह (गौरव) का जिन्होंने मुझे "गुरुजी के साथ मेरी यात्रा" लिखने के लिए प्रेरित किया।

मैं विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ "शुक्राना गुरुजी महाराज दा" मल्टीलिंगुअल टीम का जिन्होंने पुस्तक का अनुवाद करने की सेवा की व्यवस्था प्रदान की।

गुरुजी के साथ हुए अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए मुझे अत्यंत संतोष व आनंद हो रहा है। मेरी यही प्रबल इच्छा है कि भक्तजन इस पुस्तक द्वारा गुरुजी के महात्म्य को आत्मसात कर सकें। उनकी अलौकिक शक्ति व प्रभुत्व में भक्तजनों का विश्वास दृढ़ ही सके।

आत्म – परिचय

२५ नवम्बर १९६९ संगरूर जिले के एक छोटे शहर अहमद गढ़ के एक मध्यम व्यापारिक परिवार में मेरा जन्म हुआ था। पांच साल की आयु से ही मैं भगवान शिव की आराधना करने लग गया था। मेरी आंटी ने मुझे सुमरणी माला लेकर मंत्र बोलना सिखाया।मैं सुखमणि माला ले नित्य मंत्र जाप करता था। रामायण, शिव पुराण तथा भगवद्गीता का पाठन मुझे प्रिय था।

मैंने आर्य कॉलेज लुधियाना से शिक्षा ग्रहण की और १९९२ में मेरा विवाह डिंपल के साथ सम्पन्न हुआ। किसी द्वारा किए गए काले टोने (जादू) के कारण डिंपल कई शारीरिक व मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हो गई। किसी भी चिकित्सा के सफल न होने के कारण हम बहुत निराश हो गए। एक समय ऐसा भी आया कि मैंने प्रार्थना व भगवान शिव के मंत्र जाप का भी त्याग कर दिया। सन १९९६ में मेरे एक प्रिय अंकल मुझे मिलने आए। वे बड़े आध्यात्मिक थे। उन्होंने मुझे प्रार्थना करते रहने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि ९९% तो भगवान शिव से जुड़ा हूँ , केवल १ % ही शेष है। मैंने उनके सुझाव का पालन किया। कुछ दिनों बाद मेरी आंटी जी ने उनकी महिमा के बारे में बताया। उसी वर्ष शिवरात्रि पर मेरी माताजी व भाई गुरुजी के दर्शन के लिए गए। वे गुरुजी की प्रशंसा के भक्ति गीत गेट हुए और गुरुजी के प्रति अत्यंत श्रद्धा लिए घर लौटे। मेरी गुरुजी के साथ आध्यात्मिक यात्रा सन १९९६ से आरम्भ हुई। बैसाखी के उत्सव पर मैंने अपने प्यारे गुरुजी के पहली बार पावन दर्शन किए। गुरुजी के प्रति धन्यवाद व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। उन्होने मुझे व मेरे परिवार को सदा अपनी शरण में रखा। एमरी उनसे यही हार्दिक प्रार्थना है कि वे सदा के लिए मुझे अपने चरण कमलों में स्थान दें क्योंकि वहीँ मैं परमानंद वस मोक्ष प्राप्त कर सकता हूँ।